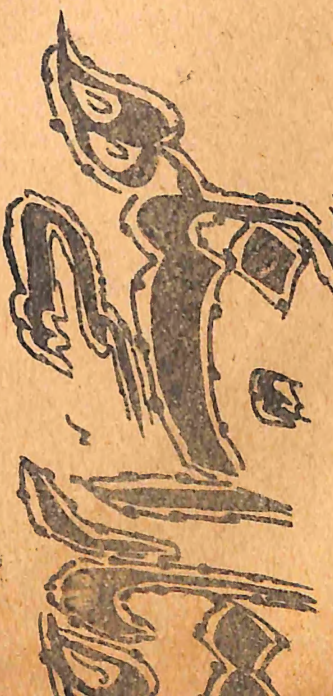


"OUR MOTTO"

Honesty Is The



S. KHEM SINGH

JEWELLERS And
1st BRIDGE SRINAGAR

سری پور میں

الہ آباد میں آئی ایم ایف ایف ایف ایف ایف



ٹ کے پلین اور جڑاوتی سٹلے ہیں!

ہمیں سچے حال میں

گینا ہوتا ہے کہ حرفت ایک عیروانی
صفت ہے جو خدا کا دہندہ کی قیام
کے لئے درکار ہوتی ہے عیروانی ہے بچی
زندگی حرفت کے ظلمات ظاہر نہیں کرتی
عیروانی میں ڈر کا موجود ہوتا ایک عیروانی
ہے اور انسانوں کے اندر حرفت کی صفی ہو
گشتہ عیروانی کے جس میں ہے ہم
کڑی ہے عیروانی کا مادہ عیروانی ہے
جو ایسا کہ انسانیت میں تبدیلی نہیں ہو
دوسرے لفظوں میں یوں کہہ سکتے ہیں
یہی انسان کے دل میں حرفت اٹھتا ہے اور
کہ اندر عیروانی اپنی موجودیت ظاہر کرتا
عیروانی اور نباتات سے نیچے تو
خبر ہے بچی عیروانی ہے نباتات میں
گود کے حالات کی اگر بچی تو فقر جاگ
ہے کہ وہ ان کے ساتھ دور گود
کو دیکھ کر لڑتے ہیں یا کہ ان کے
ہو جاتا ہے کہ اس عیروانی اگر کسی
میں اس قدر حدودیت موجود ہو
کہ اور گود کی تمام چیزیں کسی عیروانی کا
کے حرفت ہوتی ہیں وہ حرفت ہوا
ہوتی ہیں اور اس کے برخلاف
وہی کے عیروانی دوسرے ہوش کے اندر
نہایت والا ہے حرفت شہرت اور
پائے جاتے ہیں
انسان کی عقل اور روحانی
عیروانی میں ہے اس طرح ظاہر
جس طرح حرفت کی لہجہ ہے بچوں
وہی کے جب تک انسانیت
کا ظہور کالی نہیں ہوتا انسان کے
ہوش میں بھی رغبت و نفرت
شہوت و غضب، امید اور خوف
پائے جاتے ہیں ان تمام عیروانی
کی پیداہنی وہی کے دوسرے ہے
جب تک انسان اپنی گرفت
کی اثرات اور نباتات سے اور
خوب ہے اس کے تمام حالات اور
میں ان عیروانی کی رنگت دیکھی
جب وہ نظر آنے والی دنیا ہے
حقیقت کی طرف متوجہ ہوتا ہے
وہاں بھی اسے دور عیروانی
جڑا کر بھی خوب پایا کرتے ہیں
خیال بھی اس کی دل میں حرفت
پیدا کرتا ہے اور بچی وہی
بھی ہر وہی لاپچی اور حرفت
دیکھتے ہیں ایسی حالت میں انسان
عیروانی عناصر کے خالی نہیں
سب ہے کہ راج بھی وہی
کہ نام پر غرور و فخر نہی
کو دیکھا جاتا ہے اگر انسان

स्वायंभुवमनुआदिकसर्वमनुवोंकेप्रति साधारणहीहै ॥ तथापि इदानींकालविषेविद्यमान जो वैवस्वतमन्वंतरहै ॥ तावैवस्वतमन्वंतरकेअभिप्रायकरिके श्रीभगवान् नैं
सूर्यतैलैके विद्याकासंप्रदाय गणनकरचाहै इति ॥ १ ॥ किंच—

(मू० श्लो०) एवंपरंपराप्राप्तमिमंराजर्षयोऽविदुः ॥ सकालेनेहमहतायोगेनष्टः परंतप ॥ २ ॥ एवं । परंपराप्राप्तम् । ईमं । राजर्षयः ।
अविदुः । सः । कालेन । ईह । महता । योगः । नष्टः । परंतप ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन इसप्रकार परंपराकरिकेप्राप्त ईस
ज्ञानयोगकूं राजर्षि जानतेभयेहैं सो ज्ञानयोग ईदानींकालविषे दीर्घ कालकरिके नष्टहोइरहाहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसप्रकार सूर्यतैआदिलैके गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिके प्राप्तभयाजो यहज्ञानयोगहै ॥ ताज्ञानयोगकू निमि जनक अजातशत्रु कैकेय इत्यादि
क राजर्षि सूक्ष्मअर्थकेजाननेहारे आपणे आपणे आचार्य पिता आदिकोंतें जानतेभयेहैं ॥ राजेहोवैं तेईहींऋषिहोवैं तिनोंकानाम राजर्षिहै अर्थात्
क्षत्रियराजावोंकानाम राजर्षिहै ॥ अथवा (राजर्षयः) यापदकरिके राजावोंका तथा ऋषियोंका भिन्नभिन्न ग्रहणकरना ॥ तहां राजाशब्दकरिकेतौ निमि जनक
अजातशत्रु कैकेय इत्यादिक राजाओंकाग्रहणकरना ॥ और ऋषिशब्दकरिके सनक वसिष्ठ इत्यादिकऋषियोंकाग्रहणकरना याप्रकारकाअर्थ किसीटीकाविषे
कथनकरचाहै ॥ और किसीटीकाविषेतौ (राजर्षयः) यापदकरिके पूर्वउक्तरीतिसैं क्षत्रियराजावोंकाहींग्रहणकरचाहै ॥ परंतु तापदकूं सनक वसिष्ठ इत्यादि
कब्राह्मणऋषियोंकाभी उपलक्षक अंगीकारकन्याहैइति ॥ यातैं यहज्ञानयोग अनादिवेदमूलकहोणेतैं तथा नाशतैरहितमोक्षरूपफलकाजनकहोणेतैं तथाअनादि
गुरुशिष्योंकी परंपराकरिकेप्राप्तहोणेतैं कृत्रिमशंकाका विषयहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यह ज्ञानयोग पूर्वनहींथा किंतु इदानींकालविषेहीहूआहै याप्रका
रकी कृत्रिमशंका ताज्ञानयोगविषे संभवतीनहींइति ॥ ऐसामहान्प्रभाववाला यहज्ञानयोगहै ॥ इसप्रकार ताज्ञानयोगविषे मुमुक्षुजनोंकी अत्यंतश्रद्धाक
रावणेवासतै श्रीभगवान् नैं ताज्ञानयोगकीस्तुति कथनकरीहैइति ॥ हेअर्जुन सोऐसा महान्प्रयोजनवालाभी ज्ञानयोग धर्मकीन्यूनताकरणेहारेदीर्घकालक
रिके इसद्वारकेअंतमें तुमारेहमारेव्यवहारकालविषे दुर्बलअजितइंद्रियअनधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोइकै कामक्रोधादिकविकारोंकरिकेअभिभवकूंप्राप्तहुआ
विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभयाहै ॥ और ताज्ञानयोगतैंविना अधिकारीजनोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं इनलोकोंकेअत्यंतदुर्भा
ग्यहैं ॥ ईहां (हेपरंतप) यासंबोधनकेकहणेकरिके श्रीभगवान् नैं यहअर्थसूचनकन्या ॥ परंशत्रुतापयतीतिपरंतपः ॥ अर्थयह ॥ कामक्रोधादिकश

त्रुवोंकानाम परहै ॥ तिनकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूं जोपुरुष आपणे शौर्यताकरिकै अथवा बलवानविवेककरिकै अथवा तपकरिकै सूर्यकीन्यांई तपाय मानकरेहै ॥ तापुरुषकानाम परंतपहै ॥ अर्थात् जितइंद्रियपुरुषकानाम परंतपहै ॥ ऐसातुमारा जितइंद्रियपणा स्वर्गकीउर्वशी आदिकअप्सरावोंकीउपे शाकरणेतें शास्त्रविषेप्रसिद्धहीं है ॥ ऐसाजितइंद्रियहोणेतें तूंअर्जुन इसज्ञानयोगविषेअधिकारीहैं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ किंच—

(मू० श्लो०) स एवायंमयातेद्ययोगः प्रोक्तः पुरातनः ॥ भक्तोसिमेसखाचेतिरहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥ सं । एवं । अयम् । मया । ते । अद्य । योगः । प्रोक्तः । पुरातनः । भक्तः । असि । मे । सखा । च । इति । रहस्यं । हि । एतत् । उत्तमम् ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन सोई हों यह अनादि ज्ञानयोग इसकालविषे मैकृष्णभगवान्नें तुमारेताई कथनकन्याहै जिसकारणतें तूं अर्जुन हमारा भक्तहै^३ तथा सखाहै जिसकारणतें यहज्ञानयोग उत्तमहै तथा अत्यंतगोप्यहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोज्ञानयोग पूर्वहमनें सूर्यादिकशिष्योंके प्रति उपदेशकरचाहुआभी इदानींकालविषे अधिकारी पुरुषोंकेअभावतें विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभया है ॥ तथा जिसज्ञानयोगतेंविना इनपुरुषोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ सोईहीं गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिकैअनादि ज्ञानयोग इससंप्रदायकेविच्छेदकाल विषे अतिस्नेहयुक्तमैकृष्णभगवान्नें तेंअर्जुनकेताई विस्तारतें कथनकरचाहै ॥ दूसरे जिसीकिसीपुरुषकेताई हमनें यहज्ञानयोग उपदेशकरचानहीं ॥ जिसकारणतें तूं अर्जुन हमाराभक्तहै ॥ अर्थात् मेरेशरणागतकूं प्राप्तहुआ तूं मेरेविषेअत्यंतप्रीतिमानहै ॥ तथा तूंअर्जुन हमारासखाहै ॥ अर्थात् हमारे समानअवस्थावालाहै तथाह मारेविषेस्नेहवालाहै तथाहमारीसहायताकरणेहाराहै ॥ इसकारणतें यहज्ञानयोग हमनें तुमारेप्रति कथनकन्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहज्ञानयोग हमारेतेंभिन्न दूसरेपुरुषोंकेप्रति आपनें किसवासतें नहींकथनकरचाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहैं (रहस्यं ह्येतदुत्तममिति) हेअर्जुन जिसकारणतें यहज्ञानयोग अत्यंतउत्तमहै ॥ तथा अत्यंतगोप्यराखणेयोग्यहै ॥ तिसकारणतें हमनें यहज्ञानयोग अन्यकिसीपुरुषकेप्रति कथनकरचानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (विद्याहवैब्राह्मणमाजगाम गोपायमाशेवविष्टेहमस्मि ॥ असूयकायानृजवेयताय नमाब्रूयावीर्यवतीतथास्याम् ॥) अर्थयह ॥ एककालविषे ब्रह्मविद्या ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेसमी पजातीभई ॥ तहांजाइके तिनब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेब्राह्मणो तुम हमारेकूं अत्यंतगोप्यराखो ॥ ताकरिकै मैं तुमारेप्रति भोगमोक्षदोनोंकी प्राप्तिकरौंगी ॥ और जोकदाचित् कृपाकेवशहुए तुम हमारेकूं गोप्यनहींराखिसको ॥ तोंभी विवेकवैराग्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारियोंकेप्रति हमाराउपदेश करो ॥ और जोपुरुष असूयावालाहै तथाऋजुभावतैरहितहै ॥ तथा मनसहितइंद्रियोंकेनिग्रहतैरहितहै ॥ ऐसे अनधिकारीपुरुषकेप्रति हमाराउपदेश

तुमने कदाचित् भी नहीं करणा ॥ किंतु अधिकारी पुरुषों के प्रति ही उपदेश करणा ॥ जिस करिके मैं ब्रह्मविद्या फल का हेतु होवौ इति ॥ इस श्रुति का विस्तार तै अर्थ तो आत्मपुराण के द्वितीय अध्याय विषे हम कथन करि आये हैं ॥ यातैं ईहां संक्षेप तै कहा है इति ॥ ३ ॥ तहां शास्त्र विचार तै रहित मूर्ख लोकों कूं वसुदेव के पुत्र रूप श्री कृष्ण भगवान् विषे मनुष्यत्वरूप हेतु करिके जो असर्वज्ञ पण की तथा अनित्य पण की शंका होवै है ता शंका के निवृत्त करणे वासते ता शंका का अनुवाद करता हुआ अर्जुन श्री भगवान् के प्रति प्रश्न करे हैं ॥

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच ॥ अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ॥ कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥ अपरं । भवतः । जन्म । परं । जन्म । विवस्वतः । कथम् । एतत् । विजानीयां । त्वम् । आदौ । प्रोक्तवान् । इति ॥ (इति प०) ॥ हे भगवन् आपका जन्मतौ अबी हुआ है और सूर्य का जन्मतौ पूर्व हुआ है यातैं तूं कृष्ण भगवान् सृष्टिके आदिकाल विषे सूर्य के प्रति यह ज्ञान योग कहं त भया है यह वार्ता मैं अर्जुन किस प्रकार निश्चय करौ ॥ ४ ॥ इति पदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हे भगवन् आप कृष्ण भगवान् का शरीर का ग्रहण रूप जन्मतौ इस द्वापर के अंतकाल विषे वसुदेव के गृह विषे हुआ है सो जन्म भी मनुष्यत्व जाति वाला होने तैं निकट है ॥ और सूर्य का जन्मतौ सृष्टिके आदिकाल विषे हुआ है ॥ और सो सूर्य का जन्म देवत्व जाति वाला होवै तैं उत्कृष्ट है ॥ ईहां (न जायते म्रियते वा कदाचित्) इत्यादि वचनो करिके पूर्व आत्मा के जन्म का अभाव विस्तार तैं कथन करि आये हैं ॥ यातैं आत्मा के जन्म विषे तौ अर्जुन का प्रश्न संभवतानहीं ॥ किंतु स्थूल देह के जन्म के अभिप्राय करिके ही अर्जुन का यह प्रश्न है इति ॥ यातैं हे भगवन् अबी इस काल विषे उत्पन्न हुआ तथा सर्वज्ञ मनुष्य तूं पूर्व सृष्टिके आदिकाल विषे उत्पन्न हुए सर्वज्ञ सूर्य के ताई यह ज्ञान योग कथन करता भया है ॥ इस अर्थ कूं मैं अर्जुन अविरोद्ध रूप करिके किस प्रकार निश्चय करौ । किंतु यह आपके वचन का अर्थ हमारे कूं अत्यंत विरोद्ध प्रतीत होता है ॥ ईहां अर्जुन का यह अभिप्राय है ॥ सूर्य के प्रति जो आपनैं इस ज्ञान योग का उपदेश कन्याथा ॥ सो इस वर्तमान देह तैं भिन्न किसी दूसरे देह करिके उपदेश करयाथा ॥ अथवा इस वर्तमान देह करिके ही उपदेश करयाथा ॥ तहां प्रथम पक्ष जो आप अंगीकार करौ ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहे तैं पूर्व जन्म विषे अनुभव करचा जो अर्थ है ॥ ता अर्थ का उत्तर दूसरे जन्म विषे असर्वज्ञ पुरुष कूं स्मरण होवै नहीं ॥ जो कदाचित् पूर्व जन्म विषे अनुभव करचे हुए अर्थ का दूसरे जन्म विषे भी असर्वज्ञ पुरुष कूं स्मरण होता होवै ॥ तौ मैं अर्जुन कूं भी पूर्व जन्म विषे अनुभव करचे हुए अर्थ का इस जन्म विषे स्मरण होना चाहिये ॥ सो स्मरण हमारे कूं होता नहीं ॥ और तुमारे विषे तथा हमारे विषे मनुष्य रूपता करिके असर्वज्ञ पणा तुल्य ही है ॥ यातैं हमारे न्यां ई तुमारे कूं भी जन्मांतर विषे अनुभव कये हुए पदार्थ का इस जन्म विषे

स्मरण नहीं होवैगा इति ॥ और इसवर्तमान देह करिके ही पूर्व सूर्यके प्रति हमने यह ज्ञान योग उपदेश किया है ॥ यह दूसरा पक्ष जो आप अंगीकार करें ॥ सो भी संभवतानहीं ॥ काहेतें इसवर्तमान कालविषे वसुदेवपितातैं उत्पन्न भया जो यह तुमारा देह है ॥ सो यह देह पूर्व सृष्टिके आदिकालविषे विद्यमान थानहीं ॥ यातैं इसवर्तमान देह करिके भी आपका सूर्यके प्रति उपदेश संभवैनहीं ॥ यातैं यह अर्थ सिद्ध भया ॥ इस देहतैं भिन्न दूसरे किसी देह करिके तासृष्टिके आदिकालविषे आपकी स्थितिके संभव हूँ भी तादेह करिके अनुभव क्ये हूँ अर्थ का इसवर्तमान देहविषे स्मरण नहीं संभवैगा ॥ और इसवर्तमान देह करिके तास्मरण की सिद्धि हूँ भी सृष्टिके आदिकालविषे इसवर्तमान देह की स्थिति संभवती नहीं ॥ इसप्रकार असर्वज्ञत्व अनित्यत्व या दोनो हेतुओं करिके अर्जुन के दो पूर्वपक्ष सिद्ध होवै हैं इति ॥ ४ ॥ * ॥ तहां श्रीभगवान् आपणे विषे सर्वज्ञपणा कथन करिके प्रथम पूर्वपक्ष के परिहार कूं कथन करे है ॥

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ॥ तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥ ५ ॥ बहूनि मे व्यतीतानि । जन्मानि । तव च । अर्जुन । तानि । अहं । वेदं । सर्वाणि । न । त्वं । वेत्थ । परंतप ॥ (इति प०) ॥ हे अर्जुन हमारे तथा तुमारे बहुत जन्म वितीत होते भये हैं तिन सर्वजन्मों कूं मैं कृष्ण भगवान् जानता हूं हे परंतप तूं तिन जन्मों कूं नहीं जानता है ॥ ५ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जैसे यह लोक सर्वदा विद्यमान सूर्यका भी उदयमाने हैं ॥ तैसे वास्तवतैं जन्मतैं रहित हूँ भी मैं कृष्ण भगवान् के लोक दृष्टिके अभिप्राय करिके लीला मात्र तैं देह का ग्रहण रूप अनेक जन्म पूर्व वितीत होते भये हैं ॥ और आत्मज्ञान तैं रहित जो तूं अर्जुन है ॥ तिस तुमारे भी पुण्यपाप कर्मों के वशतैं देह का ग्रहण रूप अनेक जन्म पूर्व होते भये हैं ॥ इहां (तव) यह एक अर्जुन का वाचक पद दूसरे जीवों का भी उपलक्षक है ॥ अथवा (तव) यह पद एक जीववाद के अभिप्राय करिके कथन किया है इति ॥ हे अर्जुन तिन आपणे सर्वजन्मों कूं तथा तुमारे सर्वजन्मों कूं तथा अन्य जीवों के सर्वजन्मों कूं मैं सर्वज्ञ सर्वशक्त संपन्न ईश्वर हीं जानता हूं ॥ तूं आवृतज्ञान शक्ति वाला अज्ञानी अर्जुन तिन सर्वजन्मों कूं जानतानहीं ॥ तात्पर्य यह ॥ तूं अर्जुन अज्ञान दोष के वशतैं जबी पूर्व वितीत हुए आपणे जन्मों कूं भी नहीं जानता है ॥ तबी पूर्व वितीत हुए हमारे जन्मों कूं तथा अन्य जीवों के जन्मों कूं तूं कैसे जानि सकैगा ॥ किंतु नहीं जानि सकैगा इति ॥ इहां (हे अर्जुन) या संबोधन करिके श्रीभगवान् नैं यह अर्थ सूचन किया ॥ शास्त्रविषे किसी वृक्ष विशेष कूं भी अर्जुन या नाम करिके कथन करे हैं ॥ ता अर्जुन नामा वृक्ष की ज्ञानशक्ति जैसे आवृत्त रहे है ॥ तैसे तैं अर्जुन की भी सा ज्ञानशक्ति आवृत्त होइ रही है ॥ यातैं तिन आपणे जन्मों कूं तथा हमारे जन्मों कूं तूं जानि सकतानहीं इति ॥ और (हे परंतप) या संबोधन के कहने करिके श्रीभगवान् नैं यह अर्थ सूचन

कन्या ॥ परनामशत्रुकाहे ॥ ताशत्रुकूं भेददृष्टितैकल्पनाकरिकै ताशत्रुकेहननकरणेविषे तूं प्रवृत्तहुआहे जैसे कोईमूढबालक आपणेशरीरकूंहीं पिशाचकल्पनाकरिकै ताकेहननकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं विपरीतदर्शीहोणेतैं तूंअर्जुन भ्रांतहैइति ॥ ईहां (हेअर्जुन हेपरंतप) यादोनोंसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान् नैं आवरणविक्षेप यादोनोंविषे अज्ञानकीधर्मरूपताकथनकरी इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् पूर्ववितीतहुए आपणेअनेकजन्मोंकूं आपस्मरणकरतेहो ॥ तौं आपभी जातिस्मरनामा कोईजीवविशेष होवौंगेकाहेतैं जातिस्मरयोगीपुरुषोंकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै दूसरेजन्मोंकाज्ञानभी संभवहोइसकताहै ॥ जैसे वामदेवकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वअनेकजन्मोंका स्मरणहोताभयाहै ॥ तहां सोवामदेव माताकेउदरविषेस्थितहोइके याप्रकारकावचन न कहताभयाहै ॥ हेअधिकारीजनो मैंवामदेव जीवहूआभी पूर्व मनुहोताभयाहूं तथासूर्यहोताभयाहूं तथाकक्षीवान् ऋषि होताभयाहूंइति ॥ इसप्रकार सोवामदेवनामजीव सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वलेअनेकजन्मोंकूं स्मरणकरताभयाहै ॥ तिनजन्मोंकेस्मरणकरिकै जैसे वामदेवविषे मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धहोतानहीं ॥ तैसे पूर्वजन्मोंकेस्मरणकरिकै आपविषेभी मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं ईश्वरभावतैरहितहूआ तूंकृष्णभगवान् पूर्व सर्वज्ञसूर्यके प्रति सोज्ञानयोग किसप्रकार उपदेशकरताभयाहै ॥ किंतु सर्वज्ञसूर्यके प्रति आपकाउपदेश संभवतानहीं ॥ हेभगवन् जीवविषे मुख्यसर्वज्ञपना संभवतानहीं ॥ काहेतैं व्यष्टिउपाधिवालेकानाम जीवहै ॥ सोव्यष्टिउपाधिवालाजीव पारिच्छिन्नहींहोवैहै ॥ यातैं तापरिच्छिन्नजीवका भूतभविष्यत् वर्तमानसर्वपदार्थोंकेसाथि संबंधहींनहींसंभवताहै ॥ और तिनसर्वपदार्थोंकेसाथि संबंधतैंविना तिनसर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ हेभगवन् व्यष्टिउपाधिवालेजीवकीक्यावार्ताहै ॥ परंतु समष्टिउपाधिवालाजोविराट् है तथासमष्टिउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ तिनदोनोंकूंभी सर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ काहेतैं समष्टिस्थूलभूतरूपउपाधिवालाजोविराट् है ॥ तिसविराट्कूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेकार्यविषयकज्ञान संभवैहै ॥ तथापि ताविराट्कूं सूक्ष्मभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान तथा मायाकेपरिणामविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ इसप्रकार समष्टिसूक्ष्मभूतरूपउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ ताहिरण्यगर्भकूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान तथासूक्ष्मभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान संभवहोइसकेहै ॥ तथापि ताहिरण्यगर्भकूं तिनसूक्ष्मभूतोंकाकारणरूपमायाकेपरिणामरूप आकाशादिकसृष्टिक्रमादिकविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ यातैं विराट्विषे तथाहिरण्यगर्भविषेभीमुख्यसर्वज्ञतासंभवैनहीं ॥ तौं व्यष्टिउपाधिवालेजीवोंविषे सामुख्यसर्वज्ञताकेसे संभवैगी ॥ किंतु नहींसंभवैगी यातैं मायारूपकारणउपाधिवालाहोणेतैं भूतभविष्यत् वर्तमानसर्वपदार्थविषयकज्ञानवालाजोईश्वरहै ॥ सोमायाउपहितईश्वरहीमुख्यसर्वज्ञहै ॥ ऐसे जन्ममरणतैरहित नित्य सर्वज्ञईश्वरविषेपुण्यपापकर्महैनहीं ॥ यातैं ताईश्वरका प्रथमतौं जन्महोणाहीं संभवतानहीं तौं पूर्ववि

तीतहूँ अनेकजन्म ताईश्वरके कैसेसंभवेंगे ॥ किंतु नहींसंभवेंगे ॥ यातैयहअर्थसिद्धभया ॥ जोकदाचित् आप जीवहो ॥ तौं हमारेन्याई आपविषेसर्व ज्ञतानहींसंभवेंगी ॥ और जोकदाचित् आप ईश्वरहो ॥ तौं आपविषे देहकाग्रहणरूपजन्मनहींसंभवैगाइति ॥ ऐसीअर्जुनकीदोनोंशंकाओंकूनिवृत्तकरताहूँआ श्रीभगवान् पूर्वकथनकरचेहूँ अनित्यत्वपक्षकेभीपरिहारकू कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामाश्वरोपिसन् ॥ प्रकृतिस्वामधिष्ठायसंभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥ अंजः । अपि । सन् । अव्ययात्मा । भूतानां । ईश्वरः । अपि । सन् । प्रकृति । स्वां । अधिष्ठाय । संभवामि । आत्ममायया ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन मैंकृष्णभगवान् जन्मतैरहित हूँआ भी तथामरणतैरहितहूँआभी तथा सर्वभूतोंका ईश्वर हूँआ भी आपणी मायाकू आश्रयण करिकै ताआपणीमायाकरिकै जन्मवालाहोताहूँ ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ अपूर्वदेहइंद्रियादिकोंकाजोग्रहणहै ताकानाम जन्महै ॥ और पूर्वग्रहणकरचेहूँ देहइंद्रियादिकोंका जोवियोगरूपमरणहै ताकानाम व्ययहै ॥ ता जन्ममरणदोनोंकूहीं नैयायिक प्रेत्यभाव यानामकरिकैकथनकरेहैं तिनजन्ममरणदोनोंकू (जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच) इसवचनकरिकै पूर्वकथन करिआयेहैं ॥ तेजन्ममरणदोनोंइसजीवकू धर्मअधर्मकेवशतै प्राप्तहोवैहैं ॥ और सोधर्मअधर्मकावशपणा देहाभिमानीअज्ञानीजीवकू कर्मोंकेअधिकारीपणेकरि कैहीं होवैहैं ॥ तहां सर्वकेकारणरूपसर्वज्ञईश्वरकू इसप्रकारका देहकाग्रहणरूपजन्म नहींसंभवताहै यह जो पूर्वकथनकरचाथा सोयथार्थहीहै काहेतै जोकदाचित् तिसईश्वरकाशरीर स्थूलभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तिनस्थूलभूतोंकाकार्यरूपहूँआभी सोशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैगा ॥ तौं जाग्रत्अवस्थाविषेस्थितअस्मदा दिकविश्वनामाजीवोंकेतुल्यही सोईश्वरहोवैगा ॥ और जोकदाचित् सोईश्वरकाशरीर समष्टिरूपहोवैगा ॥ तौं ताईश्वरविषे विराट्नामाजीवरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ जिसकारणतै समष्टिस्थूलउपाधिवाला विराट्हीहोवैहै ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् सूक्ष्मभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तहां सूक्ष्मभूतोंकाकार्यरूपहूँआभी सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैगा ॥ तौं ताईश्वरविषे स्वप्नअवस्थाविषेस्थितहमतैजसनामाजीवोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैगी ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् समष्टिरूपहोवैगा ॥ तौं ताईश्वरविषे हिरण्यगर्भनामाजीवरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ जिसकारणतै समष्टिसूक्ष्मउपाधिवाला हिरण्यगर्भहीहोवैहै ॥ यातै यहअर्थसिद्धभया ॥ आकाशादिकभूतोंकाकार्यरूप तथाकिसीभीजीवननहींआश्रयणकन्याहूँआ ऐसाभौतिकशरीर ताईश्वरकासंभवतानहीं इति ॥ और जेकोई यहकहै ॥ किसीजीवकरिकैयुक्त जोभौतिकशरीरहै ॥ ताभौतिकशरीरविषे भूतावेशकीन्याई सोईश्वर प्रवेशकरेहै ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतै

जिसजीवकरिकैयुक्त जिसभौतिकशरीरविषे ताईश्वरनै प्रवेशकन्याहै ॥ तिसशरीरकरिकै तिसजीवकं सुखदुःखकाभोग होताहै अथवा नहींहोताहै ॥ तहां प्रथम पक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौ अंतर्यामीरूपकरिकै ताईश्वरकाप्रवेश सर्वशरीरोंविषे विद्यमानहै ॥ यातैं ताईश्वरके शरीरविशेषकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा ॥ और दूसरापक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौ सोशरीर ताजीवका नहींसंभवैगा ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकैभी ईश्वरका भौतिकशरीर संभवतानहीं ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् श्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै अंगीकारकरहैं (अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन्नइति) हेअर्जुन अपूर्वदेहकाग्रहणरूपजोजन्महै ताजन्मतैंभी मैंकृष्ण भगवान् रहितहूं ॥ तथा पूर्वदेहकापरित्यागरूपजो व्ययहै तामरणरूपव्ययतैंभी मैंकृष्णभगवान् रहितहूं ॥ तथाब्रह्मातैंआदिलैकेस्तंबपर्यंत जितनैकीभूतहैं तिनसर्व भूतोंका मैंकृष्णभगवान् ईश्वरहूं ॥ इतनैकहणेकरिकै श्रीभगवान् नैं आपणेविषे धर्मअधर्मकावशपणा निवृत्तकरया ॥ जिसकारणतैं जन्ममरणवालापराधीनजीवहीं ताधर्मअधर्मकेवशहोवैहै ॥ स्वतंत्रईश्वर ताधर्मअधर्मकेवशहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेजन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित आपईश्वरकूं देहकाग्रहण किसप्रकार संभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै समाधानकरहै (प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवामिइति) हेअर्जुन यद्यपि वास्तवतैं मैंकृष्ण भगवान् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहूं ॥ तथापि मैं परमेश्वरकीउपाधिरूप तथाविचित्रअनेकशक्तियोंवाली तथाअघटितघटनापटीयसीनामवाली तथासत्वर जतम यात्रिगुणरूप ऐसीजा मायारूपप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिकूं आपणेचिदाभासद्वारा वशकरिकै तिसमायाकेपरिणामविशेषोंकरिकेहीं देहवालेकीन्यांई तथाजन्मेहूएकीन्यांई प्रतीतहोताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ उत्पत्तितैंरहितहोणेतैं अनादिरूपजामायाहै ॥ सा अनादिमायाहीं मैंपरमात्मादेवकी उपाधिहै ॥ सामाया व्यवहारकालपर्यंत स्थायीहोणेतैंनित्यहै ॥ तथा मैंपरमात्मादेवविषे सर्वजगत्केकारणपणेकासंपादकहै तथा मैंपरमात्मादेवकीइच्छाकरिकेहीं सामाया प्रवृत्तहोवैहै ॥ ऐसीमायाहीं विशुद्धसत्वरूपकरिकै मैंपरमात्मादेवकीमूर्तिहै ॥ तामायारूपमूर्तिविशेषमैंपरमात्मादेवविषे जन्मतैंरहितपणा तथामरणतैंरहितपणा तथासर्वभूतोंकाईश्वरपणा संभवहोइसकेहै ॥ वातैं ताशुद्धसत्त्वप्रधानमायारूपनित्यदेहकरिकेहीं मैंपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषेतौ सूर्यकेप्रति तथाइदानींकाल विषे तैअर्जुनकेप्रति यहज्ञानयोग उपदेशकरताभयाहूं ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी पूर्वउक्तदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (आकाशशरीरंब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ आकाशहैनामजिसका ऐसाजो मायारूपअव्याकृतहै ॥ ताअव्याकृतरूपशरीरवाला ब्रह्महैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मका मायाहींशरीर कथन कन्याहै ॥ तामायारूपशरीरकरिकै मैंपरमात्मादेवकी जगत्कीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे तथाप्रलयकालविषे सर्वदा स्थितिसंभवहोइसकेहै इति ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् आपका केवलमायाहीं शरीरहोवै ॥ भौतिकशरीर होवैनहीं ॥ तौ भौतिकशरीरकेंधर्मजेमनुष्यत्वादिकहैं तेमनुष्यत्वादिकधर्म

इसआपकेशरीरविषे किसवासतै प्रतीतहोतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (आत्ममाययाइति) हेअर्जुन! हमारेविषे जेमनुष्यत्वादिकधर्म प्रतीत होवैहैं ॥ तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेविषेकोईवास्तवतैनहीं ॥ किंतु लोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवासतै हमारीमायाकरिकैहीं तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेविषेप्रतीतहोवै हैंइति ॥ यहवार्ता मोक्षधर्मविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (मायाह्येषामयासृष्टायन्मां पश्यसिनारद ॥ सर्वभूतगुणैर्युक्तं न तु मां द्रष्टुमर्हसि ॥) अर्थयह ॥ हे नारद! जिसशरीरविशिष्टमेरेकूं तूंइनचर्मचक्षुवोंकरिकैदेखताहै ॥ सोयहशरीर हमनैं मायाकरिकैरच्याहै ॥ और कारणमायारूपशरीरवालाजोमैंहूं तिसहमारेकूं तूं इनचर्मचक्षुवोंकरिकै देखणेकूं समर्थनहींहैइति ॥ तहांअनेकशक्तियोंवाला तथामायानामवाला ऐसाजो नित्यकारणउपाधिहै ॥ सोमायारूपकारणउपाधिहीं परमेश्वरका देहहै ॥ यह भगवान् भाष्यकारोंकामत कथनकरचा ॥ और दूसरेकैईशास्त्रवालेतों परमेश्वरविषे देहदेहीभावकूं मानतेनहीं ॥ किंतु जो सत् चित् आनंद धन भगवान् वासुदेव परिपूर्ण निर्गुण परमात्माहैं सोईहीं तापरमेश्वरका शरीरहै ॥ दूसराकोईभौतिकशरीर तथामायिकशरीर तापरमेश्वरकाहैनहींइति ॥ तहांश्रुति (स भगवः कस्मिन् प्रतिष्ठितः स्वेमहिम्नि ।) अर्थयह ॥ हेभगवन् सोपरमात्मादेव किसविषेस्थितहै ऐसीशंकाकेहुए ॥ सोपरमात्मादेव आपणे सत् चित् आनंद रूपमहिमाविषेहीं स्थितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तिसपरमात्मादेवकी आपणेस्वरूपविषेही स्थितिकथनकरीहै किसीमायिकशरीरविषे तथाभौतिकशरीरविषे स्थितिकथनकरीनहींइति ॥ इसपक्षविषेतौ इसश्लोककी इसप्रकारतैं योजनाकरणी ॥ (आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः ॥ अविनाशीवा अरेऽयमात्माऽनुच्छिन्तिधर्मा ।) अर्थयह ॥ यहपरमात्मादेव आकाशकीन्यांईसर्वत्रव्यापकहै तथानित्यहै ॥ हेमैत्रेयी यह आत्मादेवस्वरूपतैंभी नाशतैरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशप्रयुक्तनाशतैंभी रहितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणोंतैं मैपरमात्मादेव वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहुआभी तथा सर्वजगत्काप्रकाशहुआभी तथा सर्व जगत्काकारण रूपमायाका अधिष्ठानहोणेतैं सर्वभूतोंकाईश्वरहुआभी (स्वांप्रकृतिं) आपणास्वरूपभूत सत् चित् आनंदधन एकरस स्वभावरूपप्रकृतिकूं (अधिष्ठाय) क्याआश्रणकरिकै अर्थात् ता आपणेस्वरूपविषेस्थितहोइकै (संभवामि) क्या देहदेहीभावतैंविनाहीं लोकप्रसिद्ध देहवालेजीवोंकीन्यांई यहपरमेश्वर देहवालाहै याप्रकारकेव्यवहारकाविषयहोवूंहुंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् मायिकदेहतैं तथाभौतिकदेहतैं रहित सत् चित् आनंदधनजोआपहो ॥ ऐसेआपविषे इसमनुष्यदेहत्वकीप्रतीति किसवासतै होतीहै ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (आत्ममाययाइति) हेअर्जुन देहदेहीभावतैंरहित जोमैं नित्य शुद्ध सत् चित् आनंदधन भगवान् वासुदेवहूं ॥ ऐसेमैपरमात्मादेवविषे जोदेहदेहीरूपकरिकैप्रतीतिहै ॥ सामायामात्रहीहै ॥ वास्तवतैं हमारेविषे सोदेहदेहीभावहैनहीं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्र विषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (कृष्णमेनमवोदित्वमात्मानमाखिलात्मनाम् ॥ जगद्धितायसोप्यत्र देहीवाभातिमायया ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नंदगोपव्रजौ

कसाम् ॥ यन्मित्रं परमानंदपूर्णब्रह्मसनातनम् ॥) अर्थयह ॥ इसकृष्णभगवान् कूं तूं सर्वभूतप्राणियोंका आत्मारूपजान ॥ ऐसासर्वभूतप्राणियोंका आत्मारूपहुआभी जोकृष्णभगवान् इसलोकविषे भक्तजनोंके उद्धारकरणेवासे आपणीमायाकरिके देहवालेजीवोंकीन्याई प्रतीतहोवैहै ॥ किंवा ब्रजभूमिविषेरहणेहारेजे नंदगोप गोपियांहैंतिनसर्वोंकेअहोभाग्यहैं अहोभाग्यहैं ॥ जिसब्रजवासीलोकोंके यहपरमानंदपरिपूर्णसनातनब्रह्म कृष्णरूपकरिके मित्रभावकूं प्राप्तहुआहैइति ॥ और कोईकपुरुषतौ तिसपरमात्मादेवकूं नित्य निरवयव निर्विकार परमानंदरूपमानिकरिकेभीतापरमात्मादेवविषेअवयवअवयवीभाव वास्तवहींअंगीकारकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंकाकहणा अत्यंत निर्युक्तिकहै इति ॥ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार] सत्चित् आनंदधनरूपजोआपहो तिसआपका किसकालविषे तथाकिसप्रयोजनवासतैं देहवालेजीवकीन्याई व्यवहारहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभारत ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ यदा । यदा । हि । धर्मस्य । ग्लानिः । भवति । भारत । अभ्युत्थानम् । अधर्मस्य । तदा । आत्मानं सृजामिअहम् ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जिस जिसकालविषे धर्मकी हानि होवैहै तथा अधर्मकी वृद्धिहोवैहै तिसंकालविषे मैंपरमात्मादेव देहकूं उत्पन्नकरूं ॥ ७ ॥ (इतिप०)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदकरिकेविधानकन्याहुआ जो प्रवृत्तिनिवृत्तिरूपधर्महै ॥ जो धर्म कामनापूर्वककन्याहुआ इनप्राणियोंके स्वर्गादिरूपअभ्युदयका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म निष्कामकन्याहुआ इनप्राणियोंके मोक्षरूपनिःश्रेयसका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र या च्यारिवर्णोंका तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास या च्यारिआश्रमोंका अभिव्यंजकहै अर्थात् जनावणेहाराहै ॥ तहांश्रद्धाभक्तिपूर्वक अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणा याकानाम प्रवृत्तिरूपधर्महै ॥ और परस्त्रीगमनादिकनहींकरणे याकानाम निवृत्तिरूपधर्महै ॥ ऐसेधर्मकी जिसजिसकालविषेहानिहोवैहै ॥ और वेदकरिकेनिषिद्धकन्याहुआ तथानानाप्रकारके दुःखोंकासाधनरूप तथाधर्मकाविरोधी ऐसाजोअधर्महै ॥ तिसअधर्मकीजिसजिसकालविषे वृद्धिहोवैहै ॥ तिसतिसकालविषे मैंपरमात्मादेव आपणेदेहकूंसृजताहूं ॥ अर्थात् नित्यसिद्धआपणेदेहकूं मायाकरिके रचेहुएकीन्याई दिखावताहूं ॥ ईहां (हेभारत) यासंबोधनकेकहणेकरिके श्रीभगवान् ने यहअर्थ सूचनकरचा ॥ भरतवंशविषेजोउत्पन्नहोवै ताकानाम भारतहै ॥ अथवा भा नामज्ञानकाहै ताकेविषे जोरतहोवै अर्थात् ज्ञानविषेजोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ ऐसे भारतनामवालातूंअर्जुन धर्मकीहानिकूं सहारणेविषेसमर्थनहींहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् साधर्मकीहानि तथाअधर्मकीवृद्धि यहदोनों आपके

परितोषकाकारणहोवेंगे जिसकरिकै आपतिसीकालविषेहीं अवतारकंधारणकरोहो यातैं आपका अवतार उलटा लोकोंकूं अनर्थकीप्राप्तिकरणेहाराहींहुआ
ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लोक०) परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृताम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे ॥ ८ ॥ परित्राणाय । साधूनां ।
विनाशाय । च । दुष्कृतां । धर्मसंस्थापनार्थाय । संभवामि । युगे । युगे ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन साधुपुरुषोंके रक्षाकरणे
वासतै तथा पापीपुरुषोंके नाशकरणेवासतै तथा धर्मकेसंस्थापनकरणेवासतै मैंपरमेश्वर युग युगविषे अवतारकंधारणकरूहू
॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन धर्मकीहानिकरिकै हानिकूंप्राप्तहुए तथा निरंतरवेदप्रतिपादितमार्गविषेस्थित ऐसेजेवेदविहितपुण्यकर्मोंकूंकरणेहारे श्रेष्ठपुरुषहैं ॥
जे श्रेष्ठपुरुष आपणेप्राणोंकेनाशहुएभी आपणेधर्मकूंपरित्यागकरतेनहीं तिन श्रेष्ठपुरुषोंकानाम साधुहै ॥ ऐसेसाधुपुरुषोंकेरक्षणकरणेवास्ते ॥ और अध
र्मकीवृद्धि करिकैवृद्धिकूंप्राप्तहुए तथावेदमार्गकेविरोधी तथाशरीरमनवाणीकरिकै सर्वदा वेदनिषिद्धपापकर्मोंकूंकरणेहारे ऐसेजे दुष्टपुरुषहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंका
नाम दुष्कृतहै ॥ ऐसेदुष्कृतपुरुषोंका समूलतैं नाशकरणेवास्ते मैंपरमेश्वर युगयुगविषे अवतारकंधारणकरूहूं ॥ शंका ॥ हेभगवान् साधुपुरुषोंकारक्षण
तथादुष्टपुरुषोंकाविनाश यादोनोंकूं आप किसप्रकारकरोहो ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान्कहेहैं (धर्मसंस्थापनार्थायइति) हेअर्जुन पूर्ववृद्धिकूंप्राप्तहु
आजोअधर्महै ॥ ताअधर्मकीनिवृत्तिकरिकै जोधर्मका सम्यक्स्थापनहै अर्थात् वेदमार्गकापरिरक्षणहै ताकानाम धर्मसंस्थापनहै ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरणेवा
स्तेहीं मैंपरमात्मादेव अवतारकंधारणकरूहूं ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरिकै साधुपुरुषोंका रक्षण तथा दुष्टपुरुषोंकाविनाश अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ याते हमाराअवतार
किसीकूं अनर्थकीप्राप्ति करणेहारानहींहै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) जन्मकर्मचमेदिव्यमेवयोवेत्तितत्त्वतः ॥ त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्मनौतिमामोतिसोऽर्जुन ॥ ९ ॥ जन्म । कर्म । च । मे । दिव्यम् ।
एवं । यः । वेत्ति । तत्त्वतः । त्यक्त्वा । देहं । पुनः । जन्म । नौति । मामौति । सः । अर्जुन ॥ ९ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष
हमारे दिव्य जन्मकूं तथा कर्मकूं इसप्रकार यथार्थ जानैहै सोपुरुष ईसदेहकूं परित्यागकरिकै पुनः जन्मकूं नहीं प्राप्तहोवैहै
किंतु मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्यसिद्धजोमें सत्चित् आनंदघनहूं ॥ ऐसेमें परमात्मादेवका आपनीलीलामात्रकरिके लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकीन्यांई जोजन्मकाअनुकरणमात्ररूप जन्महै ॥ तथा मैंनित्यसिद्धपरमेश्वरका वेदविहितधर्मकीस्थापनाकरिके जगत्कापरिपालनरूपजोकर्महै ॥ तेहमारे जन्म कर्म दोनों दिव्य हैं ॥ अर्थात् दूसरेप्राकृतपुरुषोंकूंकरणविषेअवश्यक्यहैं केवल मैंईश्वरकेहीं असाधारणधर्मरूपहैं ॥ ऐसेहमारे दिव्यजन्मकर्मदोनोंकू जोपुरुष (अजोपिसन्नव्ययात्मा) इत्यादिकवचनोक्तरीतिसे तत्त्वतैजानेहै ॥ अर्थात् मूढपुरुषोंनेही श्रीभगवान् विषे मनुष्यत्वकीभांतिकरकेइतरजीवोंकीन्यांई गर्भवासादिरूपजन्म आरोपणकन्याहै तथा आपणेस्वार्थवास्ते सोकर्म आरोपणकन्याहै ताआरोपित जन्मकर्मकू वास्तवतै शुद्धसत्चित् आनंदस्वरूपकेज्ञानबै निवृत्तकरिके जन्मतै रहितपरमेश्वरकाभी आपणीमायाकरिके लीलामात्रतै लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकीन्यांई जन्मकाअनुकरणमात्र संभवैहै ॥ तथा वास्तवतैअकर्तापरमेश्वरकाभी दूसरेलोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवास्ते लोकप्रसिद्धजीवोंकेकर्मकीन्यांई कर्मकाअनुकरणमात्र संभवहोइसकेहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष हमारेजन्मकर्मकू वास्तवरूप तैजानेहै ॥ तथा इसीप्रकार आपणेवास्तवस्वरूपकूभीजानेहै ॥ सोपुरुष इसवर्तमानशरीरका पारित्यागकरिके पुनः दूसरेजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सोपुरुष सत्चित् आनंदघनमैभगवान् वासुदेवकूही प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सत्चित् आनंदरूप परमात्मादेव मैंहू याप्रकारकेअभेदज्ञानतै सोपुरुष इससंसारते मुक्तहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❀ तहां पूर्वश्लोकविषे (मामेतिसोऽर्जुन) यहवचनकथनकन्या ॥ अब श्रीभगवान् आपणेवास्तवस्वरूपकू सर्वमुक्तपुरुषोंकेप्राप्तिकापदरूपकरिके परमपुरुषार्थरूपताका तथाइसमोक्षमार्गकू अनादिपरंपराकरिकेप्राप्तपणेका कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) वीतरागभयक्रोधामन्मयामुपाश्रिताः ॥ बहवोज्ञानतपसापूतामद्भावमागताः ॥ १० ॥ वीतरागभयक्रोधाः । मन्मयाः । मांम् । उपाश्रिताः । बहवः । ज्ञानतपसा । पूताः । मद्भावम् । आगताः ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन रागभयक्रोधतै रहित तथामेरेविषेचित्तवाले तथाहमारे शरणकूंप्राप्तहूए तथाज्ञानरूपतपकरिके पापोंतैरहितहूए ऐसेबहुतपुरुष मेरेस्वरूपकू प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ तिसतिसस्वर्गादिकफलोंकेप्राप्तिकीजातृष्णाहै ताकानाम रागहै ॥ और ॥ स्त्रीपुत्रधनादिकसर्वविषयोंकापारित्यागकरिके ज्ञानमार्गविषेस्थितहूए हमारा किसप्रकार जीवनहोवैगा याप्रकारकाजो त्रासहै ताकानाम भयहै ॥ और सर्वविषयोंका मूलतैउच्छेदकरणेहाराजोज्ञानमार्गहै सोज्ञानमार्ग किसप्रकार हमारा हितहोवैगा किंतु हितनहींहोवैगा याप्रकारकाजोद्वेषहै ताकानाम क्रोधहै ॥ तेरागभयक्रोधतीनों विवेककरिके निवृत्तहूएहैं जिनपुरुषोंके तिनपुरुषोंकानाम वीतराग

भयक्रोधहै ॥ अर्थात् शुद्धअंतःकरणवाले जेपुरुषहैं ॥ पुनः कैसेहैंतेपुरुष (मन्मयाः) क्यामैंतत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं त्वंपदार्थरूपआपणेआत्माकेसाथि अभेद करिके साक्षात्कारकरचाहैजिनोने ॥ अथवा (मन्मयाः) क्यामैंएकपरमात्मादेवविषेहीहै चित्तजिनोंका ॥ पुनः कैसेहैंतेपुरुष (मामुपाश्रिताः) क्या अनन्य प्रेमभक्तिकरिके मैंपरमात्मादेवकेही जेशरणकूं प्राप्तहूएहै ॥ ऐसेअनेकशुकवामदेवादिकपुरुष ज्ञानरूपतपकरिके सर्वपापोंतैरहितहुए अर्थात् कार्यसहित अज्ञानरूप मलतैरहितहुए हमारे सत्चित्आनंदस्वरूपभूतमोक्षकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अथवा (ज्ञानतपसापूताः) क्याज्ञानरूपतपकरिके जीवन्मुक्तरूपवेपुरुष (मद्भावमागताः) क्यामैंपरमात्माविषयक रतिनामाप्रेमरूपभावकूं प्राप्तहोतेहैं इसीअर्थकूंश्रीभगवान् आपही (तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते) इसवचनकरिके आगेकथनकरैगा इति ॥ १० ॥ शंका ॥ हेभगवन् जेपुरुष ज्ञानरूपतपकरिके पवित्रहुएहैं ॥ तेनिष्कामपुरुषतों आपके भावकूं प्राप्तहोवैहैं और जेपुरुषताज्ञान रूपतपकरिके पवित्रनहींहुएहैं ॥ तेसकामपुरुष ताआपकेभावकूं नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार निष्कामपुरुषोंकूंतां आपणे भावकीप्राप्ति करणेहारा तथासकाम पुरुषोंकूं आपणे भावकीनहींप्राप्तिकरणेहारा जोआपईश्वरहो ॥ तिसआपकूं विषमता दोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकेहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम् ॥ ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याः पार्थसर्वशः ॥ ११ ॥ ये । यथा । मां । प्रपद्यंते । तान् । तथा । एव । भजामि । अहं । मम । वर्त्तम् । अनुवर्त्तते । मनुष्याः । पार्थ । सर्वशः । इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ जेपुरुष जिस प्रकारकरिके मैंपरमेश्वरकूं भजतेहैं तिनपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर तिसीप्रकार ही अनुग्रहकरूंहूं यहकर्मकेअधिकारीमनुष्य सर्वप्रकार करिके मैंपरमेश्वरके भजनमार्गकूं अनुसरणकरेहैं ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे दुःखकरिकेपीडितजेआर्त्तपुरुषहैं ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे जे अर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तथा आत्माके जानणेकीइच्छावाले जेजिज्ञासुपुरुषहैं ॥ तथा तत्त्वसाक्षात्कारवाले जेज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनच्यारिप्रकारकेपुरुषोंविषे जेजेपुरुष सकामपणेकरिके तथा निष्काम पणेकरिके सर्वकर्मोंकेफलप्रदातामैंईश्वरकूं भजतेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तिसतिसमनवांछितफलकीप्राप्तिकरिके मैंपरमेश्वरअनुग्रहकरूंहूं ॥ तिनभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर विपरीतफलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तहां मोक्षकीइच्छातैरहित जेआर्त्तभक्तहैं ॥ तिनआर्त्तभक्तोंकूंतां तिनोंकेपीडाकीनिवृत्तिकरिके अनुग्रहकरोंहूं और मोक्षकी इच्छातैरहित जेअर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तिनअर्थार्थीपुरुषोंकूंतां धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिके अनुग्रहकरोंहूं ॥ और (तमेतवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेन दानेनतपसाऽनाशकेन ।) इसश्रुतिनैविधानकरयेजोनिष्कामकर्महैं ॥ तिननिष्कामकर्मोंकूंकरणेहारेजे जिज्ञासुजनहैं ॥ तिनजिज्ञासुभक्तोंकूंतां आत्मज्ञानकी प्राप्तिक

रिके अनुग्रहकरोंहूँ ॥ और ज्ञानवान् भक्तोंकूँतों मोक्षकीप्राप्ति करिके अनुग्रहकरोंहूँ ॥ अन्यवस्तुकी कामनावाले भक्तजनकूँ अन्यवस्तुकी प्राप्ति मैं करतानहीं ॥ यातैं तिनपुरुषोंके भावनाके अनुसार फलके देणे हारे मैं परमेश्वरविषे विषमतादोषकी तथा निर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् यद्यपि आप लोकोंके भावनाके अनुसारहीं तिस तिस फलकी प्राप्ति करोहो ॥ तथापि आपणे भक्तजनोंके प्रतिहीं ता फलकी प्राप्ति करोहो ॥ अन्य इंद्रादिक देवताओंके भक्तोंकूँ आप तिस फलकी प्राप्ति करते नहीं ॥ यातैं आपके विषे सो विषमतादोष तथा निर्दयतादोष तिसी प्रकार स्थित है ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् कहे हैं (ममवर्त्मानुवर्त्तते मनुष्याः पार्थ सर्वशः इति) हे अर्जुन जे कर्मोंके अधिकारी मनुष्य इंद्र अग्नि सूर्य इत्यादिक देवताओंका भी भजन करे हैं ॥ ते मनुष्य भी मैं अंतर्यामी वा सुदेव के हैं ज्ञान कर्म रूप मार्गकूँ अनुसरण करे हैं ॥ अर्थात् ते मनुष्य भी मैं परमेश्वर काहीं भजन करे हैं ॥ और तिन इंद्रादिक देवताओंके भक्तोंकूँ भी मैं परमात्मा देवहीं तिस तिस इंद्रादिरूप करिके तिस तिस फलकी प्राप्ति करोंहूँ ॥ यातैं मैं परमेश्वरविषे किंचित् मात्र भी विषमतादोषकी तथा निर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ इसी अर्थकूँ (फलमत उपपत्तेः) इस सूत्र करिके श्री व्यास भगवान् भी कथन करता भया है ॥ इसी अर्थकूँ (येऽप्यन्यदेवताभक्ताः) इत्यादिक वचनों करिके श्री भगवान् आपहीं आगे स्पष्ट करिके कथन करेंगे ॥ तथा इसी अर्थकूँ (इंद्रं मित्रं वरुणं मग्निमाहुः) इत्यादिक वेद के मंत्र कथन करे हैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् इस प्रकार से आप ईश्वरहीं जो कदाचित् इंद्रादिरूप करिके सर्व लोकोंकूँ तिस तिस फलकी प्राप्ति करणे हारे होवो ॥ तौ ते सर्वजन साक्षात् आप परमेश्वर कूँहीं किस वासतै नहीं भजते हैं ॥ साक्षात् आप ईश्वर कूँछोड़िके तिन इंद्रादिक देवताओंकूँ किस वासतै भजते हैं ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् उत्तर कहे हैं ॥

(मू० श्लो०) कांक्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ॥ क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ कांक्षन्तः । कर्मणां । सिद्धिं । यजन्ते । इह । देवताः । क्षिप्रं । हि । मानुषे । लोके । सिद्धिः । भवति । कर्मजा ॥ १२ ॥ (इति पदच्छेदः) हे अर्जुन इस लोकविषे कर्मोंके फलकी ईच्छा करते हुए सकाम पुरुष इंद्रादिक देवताओंकूँ पूजन करे हैं जिस कारणतैं इस मनुष्य लोकविषे तिन सकाम पुरुषोंकूँ कर्म जन्य फल शीघ्रहीं प्राप्त होवै हैं ॥ १२ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जे पुरुष इस लोकविषे यज्ञादिक कर्मोंके धन पुत्रादिक फलोंकी ईच्छा करे हैं ॥ ते सकाम पुरुष तौ इंद्र अग्नि सूर्य आदिक देवताओंकूँहीं पूजन करे हैं ॥ ते पुरुष निष्काम होइके कदाचित् भी मैं परमेश्वर का पूजन करते नहीं ॥ काहेतैं जे पुरुष तिस तिस फलकी ईच्छा करते हुए तिन इंद्रादिक देवताओंका पूजन करे हैं अर्थात् यज्ञादिक कर्मोंकरिके तिन इंद्रादिक देवताओंकूँ प्रसन्न करे हैं ॥ तिन सकाम पुरुषोंकूँ तिस तिस कर्म जन्य फलकी प्राप्ति इस मनुष्य लोकविषे शीघ्रही होवै है ॥ और

आत्मज्ञानका जो मोक्षरूपफल है तो ॥ सो फल है ॥ अंतःकरणकी शुद्धि तै विना प्राप्ति होवैनहीं ॥ किंतु सो ज्ञानका फल आपणी प्राप्तिविषे अंतःकरणके शुद्धिकी अपेक्षा अवश्य करे है ॥ और सा अंतःकरणकी शुद्धि अनेक जन्मोंके पुण्यकर्मकरिके होवै है ॥ यातें कर्मके फलकी न्यांई सो ज्ञानका फल शीघ्र ही प्राप्त होवैनहीं ॥ ईहां मनुष्य लोकविषे सो कर्मका फल शीघ्र ही प्राप्त होवै है यावचनके कहनेकरिके श्रीभगवान् नैं यह अर्थ सूचनकन्या ॥ इस मनुष्यलोकतौ भिन्न दूसरे लोकोंविषे भी वर्ण आश्रमके धर्मोंतै भिन्न अन्य कर्मोंके करणेंतें फलकी प्राप्ति अवश्य करिके होवैइति ॥ यातें हे अर्जुन जिस कारणतें मोक्षतैं विमुख हूए ते सकामपुरुष तिस तिस तुच्छ फलकी प्राप्ति वासतैं अन्य इंद्रादिक देवताओंका पूजन करे हैं ॥ तिस कारणतें जैसे मुमुक्षुजन साक्षात् मै परमेश्वरका ही पूजन करे है ॥ तैसे ते सकामपुरुष साक्षात् मै परमेश्वरका पूजन करते नहीं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सकामताके तथानिष्कामताके भेद करिके सर्वपुरुषोंविषे समान स्वभावताका अभाव कथनकन्या ॥ अव शरीरके आरंभकरणेहारे सत्त्वादिगुणोंकी विषमताकरिके भी तिन सर्वपुरुषोंविषे समान स्वभावताका अभाव कथन करे हैं ॥

(मू० श्लो०) चातुर्वर्ण्यमया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ॥ तस्य कर्तारमपि मां विद्ध च कर्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥ चातुर्वर्ण्यं । मया । सृष्टं । गुणकर्मविभागशः । तस्य । कर्तारम् । अपि । मां । विद्धि । अकर्तारम् । अव्ययम् ॥ १३ ॥ इति पद० ॥ हे अर्जुन मै परमेश्वर नैं गुणकर्म विभागकरिके चारिवर्ण उत्पन्न करे हैं तिस चारिवर्णका कर्तारूप भी मै परमेश्वर कूं तूं अकर्तारूप तथा अव्ययरूप जान ॥ ॥ १३ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन मै ईश्वर नैं सृष्टिके आदिकालविषे सत्त्वादिगुणोंके भेद करिके तथा शमदमादिक कर्मोंके भेद करिके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यह चारिवर्ण भिन्न भिन्न करिके उत्पन्न करे हैं ॥ तहां सत्त्वगुण है प्रधानजिनोंविषे ऐसे जे ब्राह्मण हैं ॥ तिन ब्राह्मणोंके तौ ता सत्त्वगुणके कार्यरूप शमदमादिकहीं कर्म हैं और सत्त्वगुण उपसर्जनरजोगुण है प्रधानजिनोंविषे ऐसे जे क्षत्रिय हैं तिन क्षत्रियोंके तौ ता सत्त्वगुण उपसर्जन प्रधानभूतरजोगुणका कार्यरूप शौर्य तेज आदिकहीं कर्म हैं ॥ और तमोगुण उपसर्जनरजोगुण है प्रधानजिनोंविषे ऐसे जे वैश्य हैं ॥ तिन वैश्योंके तौ ता तमोगुण उपसर्जन प्रधानभूतरजोगुणका कार्यरूप कृषि वाणिज्यादिकहीं कर्म हैं ॥ और तमोगुण है प्रधानजिनोंविषे ऐसे जे शूद्र हैं ॥ तिन शूद्रोंके तौ तिस तमोगुणका कार्यरूप त्रैवर्णिकपुरुषोंकी सेवादिकही कर्म हैं ॥ ईहां उपसर्जननाम गौणका है ॥ इस प्रकार गुणोंके भेद करिके यह चारिवर्ण स्थित हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् इस प्रकार गुणकर्मके भेद करिके विषम स्वभाववाले चारिवर्णों कूं उत्पन्न करनेहारे आप ईश्वरविषे विषमता दोषकी प्राप्ति अवश्य करिके होवैगी ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (तस्य कर्तारमपि मां विद्ध च कर्तारमव्ययमिति) हे अर्जुन यद्यपि मै परमेश्वर

व्यवहारदृष्टिकरि कै ताविषमस्वभाववाले चारिवर्णों का करता हूं ॥ तथापि परमार्थदृष्टिकरि कै तूं हमारे कूं अकर्तारूप ही जान ॥ तथा अव्ययरूप जान अर्थात् निरहंकारता करि कै अबाधित महिमावाला जान इति ॥ और किसी टीका विषेतों (गुणकर्म विभागशः) यावचनविषे गुणकर्म विभागशः यह दोपद अंगीकार करि कै यह अर्थ कथन कर चहै ॥ चारिवर्णों के जे हितरूप होवैं तिनों का नाम चातुर्वर्ण्य है ॥ ऐसे जे द्रव्यदेवतादिक गुण हैं तथा अग्निहोत्रादिक कर्म हैं ॥ ते चारिवर्णों के हितरूप गुणकर्म में परमेश्वर नैं (विभागशः सृष्टं) क्या साधारण असाधारण भेद करि कै उत्पन्न करे हैं तहां दानजपादिक कर्म सर्व वर्णों का साधारण धर्म हैं ॥ और अग्निहोत्र वेदाध्ययन संध्योपासन इत्यादिक कर्म तो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीन वर्ण के ही हैं ॥ शूद्र के ते अग्निहोत्रादिक कर्म हैं नहीं ॥ तिन तीन वर्णों विषे भी बृहस्पतिसवादिक कर्म ॥ केवल ब्राह्मण के ही असाधारण धर्म हैं अन्य क्षत्रियादिकों के ते धर्म नहीं हैं ॥ और राजसूयादिक कर्म केवल क्षत्रिय के ही असाधारण धर्म हैं ब्राह्मणादिकों के ते धर्म नहीं हैं ॥ और वैश्यस्तोमादिक कर्म केवल वैश्य के ही असाधारण धर्म हैं ॥ ब्राह्मणादिकों के ते धर्म नहीं हैं ॥ और त्रैवर्णिक पुरुषों की सेवा करणी इत्यादिक कर्म केवल शूद्र के ही असाधारण धर्म हैं ॥ ब्राह्मणादिकों के ते धर्म नहीं हैं ॥ इस प्रकार तिन अग्निहोत्रादिक कर्मों के भेद हुए तिन कर्मों विषे अंगभूत द्रव्यदेवतादिक गुणों का भी भेद होवै है इस प्रकार तिन चारिवर्णों के गुण तथा कर्म में परमेश्वर नैं ही साधारण असाधारण रूप करि कै उत्पन्न करे हैं यातैं जैसे पुत्रकी प्रसन्नता करि कै पिता की प्रसन्नता होवै है ॥ तैसे तिन इंद्रादिक देवताओं की प्रसन्नता करि कै में परमेश्वर की भी प्रसन्नता होवै है ॥ इस प्रकार प्रसन्नता कूं प्राप्त हुआ में परमेश्वर तिन इंद्रादिक देवताओं के भक्तों कूं भी तिस तिस कर्म के फल की प्राप्ति करे हूं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् पूर्व आपनैं कर्तारूप में परमेश्वर कूं तूं अकर्तारूप जान या प्रकार का वचन कथन कर चहै ॥ सो कर्ता कूं अकर्तारूपता किस प्रकार संभवैगी ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् ता अर्थ कूं स्पष्ट करि कै निरूपण करे है ॥

(मू० श्लो०) न मां कर्माणि लिपंति न मे कर्मफले स्पृहा ॥ इति मां योभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ॥ १४ ॥ न। मां। कर्माणि। लिपंति। न। मे। कर्मफले। स्पृहा। इति। मां। यः। अभिजानाति। कर्मभिः। न। सः। बध्यते ॥ १४ ॥ (इति पद०) हे अर्जुन में परमेश्वर कूं यह कर्म नहीं लिपायमान करे हैं तथा हमारे कूं तार्कर्म के फल विषे तृष्णा भी नहीं है इस प्रकार जो पुंरूप में परमेश्वर कूं जानता है सो पुंरूप भी कर्मों करि कै नहीं बंधायमान होवै है ॥ १४ ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन निरहंकारता करि कै कर्तृत्व अभिमान तैरहित जो में भगवान् हूं ॥ तिस हमारे कूं यह जगत् के उत्पत्ति स्थिति आदिक कर्म नहीं लिपायमान करते ॥ अर्थात् जैसे अन्य अज्ञानी पुरुषों कूं यह कर्म देह की आरंभता करि कै बंधायमान करे हैं ॥ तैसे में परमेश्वर कूं ते कर्म बंधायमान करते नहीं ॥ यातैं व्यवहारदृष्टिकरि कै में

कर्मोंकू करताहुआभीवास्तवतैं अकर्तारूपहींहूं ॥ इसप्रकार श्रीभगवान् आपणेविषे कर्त्तापणैकानिषेधकरिकै अब भोक्तापणेकाभी निषेधकरेहैं (नमेकर्मफले स्पृहाइति) हे अर्जुन जैसे अज्ञानीजीवोंकू कर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंविषे यह फल हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीतृष्णा होवैहै ॥ तैसे मैंआप्तकामईश्वरकू तिनकर्मोंके फलोंविषे तृष्णाहैनहीं ॥ तहांश्रुति (आप्तकामस्यकास्पृहाइति) ॥ अर्थयह ॥ सर्वात्मदाष्टिकरिकै जिसपुरुषकू सर्वपदार्थप्राप्तहुएहैं तिसपुरुषकानाम आप्तकामहै ॥ ऐसेआप्तकामपुरुषकू किंचित्मात्रभी किसीफलकीतृष्णाहोवैनहींइति ॥ तात्पर्ययह इसलोकविषे अज्ञानीजीवोंकू जो कर्म बंधायमानकरेहैं ॥ सो मैं इनकर्मोंका कर्त्ताहूं तथा मैं इनकर्मोंकेफलकूंप्राप्तहोवौंगा याप्रकारका कर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यादोनोंकरिकैहीं बंधायमानकरेहैं ॥ कर्तृत्वअभिमान तथाफलकी तृष्णा यादोनोंतैंविनातेकर्म किसीकूभी बंधायमानकरतेनहीं ॥ और सोकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यहदोनों मैंआप्तकामईश्वरविषेहैनहीं ॥ याकारणतैं तेकर्म मैंईश्वरकू बंधायमानकरतेनहीं ॥ इसप्रकार कर्मोंकूकरताहुआभीमैंईश्वर वास्तवतैं अकर्तारूपहींहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार आपईश्वरविषे अकर्त्ता पणा तथा अभोक्तापणा सिद्धहुएभी ताकेजानणेकरिकै हमलोकोंकू कौनफलप्राप्तहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (इतिमांयोऽभिजानातिइति) हेअर्जुन इस प्रकार जोकोईअन्यपुरुषभी अकर्त्ताअभोक्तामैंपरमेश्वरकू आपणाआत्मारूपकरिकैजानेहै ॥ सोपुरुषभी हमारेन्याई तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहोवै नहीं ॥ अर्थात् अकर्त्ता आत्माकेज्ञानकरिकै सोपुरुषभी तिनकर्मोंतैंमुक्तहींहोवैहै इति ॥ १४ ॥ * ॥ जिसकारणतैं मैं कर्त्ता नहींहूं तथामेरेकू कर्मों केफलकी तृष्णाभीनहींहै याप्रकारके अकर्त्ताअभोक्ताआत्माके ज्ञानतैं यह पुरुष तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहोतानहीं ॥ तिसकारणतैं पूर्वअनेकमहान्पुरुष आत्मा कू अकर्त्ताअभोक्ताजानिकरिकै तिनकर्मोंकूहींकरतेभयेहैं तिसप्रकार तूंअर्जुनभीतिनकर्मोंकूहींकर ॥ याअर्थकू अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) एवंज्ञात्वाकृतंकर्मपूर्वैरपिमुमुक्षुभिः ॥ कुरुकर्मैवतस्मात्त्वंपूर्वैः पूर्वतरंकृतम् ॥ १५ ॥ एवं । ज्ञात्वा । कृतं । कर्म । पूर्वैः । अपि । मुमुक्षुभिः । कुरु । कर्म । एवं । तस्मात् । त्वं । पूर्वैः । पूर्वतरं । कृतं ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इसप्रकार आत्माकू अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकैपूर्वले मुमुक्षुवोंने भी कर्मही करचाहै तथा तिसतैंभीपूर्व मुमुक्षुवोंने युगांतरविषे सोकर्मही करचा है तिसकारणतैं तूंअर्जुनभी तौकर्मकू ही कर ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसद्वापरयुगविषे पूर्व मोक्षकीइच्छावाले जे ययातिराजा यदुराजा इत्यादिकराजेहोतेभयेहैं ॥ तेराजेभी इसआत्मादेवकू अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरि आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूहीं करतेभयेहैं ॥ तिनकर्मोंकापरित्यागकरिकै तेराजे तूष्णींभावकू तथासंन्यासकू नहींकरतेभयेहैं ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी आत्माकू

अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरि कै तिनकर्मोंकूँहींकर ॥ तूष्णींभावकूँ तथासंन्यासकूँ तूँ मतकर ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूँ तत्त्ववेत्तानहींहोवै ॥ तौँ तूँ आपणेअंतः
करणकीशुद्धिवासतै तिनकर्मोंकूँकर ॥ और जोकदाचित् तूँ तत्त्ववेत्ताहोवै ॥ तौँ तूँ लोकसंग्रहकेवासतै तिनकर्मोंकूँ कर ॥ सर्वप्रकारतैं तुमारेकूँ तेकर्म करणेयोग्यहैं
॥ शंका ॥ हेभगवन् इसद्वापरयुगविषे पूर्व ययातियदुआदिकराजे कर्मोंकूँकरतेभयेहैं याप्रकारकावचन आपनैं कथनकरचा ॥ ताकरिकैयहजान्याजावैहै ॥ केवल
इसद्वापरयुगविषेहीं तिनकर्मोंकेकरणेकाअधिकारहै ॥ अन्यत्रेतादिकयुगोंविषे तिनकर्मोंकेकरणेका अधिकारनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं
(पूर्वैःपूर्वतरंकृतमिति) हेअर्जुन केवल इसीद्वापरयुगविषेहीं पूर्व ययातिराजा यदुराजा आदिकराजे तिनकर्मोंकूँनहींकरतेभयेहैं ॥ किंतु इसयुगतैंपूर्व त्रेतादिकयुगों
विषे जनकादिकराजेभी इसआत्मादेवकूँ अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरि कै तिनकर्मोंकूँनहींकरतेभयेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसयुगविषे तथादूसरेयुगोंविषे मुमुक्षु
राजे तथातत्त्ववेत्ताराजे अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अथवा लोकसंग्रहकेवासतै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूँ अवश्यकरिकेकरतेभयेहैं ॥ यातैं तिनराजावांकीन्याई
तैंअर्जुनकूँभी आपणेवर्णआश्रमकेकर्म अवश्यकरिकेकरचेचाहिये इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् क्या तिनकर्मोंविषे कोईसंशयभीहै ॥ जिसकरिकै
आप (पूर्वैःपूर्वतरंकृतं) यावचनकरिकै तिसकर्मकूँ अत्यंतदृढ करतेहो ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकर्मविषे संशयहै याकारणतैंहीं तिसकर्मविषे बुद्धि
मानपुरुषभी मोहकूँप्राप्तहोवैहैं याप्रकारकाउत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) किंकर्मकिमकर्मैतिकवयोप्यत्रमोहिताः ॥ तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १६ ॥ किं । कर्म । किं । अकर्म ।
इति । कवयः । अपि । अत्र । मोहिताः । तत् । ते । कर्म । प्रवक्ष्यामि । यत् । ज्ञात्वा । मोक्ष्यसे । अशुभात् ॥ १६ ॥ (इतिपद
च्छेदः) ॥ हेअर्जुन कर्म क्याहै तथा अकर्म क्याहै इस अर्थविषे बुद्धिमानपुरुष भी मोहकूँप्राप्तहोतेभयेहैं तिसंकारण तैं तुमारेताई
ताकर्मअकर्मकूँ मैं कहताहूँ जिसकूँ जानिकरि कै तूँ संसारतैं मुक्तहोवैगा ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नौकाविषेस्थितजोपुरुषहै ॥ तिसपुरुषकूँ तीरविषेस्थितगमनरूपक्रियातैंरहितवृक्षोंविषेभी गमनरूपक्रियाकाभ्रम देखणेविषेआवैहै ॥ तथागमन
रूपक्रियावालेपुरुषोंविषेभी दूरतैं तागमनक्रियाकेअभावकाभ्रम देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं वास्तवतैं सोकर्म क्यावस्तुहै ॥ तथा वास्तवतैं सोअकर्म क्यावस्तुहै ॥
इसप्रकारकाअर्थविषे बुद्धिमानपुरुषभी मोहकूँप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेस्वरूपनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौँ
(किंकर्मकिमकर्मैतिकवयोप्यत्रमोहिताः) याअर्धश्लोकका यहअर्थ कथनकरचाहै ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिके जोअर्थ विधानकरचाहोवै ताअर्थकानाम कर्महै ॥

और ताश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिके जोअर्थ नहींविधानकरचाहोवै ताअर्थकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार केईकपंडितपुरुष ताकर्मअकर्मकास्वरूपकथनकरहैं ॥ और दूसरेकेईकपंडितजनतों यहकहेहैं ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिके जोअर्थ विधानकरचाहोवै ताअर्थकानाम कर्महै ॥ और तिनकर्मोंकेसंन्यासकानाम अकर्महै ॥ और दूसरेकेईकशास्त्रवेत्तापुरुषतों यहकहेहैं ॥ गमनआगमनादिकक्रियावोंकानाम कर्महै ॥ और तिनगमनादिकक्रियावोंतैरहितहोइके तूष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार ताकर्मअकर्मकेस्वरूपविषे बहुतप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवताहै ॥ यातै कर्मशब्दकावाच्यार्थ कौनहै तथाअकर्मशब्दकावाच्यार्थ कौनहै इसप्रकारके अर्थविषेशास्त्रवेत्तापुरुषभी मोहकंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेवास्तवस्वरूपकेनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ॥ तिसकारणतैं मैंकृष्णभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति ताकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं संशयकीनिवृत्तिपूर्वक कथनकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मअकर्मकेजानणेकरिके किस फलकीप्राप्तिहो वैहै ॥ ऐसीअर्जुनकेशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकाफल कथनकरहै (यज्ज्ञात्वाइति) हेअर्जुन जिसकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं यथार्थ जानिके तूं इससंसार तैंमुक्तहोवैगा ॥ अर्थात् इससंसारतैंमुक्तिहीं ताकर्मअकर्मज्ञानकाफलहै ॥ यद्यपि (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे केवल कर्मफलहीहैतथापि तत्ते इसपदतैंआगे अकारनिकासिके अकर्मकाभी ग्रहणहोइसकैहै ॥ इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मअकर्मकास्वरूप सर्वलोकविषेप्रसिद्धहीहै ॥ यातैं मैंअर्जुनभी ताकर्मअकर्मकेस्वरूपकूं जानताहीहूं ॥ तहां देहइंद्रियादिकोंकाजो व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्महै ॥ और सर्वव्यापारतैंरहितहोइके तूष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ ऐसे सर्वलोकोविषेप्रसिद्ध कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे आपनैं दूसराक्याकहणाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ॥ अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥ १७ ॥ कर्मणः । हिं । अपि । बोद्धव्यं । बोद्धव्यं । च । विकर्मणः । अकर्मणः । च । बोद्धव्यं । गहना । कर्मणः । गतिः ॥ १७ ॥ इति पद० ॥ हेअर्जुन शास्त्रविहितकर्मका भी तत्त्व जानणेयोग्यहै तथा निषिद्धकर्मकाभी तत्त्व जानणेयोग्यहै तथा अकर्मकाभी तत्त्व जानणेयोग्यहै जिसकारणतैं कर्मविकर्म अकर्मका तत्त्व अत्यंतदुर्बोध्यहै ॥ १७ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं विधानकन्याजो अर्थहै ताकानामकर्महै ॥ ताकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिके जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं ताकर्मकेस्वरूपजानेतैंविना ताकर्मकाअनुष्ठान होइसकैनहीं ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं निषेधकन्याजो अर्थहै ताकानाम विकर्महै ॥ ताकर्म काभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिके जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं तानिषिद्धकर्मकेजानेतैंविना तानिषिद्धकर्मतैंनिवृत्तहूआजावैनहीं ॥ औरसर्वव्यापार

तैरहितहोइके जोतूणींस्थितहोणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ ताअकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं कर्म वि
कर्म अकर्म यातीनोंकावास्तवस्वरूप अत्यंत दुर्विज्ञेयहै ॥ ईहां (गहनाकर्मणोगतिः) यावचनविषेस्थितजो कर्मशब्दहै ॥ सोकर्मशब्दविकर्म अकर्म यादोनों
काभीउपलक्षकहै ॥ अर्थात्ताकर्मशब्दकरिकै कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकाग्रहणकरणा ॥ और (कर्मणः विकर्मणः अकर्मणः) यातीनोंपदोंतैंउत्तर तत्त्वं इस
पदका अध्याहारकरणा ॥ तथा (बोद्धव्यं) यातीनोंपदोंतैंउत्तर अस्ति यापदका अध्याहारकरणा ॥ ताकरिकै कर्मणस्तत्त्वबोद्धव्यंअस्ति इसप्रकारकेतीनवा
क्यसिद्धहोवैहैं ॥ तहां कर्मोंकाभीवास्तवस्वरूप तुमारेकूं जानणेयोग्यहै इसप्रकारका तिनवाक्योंकाअर्थसिद्धहोवैहै ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् कर्म विकर्म
अकर्म या तीनोंका जोवास्तवस्वरूप हमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ सो कर्मादि तीनोंकावास्तवस्वरूप किसप्रकारकाहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाके
हुए ॥ श्रीभगवान् तिनकर्मादिकोंकेवास्तवस्वरूपकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणिचकर्मयः ॥ सवुद्धिमान्मनुष्येषुसयुक्तःकृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥ कर्मणि । अकर्म । यः ।
पश्येत् । अकर्मणि । च । कर्म । यः । सः । बुद्धिमान् । मनुष्येषु । सः । युक्तः । कृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन जोपुरुष
कर्मविषे अकर्मकूं देखेहै तथा जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूं देखेहै सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है तथा सोपुरुषही योग्ययुक्त
है तथा सर्वकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देह इंद्रिय बुद्धि आदिकोंका जो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित व्यापारहै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्ध व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्महै ॥
सोकर्म वास्तवतैंतोंतिनदेहइंद्रियादिकोंविषेहीरहेहै ॥ असंगआत्माविषे सोकर्म रहैनहीं ॥ तौभी सोव्यापाररूपकर्म अहंकरोमि इसधर्माध्यासरूपप्रतीतिके
बलतैं आत्माविषे आरोपणकन्याजावैहै ॥ जैसे नदीकेतीरविषेस्थितजेवृक्षहैं ॥ तिनवृक्षोंविषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूपक्रियाहैनहीं ॥ तथापि नौ
काविषेस्थितपुरुष तानौकाकेचलने करिकै तिनवृक्षोंविषे गमनरूपक्रियाकाआरोपणकरेहै ॥ तैसे शास्त्रविचारतैं रहितमूढपुरुष अक्रियआत्माविषे तादेहइं
द्रियादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरेहैं ॥ ताआत्माविषेआरोपितकर्मविषे जोपुरुष आत्माकेअकर्त्तास्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतैं कर्मकेअभाव
कूंही देखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे नौकाविषेस्थितपुरुषोंनें यद्यपि तीरस्थवृक्षोंविषे गमनरूपकर्मकाआरोपणकरीताहै ॥ तथापि वास्तवते तिनवृक्षों
विषे तागमनरूपकर्मकाअभावहीहैं ॥ तैसे मूढपुरुषोंनें यद्यपि अक्रियआत्माविषे तादेहादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरीताहै ॥ तथापि ताअक्रिय
आत्माविषे वास्तवते तिनकर्मोंकाअभावहीहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष कर्मविषे अकर्मकूंदेखेहैं इति ॥ और सत्वादितिनगुणोंवालीमायाकापरिणामहोनेतैं

सर्वकालविषे ताव्यापाररूपकर्मवाले जे देह इंद्रियादिक हैं ॥ तिन देह इंद्रियादिकों विषे वास्तवतैं ताकर्मका अभाव रहै नहीं ॥ किंतु तिन देह इंद्रियादिकों विषे ताकर्मके अभावका आरोपण होवै है ॥ जैसे चक्षुके संबंधवाले दूर देश विषे स्थित जे गमनरूप क्रियावाले पुरुष है ॥ तिन पुरुषों का यद्यपि वास्तवतैं तागमनरूप क्रियाका अभाव है नहीं तथापि दूरत्व दोषके वशतैं तिन पुरुषों विषे तामनरूप क्रियाके अभावका आरोपण होवै है तथा जैसे आकाश विषे स्थित जे चंद्र तारकादिक नक्षत्र हैं ॥ तिन नक्षत्रों विषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूप क्रियाका अभाव है नहीं ॥ किंतु सर्वदा तिनों विषे गमनरूप क्रिया है ॥ तथापि दूरत्व दोषके वशतैं तिन नक्षत्रों विषे तागमन क्रियाके अभावका आरोपण होवै है तैसे सर्वदा व्यापाररूप कर्मवाले जे देह इंद्रियादिक हैं ॥ तिन देह इंद्रियादिकों विषे वास्तवतैं ताकर्मका अभाव है नहीं ॥ किंतु मैं तूष्णीं हू आ किंचित् मात्र भी कर्म नहीं करता हूं या प्रकार की अध्यासरूप प्रतीतिके बलतैं तिन देह इंद्रियादिकों विषे ताकर्मके अभावका आरोपण करया जावै है ॥ ऐसे देह इंद्रियादिकों विषे आरोपण करया जो व्यापार की उपरामतारूप अकर्म है ता अकर्म विषे जो पुरुष तिन देह इंद्रियादिकों के सर्वदा व्यापारवत्त्वरूप वास्तव रूपका विचार करिकै वास्तवतैं कर्म कूं देखे है ॥ अर्थात् ता आरोपित अकर्म विषे कर्म निवृत्ति है नाम जिसका ऐसा जो प्रयत्नरूप व्यापार है जिस कूं निग्रह भी कहै है ता प्रयत्नरूप कर्म कूं जो पुरुष देखे है ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे चक्षुके संबंधवाले दूर देश विषे स्थित जे गमनरूप क्रियावाले पुरुष हैं तथा आकाश विषे स्थित जे गमनरूप क्रियावाले नक्षत्र हैं ॥ तिन पुरुषों विषे तथा नक्षत्रों विषे यद्यपि दूरत्व दोषतैं तागमनरूप क्रियाका अभाव प्रतीत होवै है ॥ तथापि ते पुरुष तथा नक्षत्र वास्तवतैं तागमनरूप क्रियावाले ही हैं ॥ तैसे तूष्णीं स्थित हू आ मैं किंचित् मात्र भी नहीं करता हूं या प्रकार की अध्यासरूप प्रतीतिके बलतैं यद्यपि तिन देह इंद्रियादिकों विषे ताव्यापाररूप कर्मका अभाव प्रतीत होवै है ॥ तथापि ते देह इंद्रियादिक वास्तवतैं ताकर्मवाले ही हैं ॥ और उदासीन अवस्था विषे भी मैं उदासीन हू आ स्थित तथा इस प्रकार का अभिमान ही एक कर्म है इति ॥ इस प्रकार कर्म विषे अकर्म कूं देखने हारा तथा अकर्म विषे कर्म कूं देखने हारा जो परमार्थ दर्शी पुरुष है ॥ सो पुरुष ही सर्व मनुष्यों विषे बुद्धिमान है तथा सो पुरुष ही योग युक्त है तथा सो पुरुष ही सर्व कर्मों के करने हारा है ॥ ईहां बुद्धिमत्त्व योग युक्तत्व कृत्स्न कर्म कृत्स्न यातीन धर्मों करिकै श्री भगवान् नैं ता परमार्थ दर्शी पुरुष की स्तुति कथन करी है ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयः पश्येत्) या प्रथम पाद करिकै श्री भगवान् नैं कर्मका तथा विकर्मका वास्तव स्वरूप दिखाया ॥ जिस कारणतैं कर्म शब्द विहित कर्म तथा निषिद्ध कर्म दोनों का ही वाचक है ॥ और (अकर्मणि च कर्मयः) या द्वितीय पाद करिकै श्री भगवान् नैं अकर्मका वास्तव स्वरूप दिखाया इति ॥ यातैं हे अर्जुन जो तूं यह मानता है ॥ यह सर्व कर्म बंध के हेतु हैं ॥ यातैं ते कर्म हमारे कूं करने योग्य नहीं हैं ॥ किंतु हमारे कूं तूष्णीं भावतैं हीं सुख पूर्वक स्थित होना योग्य है ॥ सो यह तु मारामानणा मिथ्या हीं है ॥ काहेतैं मैं कर्मों का कर्ता हूं या प्रकार का

इसप्रकारका अर्थ माननेविषे पूर्व (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) इत्यादिके उपक्रमादिकवचनोंका विरोध कथन करि आये हैं ॥ इसप्रकारका नित्यकर्मोंका नहीं
 करणारूप अकर्मभी स्वरूपतैहीं तानित्यकर्मतैविरुद्धकर्मकी लक्षकता करिके उपयोगी होवै है ॥ तिस अकर्मविषे कर्मदृष्टि किसीभी अर्थविषे उपयोगी होवै नहीं ॥
 तथा तानित्यकर्मके नहीं करनेतै प्रत्यवायभी होवै नहीं ॥ काहेतै सो नित्यकर्मका नहीं करणा अभावरूप है ॥ और प्रत्यवाय भावरूप है ॥ ता अभावतै भाव
 की उत्पत्ति संभवती नहीं ॥ जो कदाचित् अभावतैभी भावकार्यकी उत्पत्ति होती होवै ॥ तौ अभावतौ सर्वदेशकालविषे विद्यमान है ॥ यातै सर्वदेशविषे तथा
 सर्वकालविषे सर्वकार्योंकी उत्पत्ति होनी चाहिये ॥ सो ऐसा देखनेविषे आवतानहीं ॥ यातै अभावतै भावकी उत्पत्ति मानणी अत्यंत विरुद्ध है ॥ किंवा भावरूप अर्थहीं
 धर्म अधर्मरूप अपूर्वका जनक होवै है ॥ अभावरूप अर्थ ता अपूर्वका जनक होवै नहीं ॥ यातै नित्यकर्मका अभाव ता प्रत्यवायका जनक है नहीं ॥ किंतु तानित्यक
 र्मके अनुष्ठानकालविषे जो तानित्यकर्मका विरोधी शयन उपवेशनादि कर्म हैं ॥ सो नित्यकर्मके अकरण उपलक्षित भावरूप कर्महीं ता प्रत्यवायका हेतु है ॥ यह
 सर्ववैदिक पुरुषोंका सिद्धांत है ॥ यातै मिथ्याज्ञानके निवृत्तिप्रसंगविषे मिथ्याज्ञानका ही व्याख्यान करणा अत्यंत विरुद्ध है ॥ और जो कोई वादी यह कहै ॥ सो भग
 वान् का वचन नित्यकर्मोंके अनुष्ठान पर है ॥ सो यह कहणा भी संभवतानहीं ॥ काहेतै यह अधिकारी पुरुष नित्यकर्मोंकूं करै या प्रकारके अर्थकूं (कर्मण्यक
 र्मयः पश्येत्) यह वचन कथन करतानहीं ॥ ता अर्थके बोधन करने वासतै जो कदाचित् श्री भगवान् ता वचनकूं कथन करै ॥ तौ श्री भगवान् विषे ही मिथ्या
 वादीपणा सिद्ध होवै गाइति ॥ और किसी टीकाविषे तौ (कर्मण्यकर्मयः पश्येत्) इसश्लोकका यह अर्थ कथन करचा है ॥ तहां पूर्व (कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं) या
 श्लोकविषे कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका जापरि अवसानरूप गति है सा अत्यंत गहन है यातै इस अधिकारी पुरुषकूं सा कर्मादिकोंकी गति अवश्य करिके जान
 ने योग्य है यह अर्थ श्री भगवान् नै कथन करचा था ॥ तिसी अर्थका ही व्याख्यानरूप (कर्मण्यकर्मयः पश्येत् समनुष्ये पुबुद्धिमान्) यह वचन है ॥ सो दिखावे हैं ॥
 (कर्मणि) यापद करिके कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंका ग्रहण करणा ॥ और (अकर्म) यापद करिके ता कर्म अकर्म विकर्म यातीनों
 तै विपरीत भावका ग्रहण करणा ॥ तहां जो पुरुष ता कर्मविषे अकर्मकूं देखे है ॥ अर्थात् कर्म तै विपरीत भावकूं देखे है ॥ तहां
 कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंविषे तिन कर्मादिकोंतै विपरीतरूपता शास्त्रप्रमाणतै देखनेविषे आवै है ॥ जैसे कर्मविषे श्रद्धा तैरहित जो पुरुष है ॥ ता श्रद्धाहीन
 पुरुषनै करचा जो कोई यज्ञरूप कर्म है ॥ सो यज्ञरूप कर्म फलका अहेतु होणे तै करचा हूआ भी न करये के समान होवै है ॥ यातै सो श्रद्धाहीन पुरुषकृत यज्ञरूप कर्मविषे ही
 परि अवसानकूं प्राप्त होवै है ॥ और दांभिक पुरुषनै करचा हूआ सोई यज्ञरूप कर्म विकर्मविषे ही परि अवसानकूं प्राप्त होवै है ॥ या अर्थकूं श्री भगवान् आप ही (अश्र

नभी परमार्थदर्शी होउ ॥ तापरमार्थदर्शीपणेकरिकैहीं तुमारेविषे सोसर्वकर्मकाकर्त्तापणा सिद्धहोवैगा ॥ यातैं जिसकर्मअकर्मकेस्वरूपकूँजानिकै तूं इससंसारतैंमुक्त होवैगा यहजोपूर्व कथनकरचाथा तथा कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका वास्तवस्वरूप तुमारेकूँ जानणेयोग्यहै यहजोपूर्व कथनकरचाथा ॥ तथा सोईहींपुरुष बुद्धिमानहै इत्यादिकजोस्तुति कथनकरीहै ॥ यहसर्ववार्त्ता परमार्थवस्तुकेदर्शनहुएहीं संभवहोइसकेहै ॥ अन्यवस्तुकेदर्शनतैं संभवैनहीं ॥ काहेतैं ताचैतन्यरूपपरमार्थवस्तुतैंभिन्न जितनैकि अनात्मपदार्थहैं ॥ तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानतैं अशुभसंसारतैंमुक्ति संभवतीनहीं उलटा बंधकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तापरमार्थवस्तुतैंभिन्न सर्वपदार्थअतत्त्वरूपहैं ॥ यातैं तेअतत्त्वरूपपदार्थ इसअधिकारीपुरुषकूँ जानणेयोग्यभीनहींहै ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानहुए इसपुरुषविषे सोबुद्धिमानपणा भी संभवतानहीं ॥ यातैं परमार्थदर्शीपुरुषोंका यहपूर्वउक्तव्याख्यान युक्तहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतों (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याश्लोकका यहअर्थ कथन करचाहै ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै करचेजे अग्निहोत्रसंध्याउपासनादिकनित्यकर्महैं ॥ तेनित्यकर्मबंधकेहेतुहोवैनहीं ॥ यातैं तानित्यकर्मविषे जोपुरुष यहनित्यकर्म बंधकाअहेतुहोणेतैं अकर्मरूपहींहै याप्रकारदेखेहै ॥ और तिननित्यकर्मोंका जोनहींकरणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ सोनित्यकर्मोंकानहींकरणारूपअकर्म इसअधिकारीपुरुषके प्रत्यवायकाहेतुहोवैहै ॥ यातैं ताअकर्मविषे जोपुरुष यहअकर्म प्रत्यवायकाहेतुहोणेतैं कर्मरूपहींहै याप्रकारदेखेहै ॥ सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमानहै ॥ तथा योगयुक्तहै ॥ तथा सर्व कर्मोंकाकर्त्ताइति ॥ सोयहअर्थ असंगतहै ॥ काहेतैं तानित्यकर्मविषे यहअकर्म है याप्रकारकाजो ज्ञानहै ॥ सोज्ञानरज्जुविषे सर्पज्ञानकीन्यांई भ्रांतिरूपहींहै ॥ यातैं ताभ्रांतिज्ञानविषे (यज्ज्ञात्वामोक्षयसेऽशुभात्) यावचनकरिकैकथनकरीजा अशुभसंसारतैंमोक्षकी हेतुताहै ॥ साहेतुता संभवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञान मिथ्यारूपहोणेतैं आपही अशुभरूपहै ॥ तथा सोभ्रांतिज्ञान (बोद्धव्यं) यावचन करिकैकथनकरचाजानणेयोग्यतत्त्वरूपभीनहींहै ॥ तथा ताभ्रांतिज्ञानकेप्राप्तहुए बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व इत्यादिकस्तुतिभी संभवतीनहीं ॥ उलटा सो भ्रांतिज्ञानवालापुरुष मिथ्यादर्शीहीं कहाजावैहै ॥ और तानित्यकर्मोंकाजोअनुष्ठानहै ॥ सोअनुष्ठानतों स्वरूपतैंहीं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानविषे उपयोगीहै ॥ तानित्यकर्मविषे अकर्मबुद्धितों किसीविषेभी उपयोगीहैनहीं ॥ काहेतैं जो अर्थ शास्त्रकरिकैविवितहोवैहै ॥ सोईहींअर्थ अंतःकरणकीशुद्धिविषे तथाज्ञानविषे उपयोगीहोवैहै ॥ जैसे वाक् मन इत्यादिकोंविषे शास्त्रनै ब्रह्मदृष्टि विधानकरीहै ॥ यातैं तादृष्टिका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानविषेउपयोगहै ॥ तैसे नित्यकर्म अकर्मरूपहै याप्रकारकीदृष्टि किसीशास्त्रनै विधानकरीनहीं ॥ यातैं तादृष्टिका किसीभीअर्थविषे उपयोगसंभवैनहीं ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यहगीताकावचनहीं ताकर्मविषे अकर्मदृष्टिका विधानकरेहै ॥ याप्रकारकावचन जोकोईकथनकरै ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं इसगीतावचनका

श्लोकविषे जिस कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे कवीपुरुषोंकूंभी मोहकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ तथा (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनविषे जिस कर्मअकर्मकाज्ञान अशुभसंसारतैं मोक्षकाहेतु कथनक-याथा ॥ ताकर्मअकर्मदोनोंकास्वरूप में तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ याप्रकारकावचन श्रीभगवान्ने अर्जुनकेप्रति कथनक-या था ॥ तिसीहींवचनकाव्याख्यानरूप (अकर्मणिचकर्मयःपश्येत्सयुक्तः) यहवचनहै ॥ तहां इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ सोचकार कर्मविषेअकर्मदर्शन तथा अकर्मविषेकर्मदर्शन यादोनोंदर्शनोंके समुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जोपुरुष बुद्धिमान्है तथायुक्तहै ॥ सोईहींपुरुष कृत्स्नकर्मकृत्है ॥ और जोपुरुष केवल बुद्धिमान्हींहै युक्तनहींहै ॥ सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहींहै ॥ और जोपुरुष केवल युक्तहींहै बुद्धिमान्हींहै ॥ सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहींहै ॥ इसीअर्थकूं अब स्पष्टकारिकैदिखावैहैं ॥ जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूंदेखेहै ॥ सोपुरुष युक्त कह्याजावैहै ॥ तहां स्पंदतैरहितजो कूटस्थआत्माहै ताका नाम अकर्महै ॥ और स्पंदसहित जोआकाशादिकबाह्यप्रपंचहै तथामनबुद्धि आदिकजो अंतरप्रपंचहै ॥ तादोनोंप्रकारकेप्रपंचकानाम कर्महै ॥ ताकूटस्थवस्तुरूप अकर्मविषे ताप्रपंचरूपकर्मकूं आधारआधेयभावकारिकै अथवा उपादानउपादेयभावकारिकै अथवा अधिष्ठानअध्यस्तभावकारिकै देखतेहुए शास्त्रवेत्तापुरुष कर्मोंकूं करेहैं ॥ तहां प्रथम सांख्यशास्त्रवालातों जैसे जपाकुसुमकीरक्तता स्फटिकविषेप्रतीतहोवैहै तैसे संघातके कर्तृत्वादिकधर्म मेंअसंगकूटस्थविषे अविवेकतैं प्रतीत होवैहैं याप्रकारकीभावनाकरताहुआ कर्मोंकूंकरेहै ॥ और दूसरा उपनिषद्शास्त्रकावेत्तापुरुषतों जैसे सुवर्णतैंउत्पन्नहुए कुंडलकंकणादिककार्य सुवर्णरूपहींहोवैहैं तैसे ब्रह्मतैंउत्पन्नभया यहसर्वजगत्भी ब्रह्मरूपहींहै यातैं यज्ञादिककर्म तथा ताकर्मकेद्रव्यदेवतादिकसाधन तथामैंकर्मकाकर्ता सर्व ब्रह्मरूपहींहैं याप्रकारकीभावना करताहुआ कर्मोंकूंकरेहै ॥ यहदोनों युक्त कहेजावैहैं ॥ तहां पूर्वउक्तरीतिसैं जोपुरुष बुद्धिमान्भीहै ॥ परंतु इसप्रकारकायुक्त हैनहीं ॥ सोबुद्धिमान्अयुक्त पुरुष जिसजिसकर्मकूंकरेहै ॥ तेसर्वकर्म तिसपुरुषके असत्हींहोवैहैं ॥ यातैं तेकर्म तिसपुरुषकूं अशुभसंसारतैं मुक्तकरैनहीं ॥ तहांश्रुति (योवाएतदक्षरंगार्ग्य विदित्वाऽस्मिँल्लोकेजुहोतियजते तपस्तप्यते बहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति) अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरआत्माकूं नजानिकारिकै इसमनुष्यलोक विषे जिसजिस होमकूंकरेहै तथा जिसजिस यज्ञकूंकरेहै तथाअनेकसहस्रवर्षपर्यंत जिसजिस तपकूंकरेहै तेसर्वहोमयज्ञादिककर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहींप्राप्ति करेहैंइति ॥ और जोपुरुष युक्ततोंहै परंतु बुद्धिमान्हैनहीं ॥ सोपुरुष नहींकरणेयोग्यकर्मोंकूंभी करेहै ॥ ताकरिकै सोपुरुष प्रत्यवायकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं पापकेअस्पर्शकाकारण जोआत्माकाअपरोक्षज्ञानहै ॥ सोअपरोक्षज्ञान ता निर्वुद्धियुक्तपुरुषकूंहैनहीं ॥ किंतु तिसयुक्तपुरुषकूं केवलपरोक्षज्ञानहींहै ॥ इसी कर्मकूं तथापरोक्षज्ञानकूं (विद्यांचाविद्यांच) याश्रुतिनैं अविद्या विद्या यादोनोंशब्दोंतैं कथनकारिकै तिनदोनोंका समुच्चय कथनकरचाहैइति ॥ अथवा ॥ सो अकर्म

इयाहुतंदत्तंतपस्तंतकृतंचयत् ॥ असदित्युच्यतेपार्थनचतत्प्रेत्यनोइह) इसश्लोकविषे आगे कथनकरैगे ॥ इसप्रकार सर्वव्यापारतैरहित उदासीनता ॥ यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि दुःखीपुरुषोंकीरक्षाकरणे विषेसमर्थ जोपुरुषहै ॥ सोसमर्थपुरुष ताओदासीनताकूं अंगीकारकरिकै जो तिनदुःखीपुरुषोंकीरक्षा नहींकरेहै ॥ तौ तिससमर्थपुरुषका सोउदासीनतारूपअकर्म विकर्मविषेही परिववसानकूं प्राप्तहोवैहै तथा पितृयज्ञादिक पंचयज्ञोंका जो आपणेआपणेविहितकालविषे नहींकरणाहै सोपंचयज्ञोंकानहींकरणा यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि तिसकालविषे ईश्वरकेआराधनविषे अत्यंतआसक्तजोपुरुषहै तापुरुषका सोपंचयज्ञादिकोंका नहींकरणारूपअकर्मभी कर्मविषेही परिववसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता (सर्वधर्मान्परित्यज्यमाभेकंशरणं ब्रज) याश्लोकविषे श्रीभगवान्ने आपही कथन करीहै ॥ और नित्यकर्मकेपरित्यागतैं जो पापकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ सोभी तानित्यकर्मकेकरणे कालविषे शास्त्रनिषिद्धलौकिकव्यवहारकेकरणेतैंहीं पापकी प्राप्ति कथनकरीहै ॥ परंतु ताकालविषे ईश्वरकेआराधनविषेआसक्तहूआपुरुष ताप्रत्यवायकूं प्राप्तहोवैंहीं ॥ याकारणेतैंही पूर्व जलादिकोंकेभीतरस्थितहोइकै तपकूंकरतेहुएऋषि ताकालविषे नित्यकर्माकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ इसप्रकार किसीपशुकी हिंसाकरणीं यद्यपि विकर्मरूपहै तथापि (अभीषोमीयंपशुमालभेत) इसवचनतैं यज्ञविषेकरीहुई सापशुकीहिंसा कर्मविषेही परिववसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और व्यर्थहींतापशुकेनष्टहुए जा सापशुकीहिंसाहै तिस हिंसातैं कोई धर्मरूपअपूर्व उत्पन्नहोवैंहीं ॥ यातैं सापशुकीहिंसा कर्मरूपभीनहींहै ॥ और किसीकानामवालेपुरुषनैं सापशुकीहिंसाकरीनहीं ॥ यातैं साहिंसा विकर्मरूपभीनहींहै ॥ किंतु परिशेषतैं करीहुईभीसापशुकीहिंसा नहींकरेकेतुल्यहोवैहै ॥ यातैं साव्यर्थहिंसा अकर्मविषेही परिववसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार चौरपुरुषकाजोछोडिदेणाहै सो यद्यपि ताचौरपुरुषकेसहवर्त्तीपुरुषोंका कर्मरूपहीहै ॥ तथापि सोचौरपुरुषकाछोडना राजाका विकर्महीहै ॥ काहेतैं (स्तेनः प्रमुक्तो राजनिपापमार्ष्टी) इत्यादिकवचनोंविषे चौरपुरुषकाछोडना राजाकूं पापकीप्राप्तिकाहेतु कथाहै और सोईही चौरपुरुषकाछोडना निष्कामसंन्यासियोंका उपेक्षा विषयहोणेतैं अकर्मरूपहीहै ॥ इसप्रकार सत्यवचनकहणा यद्यपि कर्मरूपहै ॥ तथापि जिससत्यवचनतैं किसीप्राणीकीहिंसाहोवैहै ॥ सोसत्यवचनरूपकर्मभी विकर्मविषेही परिववसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार मिथ्यावचनकहणा यद्यपि विकर्मरूपहै ॥ तथापि जिसमिथ्यावचनकेकहणेतैं किसीप्राणीकीरक्षाहोवैहै ॥ तामिथ्यावचनरूपविकर्मका कर्मविषेही परिववसानहोवैहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष शास्त्रप्रमाणतैं कर्मविषेतौ अकर्मरूपताकूं तथाविकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ और अकर्मविषेतौ कर्मरूपताकूं तथाविकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ और विकर्मविषेतौ कर्मरूपताकूं तथाअकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ सो कार्यअकार्यकेविभागकूं जानणेहारापुरुष तिनकर्मादिकोंके वास्तवस्वरूपकेबोधवालाहोणेतैं बुद्धिमान् कथाजावैहैइति ॥ और पूर्व (किंकर्मकिमकर्मतिइस

कर्तृत्वअभिमान जबपर्यंत इसपुरुषकूं होवैहै ॥ तबपर्यंतहीं तेविहितकर्म तथानिषिद्धकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरेहैं ताकर्तृत्वअभिमानतैरहितहोइके केवल
 देहइंद्रियादिकोंकेधर्ममानिकैकरचेहुए तेकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ इसअर्थकूं (नमोऽर्जुन कर्मणि लिपिंति) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वहम कथनकरि
 आयेहैं ॥ हेअर्जुन ताकर्तृत्वअभिमानकेविद्यमानहुए मैतूणींहुआस्थितथा याप्रकारका उदासीनताकाअभिमानमात्ररूपजोकर्महै सोकर्मभी इसपुरुषकेबंधकाहींहेतु
 होवैहै ॥ जिसकारणतैं इसकर्तृत्वअभिमानपुरुषनैवस्तुका वास्तवस्वरूप जान्यानहीं ॥ यातैं हेअर्जुन कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंके पूर्वउक्त वास्तवस्वरूपकूंजानि
 करिकै तथा विकर्म अकर्म यादोनोंकापरित्यागकरिकै तथा कर्तृत्वअभिमानतैरहितहोइके तथाफलकीइच्छातैरहितहोइके तूं शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंहींकरइति ॥
 अथवा ॥ इसश्लोकका यहदूसराअर्थ करणा प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्यज्ञानकाजोविषयहोवै ताकानामकर्महै ॥ ऐसा यहदृश्यरूप तथाजडरूप प्रपंचहै ॥ और जोवस्तु
 प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्यज्ञानका विषयनहींहोवै तावस्तुकानाम अकर्महै ॥ ऐसा स्वप्रकाशरूप तथासर्वभ्रमकाअधिष्ठानरूप चैतन्यहै ॥ तहां जोपुरुष ताजगत्तरूपकर्म
 विषे आपणसत्तास्फुरणरूपकरिकैअनुस्यूत स्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्मकूं परमार्थदृष्टिकरिकैदेखेहै ॥ तथा जोपुरुष तास्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्म
 विषे इसमायामयदृश्यप्रपंचरूपकर्मकूं कल्पितदेखेहै ॥ अर्थात् द्रष्टाचैतन्यका तथादृश्यप्रपंचका कोईभीसंबंधसंभवतानहीं यातैं यहदृश्यप्रपंच ताद्रष्टाचैतन्यविषे
 वास्तवतैंहैनहीं याप्रकार जोपुरुष देखेहै ॥ तहांश्रुति (यस्तुसर्वाणिभूतानिआत्मन्येवानुपश्यति ॥ सर्वभूतेषुचात्मानंततोनेविजुगुप्सते ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष सर्व
 अधिष्ठानआत्माविषे कल्पितदेखेहै ॥ तथा तिनसर्वभूतोंविषे सत्तास्फुरणरूपकरिकै आत्माकूं अनुस्यूतदेखेहैं ॥ सोपरमार्थदर्शीपुरुषहीं सर्वतैंश्रेष्ठहैइति ॥ इसप्रकार
 चैतन्यआत्माका तथादृश्यजगत्का परस्पर अध्यासहुएभी जोपुरुष वास्तवतैं शुद्ध चैतन्यकूंहींदेखेहै ॥ सोविद्वान् पुरुषहीं सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे अत्यंतबुद्धिमान्
 है ॥ ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्न कोईभीपुरुष बुद्धिमान्नहींहै ॥ काहेतैं इसलोकविषेभी यथावत्वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुषहीं बुद्धिमान्कह्याजावैहै ॥ अथथावत्
 वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुष बुद्धिमान्कह्याजावैनहीं ॥ जैसे रज्जुकूं रज्जुरूपकरिकैजानणेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैहै और तिसीरज्जुकूं सर्परूपकरिकैजान
 णेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैनहीं ॥ तैसे सर्वकेअधिष्ठानपुरुषशुद्धचैतन्यकूं देखणेहारापुरुषहीं परमार्थदर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्है ॥ और अनात्मप्रपंचकूंदेखणेहारा
 अज्ञानीपुरुषतों मिथ्यादर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्होवैनहीं ॥ और सोपरमार्थदर्शीपुरुषहीं ताबुद्धिकेसाधनरूपयोगकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै
 एकाग्रचित्तवालाहै ॥ इसीकारणतैं सोईहींपुरुष ताअंतःकरणकीशुद्धिकेसाधनरूप सर्वकर्मोंका कर्ताहै ॥ इसप्रकार बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व कृत्स्नकर्मकृत्त्व यावास्त
 वतीनधर्मोंकरिकै सोपरमार्थदर्शीपुरुष स्तुतिकरचाजावैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोपरमार्थदर्शीपुरुष इसप्रकारके महान्पणेकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जु

विषेकर्मका दर्शन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ परोक्षदर्शनहोवैहै ॥ दूसरा अपरोक्षदर्शनहोवैहै ॥ तहां परोक्षदर्शनवालातौ ज्ञान कर्म दोनोकेसमुच्चयका अनुष्ठानकरताहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहै ॥ और दूसरा अपरोक्षदर्शनभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौ उपास्यसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ और दूसरा तत्त्वसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ तहां जिसवस्तुकीउपासनाकरिये ताकानाम उपास्यहै ॥ सोउपास्य दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ व्याकृतरूपहोवैहै ॥ और दूसरा अव्याकृतरूपहोवैहै ॥ ताउपास्यकेभेदकरिकै सोउपास्यविषयक साक्षात्कारभीदोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कार्यरूपसूत्रआत्माकानाम व्याकृतहै ॥ और सर्वजगतकेकारणकानाम अव्याकृतहै ॥ तहां तासूत्ररूपव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष देहाभिमानतैं रहितहोणेतैं योगशास्त्रविषे विदेह यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और ताकारणरूपअव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष प्रकृतिलय यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ यादोनोउपासनावांका ॥ (अन्यदेवाहुःसं भवात्) इत्यादिकश्रुतिनैं संभव असंभव यादोनोशब्दोंतैं कथनकरिकै समुच्चयविधानकरचाहै ताउपासनावालापुरुष युक्त यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसउपासक युक्तपुरुषकूंभी आगेवाकीकर्तव्य रहेहैं ॥ यातैं यहयुक्तपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् होइसकैनहीं ॥ किंतु जिसपुरुषकूं ताप्रपंचरूपकर्मकाबाधकरिकै कूटस्थआत्मारूपअकर्मका मुख्य दर्शन प्राप्तभयाहै ॥ सोतत्त्वसाक्षात्कारवान्पुरुषहीं कृतकृत्यहोणेतैं मुख्य कृत्स्नकर्मकृत् कह्याजावैहै ॥ इनसर्वोंविषे प्रथम ज्ञानकर्मकेसमुच्चयकाअनुष्ठानकरणेहारापुरुषतौ देहाभिमानीमनुष्योंविषेहीं बुद्धिमान्है ॥ यातैं अक्रांतदर्शीहोणेतैं सो पुरुष अकवीहीहै ॥ और व्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् तथाअव्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् यहमध्यकेदोनो क्रांतदर्शीहोणेतैं यद्यपि कवीहैं ॥ तथापि तत्त्ववस्तुविषे मूढहोणेतैं तेदोनो (कवयोप्यत्रमोहिताः) इसवचनकरिकैकथनकरेहैं ॥ इनदोनोको व्यवधानकरिकै अशुभ संसारतैंमुक्तिहोवैहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारवान् उत्तमपुरुषतौ जीवताहुआहीं ताअशुभसंसारतैंमुक्तहोवैहैं ॥ ईहां सूक्ष्मदर्शीपुरुषकानाम क्रांतदर्शीहै इति ॥ अथवा (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याश्लोकका यहअर्थकरणा ॥ पूर्व (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे श्रीभगवान्ने कर्म अकर्म दोनोकूं वक्तव्यरूपकरिकै कथनकरचाथा ॥ और (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यं) यावचनविषे तिनदोनोकूं बोद्धव्यरूपकरिकै कथनकरचाथा सोकर्मअकर्मकाबोध लक्षणतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं इसश्लोकविषे तिनदोनोका लक्षणकथनकरणा हीं उचितहै तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यावचनकरिकै जो अकर्मकरिकैविशेषितहोवैहै सोईहीं कर्महोवैहै अन्यकर्महोवैनहीं यहकर्मका लक्षण कथन कन्याहै ॥ और (अकर्मणिचकर्मयः) यावचनकरिकै जो कर्मकरिकै विशेषितहोवैहै सोईहीं अकर्महोवैहै यहअकर्मकालक्षण कथनकरचाहै ॥ इसव्याख्यान विषे श्लोककेअक्षरोंकाअर्थ याप्रकार करणा ॥ द्रव्यदेवतादिकसाधनोंसहितजेयज्ञादिकहैं तिनोंकानाम कर्महै और स्पंदतैरहितकूटस्थब्रह्मकानाम अकर्महै ॥

तहां जोपुरुष तासाधनसहितयज्ञादिकरूपअकर्मविषे कूटस्थब्रह्मरूपकर्मकूं देखेहै ॥ अर्थात् (अहंकृतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधम् ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहम
 गिरहंहुतम्) ॥ इसभगवतवचनउक्तीतिसें तिनयज्ञादिककर्मोंविषे तथातिनकर्मोंके द्रव्य देवतादिकअंगोंविषे जोपुरुष ब्रह्मदृष्टिकरेहै ॥ ताब्रह्मदृष्टितैविना जोकर्म
 करयाजावैहै ॥ सो कर्म व्यर्थचेष्टारूपहींहोवैहै ॥ याकारणतैं तिनकर्मोंकीगति अत्यंतगहनहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोअकर्म कर्मविषे आरोपणकरी
 ताहै ॥ सोअकर्म क्यावस्तुहै ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं (अकर्मणिचकर्मयः इति) हेअर्जुन जिसवस्तुविषे पुण्यपापरूपकर्म (पुण्योवैपुण्ये
 नकर्मणाभवतिपापःपापेन) इसश्रुतिकेबलतैं प्रतीतहोवैहैं ॥ तथा जिसवस्तुविषे तापुण्यपापकर्मका सुखदुःखरूपफल अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकेबलतैं प्रतीत
 होवैहै ॥ सोप्रत्यक्चेतनहीं अकर्मरूपहै ॥ और जैसे सर्पभावतैरहितरज्जुविषे सर्प अध्यस्तहोवैहै तैसे तास्पंदभावतैरहित चेतनरूपअकर्मविषे यहस्पंदरूपकर्म अध्यस्त
 है ॥ याप्रकार जोपुरुष ताअकर्मविषे कर्मकूं देखेहै ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे रज्जुविषेअध्यस्तसर्पकूं देखताहूआजोपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं यहसर्पनहींहै
 किंतु रज्जुहीहै याप्रकारके आप्तवक्तापुरुषकेवचनतैं जोकदाचित् विक्षेपकीप्रबलतातैं रज्जुत्वकाज्ञाननहींहोवैहै ॥ तौ सोआप्तवक्तापुरुष ताभांतपुरुषकेप्र
 ति इससर्पकूं तूं रज्जुदृष्टिकरिकै उपासनाकर याप्रकारका जबी उपदेशकरेहै ॥ तबी सोभांतपुरुष ताउपासनाकीदृढतातैं तासर्पकाविस्मरणकरिकै तारज्जु
 त्वकूंहीं साक्षात्कारकरेहै ॥ और जोपुरुष यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहीहैयाप्रकारकेवचनतैंहीं तारज्जुकेवास्तवस्वरूपकूंजानेहै ॥ तिसपुरुषकूं यहसर्प रज्जु
 हीहै याप्रकारकीवृत्तियोंका निरंतर प्रवाहरूपउपासना करनेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहींहै ॥ इसप्रकार कूटस्थब्रह्मरूपअकर्मविषे अध्यस्तजो कर्ताकि
 यादिक प्रपंचरूपकर्महै ॥ ताप्रपंचरूपकर्मकूं तत्त्वमासि इसवचनतैं बाधकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं ताकूटस्थब्रह्मरूपअकर्मका बोधहोईसकैहै ॥ और
 जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींहै ॥ सोपुरुष जबी ताकर्मकूं अकर्मदृष्टिकरिकैउपासनाकरेहै तबी ताउपासनाकीदृढतातैं सोपुरुषभीताकर्मकेतिरोधानकरि
 कै ताअकर्मकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरैइति ॥ इसप्रकारका विलक्षणव्याख्यानकरिकै ताटीकाकारने श्रीभाष्यकारभगवान्केआगे याप्रकारकीप्रार्थना
 करीहै ॥ तहांश्लोक (व्याख्यातुरपिमेनास्तिभाष्यकारेणतुल्यता ॥ गुहावद्योतिनोप्यस्तिकिंदीपस्यार्कतुल्यता) अर्थयह ॥ इसप्रकार विलक्षणव्याख्यानकूंभी
 करनेहाराजोमैंहूं ॥ तिसहमारेकूं भगवान्भाष्यकारोंकीतुल्यता होवैनहीं ॥ जैसे किसीगुहाविषेप्रकाशकरणेहारेभीदीपककूं सूर्यभगवान्कीतुल्यता होवैनहीं
 इति ॥ १८ ॥ * ॥ अब पूर्वउक्तपरमार्थदर्शीपुरुषकूं कर्तृत्व अभिमानकेअभावतैं कर्मोंकरिकैअलिप्तपणा श्रीभगवान् (यस्यसर्वे) इसवचनतैंआ
 दिलैके (ब्रह्मकर्मसमाधिना) इसवचनपर्यंत विस्तारतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः ॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंडितं बुधाः ॥ १९ ॥ यस्य । सर्वे । समा-
रंभाः । कामसंकल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं । तं । आहुः । पंडितं । बुधाः ॥ १९ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन जिस
पुरुषके सर्वे कर्म कामसंकल्पतैरहितहैं तथा ज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहुएहैंकर्मजिसके तिसपुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष पंडित
कहेहैं ॥ १९ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन पूर्वश्लोकविषे कथनकरचेहुए जिसपरमार्थदर्शीपुरुषके सर्व लौकिकवैदिककर्म कामतैरहितहुएहैं तथासंकल्पतैरहितहुएहैं ॥ इहां
स्वर्गादिकफलोंकीजातृष्णाहै ताकानाम कामहै ॥ और मैं कर्मकाकर्ताहूं याप्रकारका जो कर्तृत्वअभिमानहै ताकानामसंकल्पहै ताकामसंकल्प
दोनोंतैं जिसपुरुषके तेकर्मरहित हुएहैं ॥ अर्थात् जिसपुरुषके तेसर्वकर्म केवल लोकसंग्रहवासतै अथवा शरीरकेजीवनमात्रवासतै प्रारब्धकर्मकेवेगतैं
व्यर्थचेष्टारूपहुएहैं ॥ और पूर्वश्लोकविषे कथनकरचाजो प्रपंचरूपकर्मविषे सत्तास्फूर्तिरूपकरिकै चैतन्यब्रह्मरूपअकर्मकादर्शन तथा ताब्रह्मरूपअकर्मविषे
कल्पितरूपकरिकै प्रपंचरूपकर्मकादर्शन तादर्शनकानामज्ञानहै ॥ सोज्ञान प्रसिद्धअग्निकीन्यांई सर्वकर्मोंका दाहकहोणेतैं अग्निरूपहै ॥ ताज्ञानरूपअ-
ग्निकरिकै दग्धहोइगयेहैं शुभअशुभकर्मजिसके ॥ तहां श्रीव्याससूत्रं (तदधिगमउत्तरपूर्वाध्यायोरश्लेषविनाशौतदव्यपदेशात्) अर्थयह ॥ तापरमात्मा
देवकेसाक्षात्कारहुये तासाक्षात्कारतैंउत्तर करचेहुए पुण्यपापकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषकूं संबंधहीं नहींहोवैहै ॥ और तासाक्षात्कारतैंपूर्वकरचेहुए संचितकर्मोंका
ताज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशहोइजावैहै ॥ यहवार्ता बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे देखणेमेंआवैहैइति ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष वास्तवतैं पंडित कहेहैं ॥ इहांसर्वत्र
चैतन्यब्रह्ममात्रकूंविषयकरणेहारी जाअंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिकानाम पंडाहै ॥ सापंडानामावृत्ति जिसपुरुषके अंतःकरणविषेउत्पन्नहोवै तापुरुषकानाम पंडितहै ॥
और लोकविषेभी सम्यक्दर्शीपुरुषहीं पंडित कह्याजावैहै ॥ भांतपुरुष पंडित कह्याजावैनहीं ॥ सोसम्यक्दर्शीपणा विद्वान्पुरुषविषेहीहै ॥ अज्ञानीपुरुषोंविषे
सोसम्यक्दर्शीपणा हैनहीं ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुषहीं पंडितहै इति ॥ १९ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताज्ञानरूपअग्निकरिकै पूर्वआरंभकरचेहुए प्रारब्ध
कर्मतैंभिन्नकर्मोंकादाहहोवो ॥ तथा आगामिकर्मोंकीअनुत्पत्तिभीहोवो ॥ परंतु ताज्ञानकीउत्पत्तिकालविषे कन्याहुआजोकर्महै सोकर्म तिनपूर्वकर्मोंविषे तथा
उत्तरकर्मोंविषे अंतर्भूतहोइसकैनहीं ॥ यातैं सोकर्मतों ताज्ञानवान्पुरुषकूं अवश्यकरिकै फलकीप्राप्तिकरैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान्
ताशंकाकीनिवृत्तिकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) त्यक्त्वा कर्म फलासंगं नित्यतृप्तो निराश्रयः ॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तेऽपि नैव किंचित् करोति सः ॥ २० ॥ त्यक्त्वा । कर्म फलासंगं । नित्यतृप्तः । निराश्रयः । कर्मणि । अभिप्रवृत्तः । अपि । न । एव । किंचित् । करोति । सः ॥ २० ॥ इति पदच्छेदः ॥ हे अर्जुन कर्म फलके आसंगकं परित्याग करिकै नित्यतृप्तहुआ तथा निराश्रयहुआ कर्मविषे प्रवृत्तहुआ भी सोविद्वान्पुरुष किंचित् मात्रभी नहीं करेहै ॥ २० ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन नित्यनैमित्तिककर्मोंविषे जो मैइनकर्मोंका कर्ता हूं या प्रकारका कर्तृत्व अभिमानहैं ता कर्तृत्व अभिमानकानाम कर्म आसंगहै ॥ और तिनकर्मों के स्वर्गादिक फलोंविषे जा भोगकी अभिलाषाहै ता अभिलाषाकानाम फल आसंगहै ॥ ता कर्म आसंगका तथा फल आसंगका परित्याग करिकै अर्थात् अकर्ता अभोक्ता आत्माके यथार्थज्ञान करिकै ता आसंगका बाध करिकै जो पुरुष नित्यतृप्तहुआहै ॥ अर्थात् परमानंदस्वरूपके लाभ करिकै जो पुरुष सर्वपदार्थोंविषे निराकांक्षहुआहै ॥ तथा जो पुरुष निराश्रयहुआहै ॥ अर्थात् अद्वैत आत्मदर्शन करिकै जो पुरुष देह इंद्रियादिरूप आश्रयके अभिमानतैं रहितहुआहै ॥ ऐसा जीवन्मुक्तपुरुष समाधितैव्युत्थान दशाविषे प्रारब्धकर्मके वशतैं लोकदृष्टिकरिकै लौकिक वैदिककर्मोंके सांगोपांग अनुष्ठान करने वासतै प्रवृत्तहुआभी सोविद्वान्पुरुष आपणी परमार्थदृष्टिकरिकै किंचित् मात्रभी कर्मकूं करतानहीं ॥ जिस कारणतैं निष्क्रिय आत्माके साक्षात्कार करिकै ता विद्वान्पुरुषके ते सर्वकर्म बाधभावकूं प्राप्तहुएहैं ॥ ईहां ता विद्वान्पुरुषके (नित्यतृप्तः निराश्रयः) यह जो दो विशेषण कथन करेहैं ॥ ते दोनों विशेषण हेतुरूपहैं ॥ तहां फल आसंगकी निवृत्तिविषेतों नित्यतृप्तः यह हेतुहै ॥ और कर्म आसंगकी निवृत्तिविषे निराश्रयः यह हेतुहै ॥ ता करिकै यह दो अनुमान सिद्ध होवैहैं ॥ सोविद्वान्पुरुष फलकी अभिलाषारूप फल आसंगतैं रहितहै नित्यतृप्तहोनेतैं जो पुरुष ता फल आसंगतैं रहित नहीं होवैहै सो पुरुष नित्यतृप्तभी नहीं होवैहै जैसे अज्ञानी पुरुषहै इति ॥ और सोविद्वान्पुरुष कर्तृत्व अभिमानरूप कर्म आसंगतैं रहितहै निराश्रयहोनेतैं जो पुरुष ता कर्म आसंगतैं रहित नहीं होवैहै सो पुरुष निराश्रयभी नहीं होवैहै जैसे अज्ञानी पुरुषहै इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ तहां अत्यंत विक्षेपके हेतु ज्योतिष्टोमादिक कर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूं भी जबी ता सम्यक्ज्ञानके वशतैं बंधकी हेतुता होवैनहीं ॥ तबी शरीरकी स्थिति मात्रके हेतु तथा विक्षेपकी नहीं प्राप्ति करनेहारे जे भिक्षा अटनादिक यतिके कर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूं ता सम्यक्दर्शनके बलतैं बंधकी हेतुता नहींहै याके विषे क्या कहणाहै ॥ या प्रकारके कैमुतिकन्याय करिकै श्री भगवान् तिन भिक्षा अटनादिक कर्मोंविषे बंधकी हेतुताका अभाव कथन करेहै ॥

(मू० श्लो०) निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शरीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ २१ ॥ निराशीः । यतचित्ता

त्मा । त्यक्तसर्वपरिग्रहः । शरीरं । केवलं । कर्म । कुर्वन् । न । आप्नोति । किल्बिषं ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन जोपुरुष
तृष्णातै रहितहै तथा जीत्येहैचित्तआत्माजिसने तथात्यागकरेहैं सर्वपरिग्रहजिसने सोपुरुष कर्तृत्वअभिमानतैरहित शरीरकीस्थि
तिविषेउपयोगी भिक्षाअटनादिककर्मकूं करताहुआ किल्बिषकूं नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष स्वर्गादिकफलकीतृष्णातैरहितहै ॥ तथा जिसपुरुषनै अंतःकरणरूपचित्तकूं तथाबाह्यइंद्रियसहितदेहरूपआत्माकूं प्रत्याहारकरिकै
निग्रहकन्याहै ॥ जिसकारणतै सोपुरुष जितइंद्रियहै ॥ तिसकारणतैही सोपुरुष तृष्णातैरहितहोणेतै त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ईहां विषयभोगकेसाधनरूप जेधनादिक
उपकरणहैं तिनोंकानाम परिग्रहहै ॥ ते विषयभोगकेउपकरणरूप सर्वपरिग्रह त्यागकरेहैंजिसनै ताकानाम त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ऐसानिराशी तथायतचित्तात्मा
तथात्यक्तसर्वपरिग्रह संन्यासी प्रारब्धकर्मकेवशतै शारीरकर्मकूंकरताहुआ किल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां शरीरकीस्थितिमात्रहैप्रयोजनजिनोंका ऐसेजे कंथाकौ
पीनादिकोंकाग्रहणरूप तथा भिक्षाअटनादिरूप कायिक वाचिक मानस कर्महैं ॥ जेकर्म संन्यासीकेप्रति शास्त्रनै विधानकन्येहैं ॥ तिनकर्मोंकानाम शारीरकर्महै ॥
ऐसेशारीरकर्मोंकूं कर्तृत्वअभिमानतैरहितहोइकै अन्यारोपितकर्तृत्वरूपकरिकै करताहुआ सोसंन्यासी धर्मअधर्मकाफलभूतअनिष्टसंसाररूपकिल्बिषकूं प्राप्तहोवै
नहीं ॥ यद्यपि पापकूंहीं किल्बिषकहेहैं ॥ तथापि पापकीन्याई सकामपुण्यभी अनिष्टफलकाहींहेतुहोवैहै ॥ यातै सोपुण्यभी किल्बिषरूपहींहैं इति ॥ और किसी
टीकाविषे (शारीर) इसपदका यहअर्थकरचाहै ॥ शरीरकरिकै जोकर्म सिद्धहोवैहै ॥ ताकर्मकानाम शारीरहैइति ॥ सोइसव्याख्यानविषे (केवलंकर्मकुर्वन्)
इतनैवचनमात्रकहणेतै जोअर्थ सिद्धहोवैहै तिसतैअधिकअर्थ ताशारीरपदकेकहणेतै सिद्धहोवैनहीं ॥ यातै इतरकर्मका अव्यावर्त्तकहणेतै सोशारीरपद
व्यर्थहींहोवैगा ॥ और सोटीकाकार जोयहकहै ॥ वाचिक मानस कर्मकी व्यावृत्तिकरणेवासतै सोशारीरपदहै ॥ यातै सोशारीरपद व्यर्थनहींहै इति ॥
सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतै (शारीरकेवलंकर्म) यावचनविषेस्थितजोकर्मपदहै ॥ सोकर्मपद विहितकर्मकावाचकहै ॥ अथवा विहितनिषिद्धसाधारण
कर्ममात्रकावाचकहै ॥ तहां सोकर्मपद विहितकर्मका वाचकहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ तावचनका यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ शास्त्र
विहित शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ तहां विहितकर्मविषे किल्बिषकीहेतुता कहांभीप्राप्तहैनहीं ॥
और प्राप्तअर्थकाहीं प्रतिषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तअर्थका प्रतिषेध होवैनहीं ॥ यातै अप्राप्तअर्थका प्रतिषेधकहणेतै सोवचन अनर्थकहोवैगा ॥ और
शास्त्रविहित शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष किल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकहणेतै अर्थतैयहसिद्धहोवैहै ॥ शास्त्रविहित वाचिक मानस कर्मकूंकरताहुआ

सोपुरुष ताकिल्बिषकूं प्राप्त होवै है इति ॥ सोयहवार्ता शास्त्रतै विरुद्ध ही है ॥ और सोकर्मपद विहित निषिद्ध साधारण कर्म मात्र का वाचक है यह दूसरा पक्ष जो अंगीकार करिये ॥ तौ यह अर्थ सिद्ध होवैगा ॥ शास्त्र विहित तथानिषिद्ध शारीरकर्म कूं करता हुआ सो विद्वान् पुरुष ताकिल्बिषकूं प्राप्त होवै नहीं इति सोयह कहणा भी पूर्व की न्यां ई अत्यंत विरुद्ध ही है यातै यह शारीरपद का व्याख्यान अत्यंत असंगत है ॥ किंतु पूर्व उक्त व्याख्यान ही समीचीन है इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्लोक विषे त्याग कन्या है सर्व परिग्रह जिसनै ऐसे संन्यासी कूं शरीर की स्थिति मात्र विषे उपयोग कर्मों की कर्तव्यता कथन करी थी ॥ तहां अन्न वस्त्रादिकों तै विना शरीर की स्थिति ही संभवत न ही ॥ यातै याचना आदिक आपणे प्रयत्न करिके भी ता संन्यासी नै तिन अन्न वस्त्रादिकों का संपादन करणा या प्रकार के अर्थ के प्राप्त हुए ॥ श्री भगवान् ताके विषे नियम कूं कथन करे हैं ॥

(मू० श्लो०) यदृच्छालाभ संतुष्टो द्वंद्वं द्राती तो विमत्सरः ॥ समः सिद्धाव सिद्धौ च कृत्वापि न निवद्व्यते ॥ २२ ॥ यदृच्छालाभ संतुष्टः । द्वंद्वं द्रातीतः । विमत्सरः । समः । सिद्धौ । अस्मिद्धौ । च । कृत्वा । अपि । न । निवद्व्यते ॥ २२ ॥ इति पदच्छेदः ॥ हे अर्जुन जो पुरुष यदृच्छालाभ करिके संतुष्ट है तथा द्वंद्व धर्मों तै रहित है तथा मत्सर तै रहित है प्राप्ति विषे तथा अप्राप्ति विषे समान है सो पुरुष तिन भिक्षा अटनादिक कर्मों कूं करिके भी नहीं बंध कूं प्राप्त होवै है ॥ २२ ॥ इति पदार्थः ॥

॥ टीका ॥ संन्यासी के प्रति शास्त्र नै विधान कन्या जो शरीर की स्थिति मात्र विषे उपयोगी प्रयत्न है ॥ ता शास्त्र विहित प्रयत्न तै भिन्न जितने की याचना कृषि सेवा वाणिज्य आदिक प्रयत्न हैं जे प्रयत्न संन्यासी के प्रति शास्त्र नै निषेध कन्ये हैं ॥ तिन शास्त्र निषिद्ध प्रयत्नों कूं नहीं करणा या कानाम यदृच्छा है ॥ ता यदृच्छा करिके जो शास्त्र विहित अन्न वस्त्रादिक पदार्थों का लाभ है ॥ तालाभ करिके जो संन्यासी संतुष्ट है अर्थात् तिस तै अधिक पदार्थों की तृष्णा तै रहित है ॥ ता संन्यासी कानाम यदृच्छालाभ संतुष्ट है ॥ तहां शास्त्र विषे (भैक्ष्यं चरेत्) यावचन तै संन्यासी कूं भिक्षा का विधान करिके पश्चात् यह वचन कथन कन्या है (अयाचित मसंस्कृतमुपपन्नं यदृच्छया) अर्थ यह ॥ भिक्षा अटन करणे वास तै जो उद्यम हैं ता उद्यम तै पूर्व काल विषे ता संन्यासी के प्रति किसी श्रेष्ठ गृहस्थ नै निमंत्रण कन्या जो भिक्षा अन्न है ता भिक्षा अन्न कानाम अयाचित है ॥ ता अयाचित भिक्षा अन्न कूं भी सो संन्यासी ग्रहण करै ॥ और संकल्प तै विना ही पंच गृहों तै अथ वा सप्त गृहों तै माधु करी वृत्ति तै प्राप्त भया जो अन्न है ता अन्न का नाम असंस्कृत है ॥ ता असंस्कृत अन्न कूं भी सो संन्यासी ग्रहण करै ॥ और आपणे प्रयत्न तै विना ही ता संन्यासी के समीप भक्त जनों नै प्राप्त कर या जो पक्क अन्न है ता अन्न का नाम उपपन्न है ॥ ऐसे उपपन्न अन्न कूं भी सो संन्यासी ग्रहण करै इति ॥ यह वार्ता अन्य शास्त्र विषे भी कथन करी है ॥ तहां श्लोक (माधुकर मसंस्कृतं प्राक्प्रणीत मयाचितम् ॥ तात्कालिकोपपन्नं च भैक्ष्यं पंचविधं स्मृतमिति) ॥ अर्थ यह ॥ माधुकर १ प्राक्प्रणीत २ अयाचित

३ तात्कालिक ४ उपपन्न ५ यहपंचप्रकारका भिक्षाअन्न संन्यासीकेवास्तै होवैहै ॥ तहां मनकेसंकल्पका अविषयभूत जेतीनगृहहैं अथवा पंचगृहहैं अथवा सप्तगृहहैं तिनगृहोंतैं जोअन्न प्राप्तहोवैहै ताकानाम माधुकरहै ॥ १ ॥ और शयनकेउत्थानतैंपूर्व किसीभक्तजननैं करीजाभिक्षाअन्नकीप्रार्थनाहै सो भिक्षाअन्न प्राक्प्रणीत कह्याजावैहै ॥ २ ॥ और भिक्षाअन्नकेउद्यमतैंपूर्व किसीभक्तजननैं भिक्षाअन्नका निमंत्रणदिया सोभिक्षाअन्न अयाचित कह्याजावैहै ॥ ३ ॥ और भिक्षाकेअटनवासतैउद्यमकीयेतैंअनंतर जोकिसीभक्तजननैं भिक्षावासतैप्रार्थनाकरी सोभिक्षाअन्न तात्कालिककह्याजावैहै ॥ ४ ॥ और भिक्षाकेसमयविषे आपणेआसनऊपरिहीं कोईभक्तजन पकअन्नलेआया सोअन्न उपपन्न कह्याजावैहैइति ॥ ५ ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचन तासंन्यासीकेप्रति भिक्षाअन्नकेनियमकाविधानकुरतेहुए तिनयाचनादिकप्रयत्नोंकीनिवृत्तिकूं कथनकरेहैं यहवार्ता मनुभगवान्नेभी कथन करीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नचोत्पातनिमित्ताभ्यान्ननक्षत्रांगविद्यया ॥ नानुशासनवादाभ्यांभिक्षांलिप्सेतर्हिचित् ॥) अर्थयह ॥ यहसंन्यासी उत्पातकरिकै तथा निमित्तकरिकै तथा नक्षत्रविद्याकरिकै तथा अंगविद्याकरिकै तथा अनुशासनकरिकै तथावादकरिकै कदाचित्भी भिक्षाग्रहणकरणेकीइच्छा नहींकरै ईहां भूकंपादिकोंके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम उत्पातहै ॥ और चक्षुआदिकोंकीस्पंदरूपक्रियाके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम निमित्तहै ॥ और अश्विनीआदिकनक्षत्रोंके शुभअशुभ फलका कथनकरणा याकानाम नक्षत्रविद्याहै और हस्तादिकोंकीरेखाओंके शुभअशुभफलकाकथनकरणा याकानाम अंगविद्याहै ॥ और यहनीतिमार्ग इसप्रकारकाहै इसप्रकार तुमोंनैं इसनीतिमार्गविषेवर्तणा याप्रकारकेउपदेशकानाम अनुशासनहै ॥ और शास्त्रकेअर्थकाकथनकरणा याकानाम वादहै ॥ इत्यादिकउपायोंकरिकै संन्यासीने आपणेशरीरका निर्वाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु पूर्व उक्तीतिसे भिक्षाअन्नसे शरीरकानिर्वाहकरणाइति ॥ और (यतयोभिक्षार्थग्रामंप्रविशंति) इत्यादिकशास्त्रने विधानकरया जो संन्यासीका भिक्षाकेवासतै प्रयत्नहै ॥ सोशास्त्रविहितप्रयत्नतौ संन्यासीने अवश्यकरिकैकरणा ताशास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य अन्नवस्त्रादिकपदार्थभी शास्त्रकरिकैनियतहीहोवैहै ॥ यातैं शास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै जोसंन्यासीकूं शास्त्रविहितअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहै सोयदृच्छालाभरूपहीहै ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै तहांश्लोक (कौपीनयुगलंवासःकंथांशीतनिवारिणीं ॥ पादुकेचापिगृहीयात्कुर्यान्नान्यस्यसंग्रहं) ॥ अर्थयह ॥ यहसंन्यासी दोकौपीनोंकूं तथा ताकौपीनऊपरिबांधणेवासतै दोक टीवस्त्रोंकूं तथाशीतकीनिवृत्तिकरणेवास्ते कंबलादिरूपकंथाकूं तथापादुकाकूं ग्रहणकरै ॥ इसतैंअधिक द्रव्यादिकपदार्थोंकासंग्रह नहींकरैइति ॥ इसप्रकार दूसरेभी विधिनिषेधरूपवचन जानिलेगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनयाचनादिक आपणप्रयत्नतैं विना अन्नवस्त्रादिकोंकेअप्राप्तहुए शुद्धा शीत उष्ण आदिकोंक

रिक्केपीडितहुआ सोसंन्यासी किसप्रकार जीवैगा ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं (द्वंद्वतीतः इति) हेअर्जुन क्षुधापिपासा शीतउष्ण वातवर्षा इत्यादिकसर्वद्वंद्वधर्मोंते सोसंन्यासीरहितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ समाधिदशाविषेतौ सोब्रह्मवेत्तासंन्यासीकूं तेद्वंद्वधर्म स्फुरणहींहोवैनहीं ॥ और तासमाधितैव्युत्थानदशाविषे यद्यपि तेद्वंद्वधर्मस्फुरणहोवैहैं ॥ तथापि परमानंदस्वरूप अद्वितीयअकर्ताअभोक्ताआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तिनसर्वद्वंद्वधर्मोंका बाधहोइजावैहै ॥ यातैं तिनबाधितद्वंद्वधर्मोंकरिकै हन्यमानहुआभी सोसंन्यासी चित्तकेक्षोभतैरहितहींहोवैहैंइति ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी द्वंद्वधर्मोंतैरहितहै ॥ तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अन्यपुरुषकूं किसीवस्तुकी प्राप्तिविषे तथा आपणेकूं किसीवस्तुकीअप्राप्तिविषे विमत्सरहै ॥ ईहां परकीउत्कृष्टताके नसहनपूर्वक जोआपणी उत्कृष्टताकीइच्छाहै ताकानाम मत्सरहै ॥ तामत्सरतैंजोरहितहोवै ताकानाम विमत्सरहैइति ॥ और जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तामत्सरतैरहितहै ॥ तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषे तथाअप्राप्तिविषे समानहै ॥ अर्थात् तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषेतौ हर्षतैरहितहै और अप्राप्तिविषे विषादतैरहितहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तासंन्यासी आपणेअनुभवकरिकैतौ अकर्ताहींहै ॥ परंतु अन्यपुरुषोंनैं ताके विषे आरोपणकन्याजोकर्तृत्वहै ॥ ताआरोपितकर्तृत्वकरिकै सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगी भिक्षाअटनादिक शास्त्रविहितकर्मोंकूं करताहुआभी बंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं बंधकेहेतुरूपअज्ञानसहितकर्मोंका पूर्वउक्तज्ञानरूपआग्निकरिकै दाहहोइगयाहै इति ॥ २२ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं यहकह्याथा ॥ त्यागकरैहैं सर्वपरिग्रहजिसनैं तथायदृच्छालाभकरिकै संतोषकूंप्राप्तहुआहैचित्तजिसका ऐसाजोसंन्यासीहै ॥ तासंन्यासीके शरीरमात्रकीस्थितिविषेउपयोगी जोभिक्षाअटनादिककर्महैं ॥ तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंकूं करताहुआभी सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी बंधकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ याआप केकहणेतैं यहअर्थ प्रतीतहोवैहै ॥ गृहस्थआश्रमविषेस्थित जे जनकअजातशत्रुआदिक ब्रह्मवेत्ताहैं ॥ तिनजनकादिकोंके जेयज्ञादिककर्महैं ॥ तेयज्ञादिककर्म तिनजनकादिकोंके अवश्यकरिकै बंधकेहेतुहोवैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ताशंकाकीनिवृत्तिकरणेवास्तै श्रीभगवान् (त्यक्त्वाकर्मफलासंगम्) इत्यादिकवचनकरिकैकथनकरचेहुएअर्थकूं अब स्पष्टकरिकै कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) गतसंगस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः ॥ यज्ञायाचरतःकर्मसमग्रंप्रविलीयते ॥ २३ ॥ गंतसंगस्य । मुक्तस्य । ज्ञानावस्थितचेतसः । यज्ञाय । आचरतः । कर्म । समग्रं । प्रविलीयते ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन फलकीअभिलाषातैरहित

तथा अध्यासतैरहित तथा ज्ञानविषे स्थित है चित्तजिसका तथा यज्ञादिकों के संरक्षण वासतै आचरज करता हुआ जो विद्वान् पुरुष है ता विद्वान् पुरुष के तेय ज्ञादिक कर्म फल सहित नाश कूं प्राप्त होवै हैं ॥ २३ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जो पुरुष गत संग है अर्थात् स्वर्गादिक फलों की अभिलाषा तैरहित है ॥ तथा जो पुरुष मुक्त है अर्थात् मैं कर्ता हूं मैं भोक्ता हूं या प्रकार के कर्तृत्व भोक्तृत्व अध्यास तैरहित है ॥ तथा जो पुरुष ज्ञानावस्थित चेतसु है अर्थात् तत्त्वमसि आदिक महावाक्य तैरहित ज्ञान निर्विकल्पक रूप जीव ब्रह्म के अभेद ज्ञान विषे अवस्थित हुआ है चित्त जिसका ऐसा जो स्थित प्रज्ञ पुरुष है ॥ इहां (गत संगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थित चेतसः) यातीन पदों करिके ता विद्वान् पुरुष के तीन विशेषण कथन करे ॥ तहां पूर्व पूर्व विशेषण की सिद्धि विषे उत्तर उत्तर विशेषण हेतु रूप है ॥ ता करिके यह दो अनुमान सिद्ध होवै हैं ॥ सो विद्वान् पुरुष फल की अभिलाषा रूप संग तैरहित है कर्तृत्व भोक्तृत्व अध्यास तैरहित होने तै जो पुरुष ता संग तैरहित न ही होवै है सो पुरुष ता अध्यास तैरहित भी न ही होवै है जैसे अज्ञानी पुरुष है इति ॥ और सो विद्वान् पुरुष ता अध्यास तैरहित है स्थित प्रज्ञ होने तै जो पुरुष ता अध्यास तैरहित न ही होवै है सो पुरुष स्थित प्रज्ञ भी न ही होवै है जैसे अज्ञानी पुरुष है इति ॥ ऐसा ब्रह्म वेत्ता विद्वान् पुरुष भी प्रारब्ध कर्म के वश तै वेद विहित यज्ञ दानादिकों के संरक्षण करने वासतै अर्थात् ज्योतिष्ठादि किय ज्ञां विषे श्रेष्ठाचार ता करिके लोकों की प्रवृत्ति करावणे वासतै अथवा (यज्ञो वै विष्णुः) इत्यादिक वचनों विषे यज्ञशब्द करिके कथन करया जो विष्णु है ता विष्णु की प्रसन्नता वासतै यज्ञ दानादिक कर्मों कूं करे है ॥ परंतु ता विद्वान् पुरुष के तेय ज्ञ दानादिक सर्व कर्म समग्र नाश कूं प्राप्त होवै हैं ॥ इहां अग्र नाम फल का है ॥ ता फल रूप अग्र के सहित जो विद्यमान होवै ता का नाम समग्र है ॥ अर्थात् तत्त्व साक्षात्कार के बल तै अविद्या रूप कारण के निवृत्त हुए ता विद्वान् पुरुष के ते फल सहित कर्म नाश कूं ही प्राप्त होवै हैं ॥ तहां श्रुति ॥ (तद्यथेपीका तूलमग्नौ प्रोतं प्रदूयै तं वहास्य सर्वपाप्मानः प्रदूयते इति) ॥ अर्थ यह ॥ जैसे प्रज्वलित अग्नि विषे प्राप्त हुआ इषीका तूल नाश कूं प्राप्त होवै है ॥ तैसे इस ब्रह्म वेत्ता विद्वान् पुरुष के सर्व पुण्य पाप कर्म ज्ञान रूप अग्निके नाश कूं प्राप्त होवै हैं इति ॥ इसी अर्थ कूं श्री भगवान् आप ही (ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा) इस लोक विषे कथन करैंगे इति ॥ २३ ॥ * ॥ शंका ॥ हे भगवन् सो कियमाण कर्म फल कूं उत्पन्न करिके कैसे नाश कूं प्राप्त होवैंगे किंतु फल के दीये तै विना सो कर्म नाशन ही होवैंगे ॥ काहे तै (नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि) अर्थ यह ॥ फल के भोग तै विना यह शुभ अशुभ कर्म कल्प कोटी शत करिके भी नाश कूं प्राप्त होवै न ही इति ॥ इत्यादिक वचनों विषे फल के भोग तै विना तिन कर्मों के नाश का निषेध ही करया है ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए ॥ श्री भगवान् ब्रह्म साक्षात्कार करिके ता कर्म के कारण का नाश होने तै सा कर्म भी नाश कूं ही प्राप्त होवै है या प्रकार के उत्तर कूं कथन करे है

(मू० श्लो०) ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ॥ ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना ॥ २४ ॥ ब्रह्म । अर्पणं । ब्रह्म । हविः । ब्रह्माग्नौ ।

ब्रह्मणा । हुतं । ब्रह्म । एव तेन । गंतव्यं । ब्रह्म । कर्मसमाधिना ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अर्पणभी ब्रह्म हीहै तथा हविभी
ब्रह्महीहै तथा ब्रह्मरूप अग्निविषे ब्रह्मरूपकर्त्तानें जोहवनकरचाहै सोहवनभी ब्रह्महीहै तथा तिसंहवनकरिकै प्राप्तहोनेयोग्यस्वर्गा
दिकभी ब्रह्मरूपहीहै तथा कर्मविषेब्रह्मबुद्धिवालेपुरुषनैंभी परमानंदस्वरूपब्रह्मही गंतव्यहै ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ कर्ता कर्म करण संप्रदान अधिकरण यापंचप्रकारकेकारकोंकरिकै यज्ञादिरूपक्रिया सिद्धहोवैहै ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै जोघृता
दिरूपद्रव्यका त्यागकरचाहै ताकानाम यागहै ॥ सोयागहीं त्यागकरणे योग्यघृतादिकद्रव्यका अग्निविषेप्रक्षेपकरणेतें होम इसनामकरिकैकहाजावैहै ॥
तहां उद्दिश्यमानइंद्रादिकदेवतातों संप्रदानकारकरूपहैं ॥ और त्यागकरणेयोग्यजघृतादिकहैं तेघृतादिक हविष् याशब्दकरिकैकहेजावैहैं ॥ सोघृता
दिकरूपहविषुतों त्यागप्रक्षेपरूप धातुअर्थका साक्षात् कर्मरूपहै ॥ और ताकाफलभूत स्वर्गादिक व्यवहित भावनाकाकर्मरूपहैं ॥ और अग्निविषे ताघृतादिरूप हवि
ष्केप्रक्षेपविषे ताहविष्केधारकहोनेतें जुहुआदिक करणरूपहैं ॥ तथा इंद्रादिरूपअर्थकीप्रकाशताकरिकै (इंद्रायस्वाहा)यहमंत्रादिकभी करणरूपहीहै । इसप्रकारकारक
ज्ञापक याभेदकरिकै सोकरण दोप्रकारकाहोवैहैं ॥ इसप्रकार देवताकाउद्देशकरिकै घृतादिकद्रव्यकात्याग तथाताद्रव्यकाअग्निविषेप्रक्षेप यहदोप्रकारकीक्रिया
होवैहै ॥ तहां प्रथम त्यागरूपक्रियाविषेतों यजमानपुरुषहीं कर्त्ताहोवैहै ॥ और दूसरी प्रक्षेपरूपक्रियाविषेतों तायजमानपुरुषनैं दक्षिणादेकरिकैस्थापनकरचाहुआ
अध्वर्यु कर्त्ताहोवैहै ॥ और आहवनीयादिकअग्नि ताहविष्केप्रक्षेपका अधिकरणरूपहोवैहै ॥ इसप्रकार देशकालादिकभी सर्वक्रियावोंकेप्रति साधारण अधिकरण
रूपजानणे ॥ इसप्रकार जितनैंकि क्रियाकारकव्यवहारहैं तेसर्वव्यवहार ब्रह्मकेअज्ञानकरिकैकल्पितहैं ॥ यातें जैसे रज्जुकेअज्ञानकरिकैकल्पितजे सर्प दंड माला
आदिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंका तारज्जुहूपअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै बाधहोइजावैहै ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै तेक्रियाकारकादिकसर्वव्यवहार
बाधकंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातें ताविद्वानपुरुषविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै सोक्रियाकारकादिरूपव्यवहाराभास प्रतीतहुआभी दग्धपटकीन्यांई किसीफलकेउत्पन्नकरणेविषे
समर्थहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूं श्रीभगवान् इसश्लोककरिकैकथनकरेहै ॥ तथा साब्रह्मदृष्टिहीं सर्वयज्ञरूपहै याप्रकार ताब्रह्मदृष्टिकीस्तुतिकरेहैइति ॥ अब
सोप्रकार दिखावैहैं ॥ (अर्प्यतेअनेन तदर्पणं) अर्थयह जिसकरिकै घृतादिरूपहविष् अग्निविषे अर्पणकरचाजावैहै ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकी करण
व्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद जुहुआदिककरणोंका तथामंत्रादिककरणोंका वाचकहै ॥ और (अर्प्यतेअस्मैतदर्पणं) अर्थयह सोघृतादिरूपहविष् जिसकेतांई
अर्पणकरीयेहै ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद इंद्रादिकदेवतारूप संप्रदानका वाचकहै ॥ और (अर्प्यतेअस्मिन् तदर्पणं) अर्थ

यह सोघृतादिरूपहविष् अर्पणकरीयेजिसविषे ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणशब्द देशकालादिरूप अधिकरणका वाचकहै ॥ इस प्रकार एकहीं अर्पणपद करण संप्रदान अधिकरण यातीनकारकोंका वाचकहै ॥ यातैं जुहूमंत्रादिरूप करणकारक तथादेवतादिरूप संप्रदानकारक तथादेशकालादिरूप अधिकरणकारक यहसर्व ब्रह्मविषेकल्पितहोणेतैं ब्रह्मरूपहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक तारज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्नताकारिकै असत्हींहोवैहैं ॥ तैसे तेकारकभी अधिष्ठानब्रह्मतैं भिन्नताकारिकै असत्हींहैंइति ॥ और यजमानकर्तृक त्यागरूपक्रियाका तथाअध्वर्युकर्तृक प्रक्षेपरूपक्रियाका साक्षात्कर्मरूप जोघृतादिकहविष्है ॥ सोहविष्पूरूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और जिस आहवनीयादिकअग्निविषे सोघृतादिरूपहविष् पायाजावैहै ॥ सोअग्नि रूपअधिकरणकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और जिसयजमाननैं देवताकाउद्देशकरीकै सोघृतादिरूपहविष् त्यागकरिताहै ॥ तथा जिसअध्वर्युनैं सोघृतादिरूपहविष् अग्निविषे प्रक्षेपकरीताहै ॥ सोयजमानरूप कर्त्ताकारक तथाअध्वर्युरूप कर्त्ताकारक दोनों ब्रह्मरूपहींहैं ॥ और हुतं याशब्दकरिकै कथनकरयाजो त्यागक्रिया रूप तथाप्रक्षेपक्रियारूप हवनहै ॥ सोक्रियारूपहवनभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और तिसहवनरूपक्रियाकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजो स्वर्गादिरूप व्यवहितकर्महै ॥ सोस्वर्गादिरूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और इसप्रकार ताकर्मविषे ब्रह्मदाष्टिरूपसमाधिहैजिसकी ताकानाम कर्मसमाधिहै ॥ ऐसाजो कर्मोंकेअनुष्ठानकरणेहारा ब्रह्मवेत्ता पुरुषहै ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषनैंभी परमानंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्महीं गंतव्यहै ॥ ईहां (कर्मसमाधिना) यावचनतैंउत्तर (ब्रह्म गंतव्यं) यादोनोपदोंका पूर्ववाक्यतैं अनुषंगकरणाइति ॥ अथवा ॥ (अप्यर्तैअस्मैफलायतदर्पणं) ॥ अर्थयह ॥ जिसफलकीप्राप्तिवासतै सोहविष् अर्पणकरियेहै ॥ ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ताअर्पणपदकरिकैहीं तिनस्वर्गादिकफलोंकाभी ग्रहणकरणा (गंतव्यं) यापदकरिकै तिनस्वर्गादिकोंका ग्रहणकरणानहीं ॥ यातैं (ब्रह्मैवतेनगंतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना) यह श्लोककाउत्तरार्द्ध ज्ञानकेफलकथनकरणेवासतैहींहै ॥ यहहींव्याख्यान समीचीनहै ॥ तहां इसद्वितीयव्याख्यानविषे (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यहएकहीं समस्त पदहै ॥ अथवा (ब्रह्मैवतेन) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ॥ ताब्रह्मपदकातों पूर्व (हुतं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ और (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ॥ ताब्रह्मपदकातों (गंतव्यं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ यातैं (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यहदोनोपद भिन्नभिन्नहींहै ॥ इसद्वितीयव्याख्यानविषे पूर्वव्याख्यानकीन्यांई (ब्रह्म गंतव्यं) यादोनोपदोंकेअनुषंगरूपक्लेशकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ईहां (ब्रह्मैवतेनगंतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना) यावचनकरिकै श्रीभगवान् ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं जोब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ सो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै ब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ कोई स्वर्गादिकोंकी न्यांई भिन्नरूपकरिकै अथवा स्वामीसेवकभावकरिकै साप्राप्ति कथनकरीनहीं ॥ तहांश्रुति (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीति) ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूं

जाननेहारापुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहैइति ॥ इसीकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष स्वर्गादिकतुच्छफलोंकंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं ताब्रह्मवेत्तापुरुषके ब्रह्मविद्याकरिके अविद्याकृत सर्वकारकव्यवहार नाशकंप्राप्तहूएहैइति ॥ यंहोवैत्ता वार्तिकग्रंथकेकर्ता सुरेश्वरचार्यनैभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (कारकव्यवहारेहिशुद्धवस्तुनवीक्ष्यते ॥ शुद्धवस्तुनिसिद्धेचकारकव्यापृतिः कृतः) ॥ अर्थयह ॥ कर्ताकर्मादिककारकोंकेव्यवहारहुए आत्मारूपशुद्धवस्तु देख्याजावैनहीं ॥ और ताशुद्धवस्तुकेसाक्षात्कारहुए तिनकारकोंकाव्यापार होवैनहींइति ॥ और किसीटीकाकारनैतों इसश्लोकका यहव्याख्यानकरचाहै ॥ जैसे नाम वाक् मन इत्यादिकोंकेस्वरूपका नबाधकारिके तिननामादिकोंविषे श्रुतिनैब्रह्मदृष्टिका विधानकरचाहै तैसे ईहां श्रीभगवान्नैभी अर्पणादिककारकोंकेस्वरूपका नबाधकारिके तिनअर्पणादिककारकोंविषे ब्रह्मदृष्टिका विधानकरचाहैइति ॥ सोइसव्याख्यानकूं श्रीभाष्यकारोंनै तात्पर्यकेनिश्चयके उपक्रमादिकोंके विरोधकारिके तथाब्रह्मविद्याकेप्रकरणविषे संपत्उपासनामात्रकीप्राप्तिहीनहींहै इत्यादिकियुक्तियोंकरिके विस्तारतैंखंडनकरचाहैइति ॥ २४ ॥ * ॥ तहांपूर्व (ब्रह्मार्पणं) यामंत्ररूपश्लोकविषे सर्वत्रब्रह्मदृष्टिरूपसम्यक्दर्शनकीयज्ञरूपकरिकेस्तुति कथनकरी ॥ अब तिसीसम्यक्दर्शनकी पुनःस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान् दूसरेयज्ञोंकाभी कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) दैवमेवापरेयज्ञंयोगिनःपर्युपासते ॥ ब्रह्माग्रावपरेयज्ञंयज्ञेनैवोपजुहति ॥ २५ ॥ दैवम् । एवं । अपरे । यज्ञं । योगिनः ।

पर्युपासते । ब्रह्माग्नौ । अपरे । यज्ञं । यज्ञेन । एवं । उपजुहति ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दूसरे कर्मीपुरुषतों दैव यज्ञकूं हीं

सर्वदा करेहैं और दूसरेतत्त्ववेत्तापुरुषतों ब्रह्मरूपअग्निविषे आत्माकूं आत्मारूपकरिके हीं होमकरेहैं ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इंद्र अग्नि वायु आदिकदेवता जिसकर्मकरिके संतुष्टकन्येजावैहै ताकानाम दैवहै ॥ ऐसाजो दर्शपूर्णमास ज्योतिष्टोम आदिकयज्ञहै तादैवयज्ञकूंहीं दूसरेकर्मीपुरुष सर्वदाकरेहैं ॥ तेकर्मीपुरुष ज्ञानयज्ञकूं कदाचित्भी करनेनहींइति ॥ इसप्रकार कर्मयज्ञकूंकथनकरिके अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताकर्मयज्ञकाफलभूत जोज्ञानयज्ञहै ताज्ञानयज्ञकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (ब्रह्माग्नौइति) हेअर्जुन सत्य ज्ञान अनंत आनंदरूप तथासर्वविशेषोंतेंरहित ऐसाजो तें त्वदार्थरूपब्रह्महै ॥ सोब्रह्महीं ज्ञातहुआ सर्वकर्मोंकादाहकहोणेतैं अग्निकीन्याई अग्निरूपहै ॥ ऐसे तत्त्वदार्थब्रह्मरूपअग्निविषे दूसरेतत्त्ववेत्तासंन्यासी त्वंत्त्वदार्थरूपप्रत्यक्आत्माकूं अभिन्नरूपकरिके होमकरेहैं ॥ अर्थात् तत्त्वंपदार्थरूपप्रत्यक्आत्माकूं ताब्रह्मरूपकरिकेदेखेहैं ॥ ईहां (यज्ञेनैव) यावचनविषेस्थित जो एव यह शब्दहै ॥ सोएवकार जावब्रह्मकेभेदकीनिवृत्तिकरणेवासतेहै ॥ ईहां जावब्रह्मके अभेदज्ञानकूं यज्ञरूपतैसंपादनकरिके (श्रेयान्द्रव्यमयायज्ञाज्ज्ञानयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरि

के ताज्ञानयज्ञकी स्तुतिकरणेवास्तै ताज्ञानयज्ञकेसाधनरूपयज्ञोंकेमध्यविषे श्रीभगवान्नें सोज्ञानयज्ञ कथनक-याहै इति ॥ २५ ॥ * ॥ ॥ इतनैकहणेकरिकै श्रीभगवान्नें मुख्ययज्ञ तथागौणयज्ञ यहदोयज्ञ कथनकरे ॥ अब वेदाविषे जितनैकोश्रेयकेसाधन कथनकरेहैं ॥ तिनसर्व साधनोंकुं श्रीभगवान् यज्ञरूपकरिकै प्रतिपादनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्येसंयमाग्निषु जुहति ॥ शब्दादीन्विषयानन्येन्द्रियाग्निषु जुहति ॥ २६ ॥ श्रोत्रादीनि । इन्द्रियाणि । अन्ये । संयमाग्निषु । जुहति । शब्दादीन् । विषयान् । अन्ये । इन्द्रियाग्निषु । जुहति ॥ (इति प०) हेअर्जुन दूसरेपुरुषतों श्रोत्रादिक इन्द्रियोंकुं संयमरूपअग्नियोंविषे होमकरेहैं तथाकईअन्यपुरुषतों शब्दादिक विषयोंकुं श्रोत्रादिकइन्द्रियरूपअग्नियोंविषे होमकरेहैं ॥ ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यम नियम आसन प्राणायाम याच्यारोंकुं सिद्धकरिकै केवलप्रत्याहारपरायण जेकेईकअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषतों श्रोत्रादिकपंच ज्ञानइन्द्रियोंकुं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तकरिकै संयमरूपअग्निविषे होमकरेहैं ॥ इहां (त्रयमेकत्रसंयमः) इसपतंजलिभगवान्केसूत्रविषे एकवस्तुकुं विषयकरणेहारे धारणाध्यान समाधि यातीनोंकुं संयम याशब्दकरिकैकथनक-याहै ॥ तहां हृदयकमलादिकस्थानोंविषे चिरकालपर्यंत जोमनकास्थापनकरणाहै ताकानाम धारणाहै ॥ इसप्रकार एकस्थानविषेधारणक-याजोचितहै ॥ ताचित्तका उत्तरउत्तर विजातीयवृत्तियोंकृतव्यवधानसहित जोभगवत्आकार सजातीयवृत्ति योंकाप्रवाहहै ताकानाम ध्यानहै ॥ और ताचित्तका विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैरहित केवल ताभगवत्आकार सजातीयवृत्तियोंकाजोप्रवाहहै ताकानाम समाधिहै ॥ सोसमाधिभी चित्तकीभूमिकावोंकेभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतों संप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै ॥ और दूसरा असंप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै ॥ तहां क्षिप्त मूढ विक्षिप्त एकाग्र विरुद्ध यहपंचभूमिका चित्तकीहोवैहैं ॥ भूमिकानाम अवस्थाविशेषकाहै ॥ तहां रागद्वेषादिकोंकेवशतैं विषयोंविषे अत्यन्तअभिनिवेशवाला जोचित्त है सोचित्त क्षिप्त कहाजावैहै ॥ और निद्रातंद्रादिकोंकरिकै ग्रस्तहुआजोचित्तहै सोचित्त मूढ कहाजावैहै ॥ और सर्वकालविषे विषयोंविषे आसक्तहुआभी जोचित्त कदाचित् दैवयोगतैं ध्याननिष्ठभीहोवैहै सोचित्त ताक्षिप्ततैं श्रेष्ठहोणेतैं विक्षिप्त कहाजावैहै ॥ तहां क्षिप्तचित्तविषे तथामूढचित्तविषे तासमाधिहोणेकी शंकाहीनहीं होवैहै और विक्षिप्तचित्तविषेतों कदाचित्कसमाधि होवैभीहै ॥ परंतु विक्षेपकीप्रधानतातैं सोसमाधि योगपक्षविषे वर्त्ततानहीं ॥ किंतु जैसे महान्पवनकरिकैविक्षिप्तहुआ दीपक आपेहीं नाशहोइजावैहै ॥ तैसे सोकादाचित्कसमाधिभी आपेही नाशकंप्राप्तहोवैहै ॥

और ताचित्तविषे एकवस्तुकुं विषयकरणेहारी धारावाहिकवृत्तियोंका जोसामर्थ्यहै ताकानाम एकाग्रहै ॥ तहां सत्वगुणकीवृद्धिकरि कै तमोगुणकृत तंद्रादिरूपलयके अभावहुए आत्माकारवृत्तिहोवैहै ॥ साआत्माकारवृत्ति रजोगुणकृतचंचलतारूपविक्षेपकेअभावतैं एकवस्तुविषयकहींहोवैहै ॥ इसप्रकारशुद्धसत्वगुणकेहुएही सोचित्त एकाग्रहोवैहै ताएकाग्रचित्तविषेही सोसंप्रज्ञातनामासमाधिहोवैहै ॥ तासंप्रज्ञातनामासमाधिविषे सा ध्येयाकारवृत्तिभी प्रतीतहोवैहै ॥ और जिसकालविषे साध्येया कारवृत्तिभी निरोधकंप्राप्तहोवैहैं तिसकालविषे सोचित्त निरुद्ध कह्याजावैहै ॥ तानिरुद्धचित्तविषे असंप्रज्ञातनामासमाधिहोवैहै ॥ यहहींअसंप्रज्ञातसमाधि सर्व सुखोंतैंविरक्तयोगीपुरुषका दृढभूमिकारूपहुआ धर्ममेव यानामकरि कै कह्याजावैहैइति ॥ इसप्रकार अनेकरूपकरि कै तिनधारणादिकसंयमोंकाभेदहै ॥ यातैं (संयमाग्निषु) यावचनविषे श्रीभगवान् नैं बहुवचनकथनकरचाहै ॥ ऐसेसंयमरूपअग्नियोंविषे केईकअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकासिद्धिवासतै श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैं प्रत्याहरणकरेहैं ॥ तहां आपणेआपणेविषयोंतैं निग्रहकूं प्राप्तहुए तेइंद्रिय चित्तरूपहीहोवैहैं ॥ इसीकूंही शास्त्रविषे प्रत्याहार यानामकरि कै कथनकरेहैं ॥ तिसप्रत्याहारतैअनंतर विक्षेपके अभावतैं सोचित्त तिन धारणादिकोंकूं संपादनकरेहै ॥ इतनैकहणेकरि कै प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि यहचारिअंग योगके कथनकरचे ॥ ताकरि कै समाधिअवस्थाविषे सर्वइंद्रियजन्यवृत्तियोंके निरोधकूं यज्ञरूपकरि कै वर्णनकरचा ॥ अब तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे रागद्वेषतैरहितहोइकै जोशास्त्रविहितविषयोंकाभोगहै सोभोगभी एकयज्ञरूपहीहै इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (शब्दादीन्विषयानन्येइंद्रियाग्निषु जुह्वतीति) हेअर्जुन तासमाधितैंव्युत्थानकूं प्राप्तहुए जेयोगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुष रागद्वेषतैरहित होकै ताव्युत्थानकालविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरि कै शास्त्रतैं अविरुद्धशब्दादिकविषयोंकूं ग्रहणकरेहैं ॥ यहहीं तिनशब्दादिकविषयोंका श्रोत्रादिकइंद्रियों विषेहोमहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे पातंजलमतकेअनुसारकरि कै लयपूर्वकसमाधिरूप तथातासमाधितैंव्युत्थानदशारूप यादोनोंयज्ञोंकूं कथनकरचा ॥ अब इसश्लोकविषे ब्रह्मवादीपुरुषोंके मतकेअनुसारकरि कै सर्वसाधनोंकाफलरूप तथाकारणकेनाशकरि कै व्युत्थानतैरहित ऐसाजोनिरोधपूर्वकसमाधिहै ॥ तासमाधिरूपयज्ञांतरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ॥ आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥ सर्वाणि । इंद्रियैककर्माणि । प्राणकर्माणि । च । अपरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ । जुह्वति । ज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥ (इति पदच्छेदः) हेअर्जुन दूसरेकेईअधिकारीतों सर्व इंद्रियोंकेकर्मोंकूं तथा प्राणोंकेसर्वकर्मोंकूं ज्ञान करि कै दीपित आत्मसंयमयोगरूपअग्निविषे होमकरेहै ॥ २७ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ तहां समाधि दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ लयपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ और दूसरा बाधपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ तहां (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रविषे श्रीग्यासभगवान् नैं कारणतैं भिन्नकरिकै कार्यका असत्त्व कथनकन्याहै ॥ यातैं पंचीकृतपंचभूतोंका कार्यजो व्यष्टिरूपहै सो व्यष्टिरूप समष्टिरूपविराट्का कार्यहोणेतैं ताविराटरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सो समष्टिरूपपंचीकृतपंचभूतात्मककार्यभी अपंचीकृतपंचमहाभूतोंका कार्यरूपहोणेतैं तिनअपंचीकृतपंचमहाभूतरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और तिनपंचभूतोंविषेभी शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंवाली जापृथिवीहै ॥ सापृथिवी शब्द स्पर्श रूप रस या चारिगुणोंवाले जलका कार्यहोणेतैं ताजलरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सो चारिगुणोंवाला जलभी शब्द स्पर्श रूप या तीनगुणोंवाले तेजका कार्यहोणेतैं तातेजरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सो तीनगुणोंवाला तेजभी शब्द स्पर्श या दोगुणोंवाले वायुका कार्यहोणेतैं तावायुरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सो दोगुणोंवाला वायुभी एकशब्दगुणवाले आकाशका कार्यहोणेतैं ताआकाशरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सो शब्दगुणवाला आकाशभी (बहुस्यां) या श्रुतिनैं कथनकन्याजो परमेश्वरका संकल्परूपअहंकारहै ताअहंकारका कार्यहोणेतैं ताअहंकाररूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सो संकल्परूपअहंकारभी (तदैक्षत) या श्रुतिकरिकै कथनकन्याजो मायाई क्षणरूप महत्तत्त्वहै तामहत्तत्त्वका कार्यहोणेतैं तामहत्तत्त्वरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोई क्षणरूपमहत्तत्त्वभी मायाका परिणामहोणेतैं तामाया रूपकारणतैं भिन्न नहींहैं ॥ और सो माया रूपकारणभी जडरूपहोणेतैं चैतन्यरूपब्रह्मविषे अध्यस्तहै ॥ यातैं ताचैतन्यब्रह्मतैं सो माया रूपकारण भिन्ननहींहै ॥ इसप्रकार निरंतर चिंतनकरिकै कार्यकारणरूपसर्वप्रपंचके विद्यमानहुएभी जो चैतन्यब्रह्ममात्रविषयक समाधिहै ॥ सो समाधि लयपूर्वक समाधि कह्या जावैहै ॥ तालयपूर्वक समाधिविषे ता अधिकारी पुरुषकूं तत्त्वमसि आदिक वेदांत महावाक्योंके अर्थका ज्ञानहैनहीं ॥ यातैं कार्यसहित अविद्याकानाशहुआनहीं ॥ किंतु साअविद्या तालयचिंतनकाल विषे विद्यमानहै ॥ ताअविद्याके विद्यमानहुए ताअविद्यारूपकारणतैं पुनः संसाररूपकार्यकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं यह लयपूर्वक समाधि सुषुप्तिकीन्यांई सबीजसमाधिहै ॥ मुख्य निर्बीज समाधिहैनहीं ॥ और जिसकालविषे तत्त्वमसि आदिक महावाक्यजन्य साक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकी निवृत्तिहोवैहै तथा उत्पत्तिक्रमतैं ताअविद्याके महत्तत्त्वादिक सर्वकार्योंकी निवृत्तिहोवैहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै एकवार नाशकूं प्राप्तहुई साअनादिअविद्या पुनः कदाचित्भी उत्थानकूं प्राप्तहोवैनहीं तथा ताअविद्याका कार्यभी पुनः उत्थानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तिसकालविषे ताविद्वान्पुरुषकूं मुख्य निर्बीज बाधपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ सो बाधपूर्वक समाधिहीं इसश्लोककरिकै श्रीभगवानने कथनकरिताहै ॥ सो प्रकार दिखावैहैं ॥ तहां अंतर बाह्य या भेदकरिकै इंद्रिय दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यह पंचज्ञान इंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यह पंचकर्म इंद्रिय यह दश इंद्रियतों बाह्य इंद्रिय कहे जावैहै ॥ और मन बुद्धि यह दोनों अंतर

इंद्रिय कहे जावै हैं ॥ तिन बाह्य अंतर सर्व इंद्रियों के जितने की स्थूल रूप तथा संस्कार रूप कर्म हैं ॥ तहां शब्द का ग्रहण श्रोत्र इंद्रिय का कर्म है ॥ और स्पर्श का ग्रहण त्व
 क् इंद्रिय का कर्म है ॥ और रूप का दर्शन चक्षु इंद्रिय का कर्म है ॥ और रस का ग्रहण रसन इंद्रिय का कर्म है ॥ और गंध का ग्रहण घ्राण इंद्रिय का कर्म है ॥ और वचन का उच्चा
 रण वाक् इंद्रिय का कर्म है ॥ और वस्तु का ग्रहण पाणि इंद्रिय का कर्म है ॥ और गमन आगमन पाद इंद्रिय का कर्म है ॥ और विषयानंद उपस्थ इंद्रिय का कर्म है ॥ और
 मल का परित्याग पायु इंद्रिय का कर्म है ॥ और संकल्प मन का कर्म है ॥ और निश्चय बुद्धि का कर्म है इति ॥ इस प्रकार प्राण अपान व्यान उदान समान
 पांच प्राणों के जितने की कर्म हैं ॥ तहां बहिर्गमन प्राण का कर्म है ॥ और अधोगमन अपान का कर्म है ॥ और हस्त पादादिक अंगों का आकुंचन प्रसारण आदिक
 व्यान का कर्म है ॥ और भोजन करने हेतु अन्न जल का समान करणा समान का कर्म है ॥ और ऊर्ध्वगमन उदान का कर्म है ॥ इतने करिके पंचज्ञान इंद्रिय पंचकर्म इंद्रिय
 पंचप्राण दो मन बुद्धि या सप्तदश तत्त्वों का समुदायरूप लिंग शरीर कथन करया ॥ सो सूक्ष्म शरीर भी ईहां सूक्ष्म भूतों का समष्टिरूप हिरण्यगर्भ हीं विवक्षित है ॥ इसी
 अर्थ के जनावणे वासतैं श्री भगवान् नैं तिन इंद्रियों के कर्मों का तथा प्राणों के कर्मों का (सर्वाणि) यह विशेषण कथन करया है ॥ ऐसे सप्तदश तत्त्व रूप लिंग शरीर कूं अन्य के ई
 विद्वान् पुरुष आत्म संयम योगाग्नि विषे होम करे हैं ॥ तहां आत्मा कूं विषय करणे हारा जो धारणा ध्यान संप्रज्ञा तत्समाधिरूप संयम है ता संयम के परिपाक हेतु तैं सिद्ध भया जो
 निरोध समाधिरूप योग है ता का नाम आत्म संयम योग है ॥ इसी निरोध समाधिरूप योग कूं पतंजलि भगवान् भी योग सूत्रों विषे कथन करता भया है ॥ तहां सूत्रं ॥ (व्युत्था
 न निरोध संस्कार यो रभिभव प्रादुर्भावौ निरोध क्षणचित्तान्वयो निरोध परिणामः इति) ॥ अर्थ यह ॥ क्षिप्त मूढ विक्षिप्त या तीन भूमिका वों का नाम व्युत्थान है ॥ ता व्युत्था
 न के संस्कार समाधिके विरोधी होवै हैं ॥ ते विरोध संस्कार तौ योगी पुरुष के प्रयत्न करिके दिन दिन विषे तथा क्षण क्षण विषे अभिभव कूं प्राप्त होवै हैं ॥ और तिन व्युत्थान
 संस्कारों के विरोधी रूप जे निरोध के संस्कार हैं ते निरोध के संस्कार दिन दिन विषे तथा क्षण क्षण विषे प्रादुर्भाव कूं प्राप्त होवै हैं ॥ तिस तैं अनंतर निरोध मात्र क्षण के साथि जो
 चित्त का अन्वय है सो निरोध परिणाम कह्या जावै है इति ॥ इसी निरोध समाधिके फल कूं भी सो पतंजलि भगवान् योग सूत्रों विषे कथन करता भया है ॥ तहां सूत्रं ॥ (तस्य
 प्रशांत वाहिता संस्कारादिति) ॥ अर्थ यह ॥ तानिरोध परिणाम तैं अनंतर निरोध संस्कारों की दृढता करिके तिस चित्त कूं प्रशांत वाहिता होवै है ॥ अर्थात् तमोगुण
 रजोगुण या दोनों गुणों के नाश हेतु तैं अनंतर लय विशेष दोष तैरहित पणे करिके शुद्ध सत्त्वरूप जो चित्त है सो चित्त प्रशांत कह्या जावै है ॥ और पूर्व पूर्व ता प्रथम के संस्कारों की
 बाहुल्यता करिके जो तिस तैं भी अधिकता है ता कूं प्रशांत वाहिता कहे हैं इति ॥ तानिरोध समाधिके कारण कूं भी सो पतंजलि भगवान् योग सूत्रों विषे कथन करता भया है ॥
 तहां सूत्रं ॥ (विराम प्रत्ययाभ्यास पूर्वः संस्कार शेषो न्यः इति) ॥ अर्थ यह ॥ वृत्तिकी उपराम तारूप जो विराम है ता विराम का जो प्रत्यय है क्या कारण है अर्थात्

तावृत्तिकी उपरामता वासतैं जो पुरुष का प्रयत्न है ता पुरुष प्रयत्न का जो पुनः पुनः संपादन रूप अभ्यास है ॥ ता अभ्यास करिके जन्य संप्रज्ञात समाधितैं विलक्षण असंप्रज्ञात समाधि होवै है इति ॥ इस प्रकार का निरोध समाधिरूप जो आत्मसंयम योग है सोई हीं अग्निरूप है ॥ कैसा है सो आत्मसंयम योग रूप अग्नि ॥ ज्ञान करिके दीपित है ॥ अर्थात् वेदांत वाक्य करिके जन्य जो ब्रह्मात्म ऐक्य साक्षात्कार है ता साक्षात्कार करिके कार्य सहित अविद्या के नाश द्वारा अत्यंत उज्ज्वलित है ॥ ऐसे ज्ञान करिके दीपित आत्मसंयम योगाग्निरूप बाध पूर्वक समाधिविषे अन्य के ई विद्वान् पुरुष समष्टि लिंग शरीर कूं होम करे हैं ॥ अर्थात् ता समाधिविषे तालिंश शरीर कूं प्रविष्टा पन करे हैं इति ॥ ईहां (सर्वाणि आत्मज्ञान दीपिते) यातीन विशेषणों के कहने करिके तथा (अग्नौ) या एक वचन के कहने करिके पूर्व कथन करेहु एय जतैं इस यज्ञ विषे विलक्षणता सूचन करी ॥ यातैं ईहां पुन रुक्ति दोष की प्राप्ति होवै न हीं इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (देवमेवापरे यज्ञम्) प्रत्यादिक तीन श्लोकों करिके श्री भगवान् नैं पंच यज्ञों कूं कथन करचा ॥ अब इस एक हीं श्लोक करिके श्री भगवान् षट् यज्ञों कूं कथन करे है ॥

(मू० श्लो०) द्रव्य यज्ञास्तपो यज्ञा योग यज्ञास्तथापरे ॥ स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाश्च यतयः संशित व्रताः ॥ २८ ॥ द्रव्य यज्ञाः । तपो यज्ञाः । योग यज्ञाः । तथा । अपरे । स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाः । च । यतयः । संशित व्रताः ॥ २८ ॥ (इति पदच्छे०) हे अर्जुन केईक अधिकारी पुरुष द्रव्य का त्याग रूप यज्ञ कूं करे है तथा केईक अधिकारी पुरुष तप रूप यज्ञ कूं करे है तथा केईक अधिकारी पुरुष योग रूप यज्ञ कूं करे है तथा केईक अधिकारी पुरुष वेदाभ्यास रूप यज्ञ कूं तथा ज्ञान रूप यज्ञ कूं करे हैं तथा केईक यत्नशील पुरुष अत्यंत दृढ व्रत रूप यज्ञ कूं करे हैं ॥ २८ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन शास्त्र की विधि प्रमाण जो द्रव्य का त्याग है सो द्रव्य का त्याग हीं है यज्ञ रूप जिनों का ते अधिकारी पुरुष द्रव्य यज्ञा कहे जावै हैं ॥ अर्थात् पूर्त दत्त नामा स्मार्त कर्म कूं करणे हारे पुरुष द्रव्य यज्ञा कहे जावै हैं तहां पूर्त दत्त यादों नों कर्मों का स्वरूप स्मृति विषे यह कह्या है ॥ तहां श्लोक ॥ (वापी कूप तडागादि देवता यतनानि च ॥ अन्न प्रदान मारामः पूर्तमित्यभिधीयते ॥ शरणागत संत्राणं भूतानां चाप्यहिंसनम् ॥ बहिर्वेदिच यद्दानं दत्तमित्यभिधीयते ॥) अर्थ यह ॥ बावडी बनावणी तथा कूप बनावणा तथा तलाव बनावणा तथा विष्णु शिवादिक देवताओं के मंदिर बनावणे तथा शुधातुर प्राणियों कूं अन्न प्रदान करणा तथा लोको के निवास करणे वासतैं धर्मशाला बगीचा बनावणा ॥ इत्यादिक सर्व कर्म पूर्त यानाम करिके कहे जावै हैं इति ॥ और शरणागत प्राणियों की रक्षा करणी तथा किसी भी भूत प्राणी की हिंसन हीं करणी तथा वेद तैं बाह्य जोदान हैं इत्यादिक सर्व कर्म दत्त यानाम करिके कहे जावै हैं इति ॥ इस प्रकार के पूर्त दत्त नामा स्मार्त कर्मों कूं करणे हारे पुरुष द्रव्य यज्ञा कहे जावै हैं ॥ और इष्ट नामा जो श्रौत कर्म है ता श्रौत कर्म कूं तों (देवमेवापरे यज्ञम्) या वचन करिके पूर्व कथन करि आये हैं ॥ और जोदान वेदिके अं

तर दीया जावै है सो दान भी तिस श्रौत कर्म के अंतर्भूत हो है इति ॥ १ ॥ और कृच्छ्र चांद्रायणादिरूप जो तप है सो तप ही है यज्ञ रूप जिनों का ते अधिकारी पुरुष तपो यज्ञा
 कहे जावै हैं ॥ अर्थात् केई कृतपस्वी पुरुष कृच्छ्र चांद्रायणादिक तप रूप यज्ञ कूं ही करे हैं ॥ २ ॥ और चित्त की वृत्तिकानि रोध रूप जो अष्टांग योग है सो अष्टांग योग
 ही है यज्ञ रूप जिनों का ते अधिकारी पुरुष योग यज्ञा कहे जावै हैं ॥ अर्थात् केई क अधिकारी पुरुष अष्टांग योग रूप यज्ञ कूं ही करे हैं ॥ तहां यम १ नियम २ आसन ३
 प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यह योग के अष्ट अंग कहे जावै हैं ॥ तहां प्रत्याहार का स्वरूप तौ (श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्ये) इस वचन विषे पूर्व क
 थन करि आये हैं ॥ और धारणा ध्यान समाधि यातीनों का स्वरूप तौ (आत्म संयम योगाद्यौ) इस वचन विषे पूर्व क थन करि आये हैं ॥ और प्राणायाम का स्वरूप तौ
 (अपाने जुहति प्राणम्) इस अगले श्लोक विषे कथन करेंगे ॥ यातैं अब यम नियम आसन यातीनों का स्वरूप कथन करे हैं ॥ तहां अहिंसा १ सत्य २
 अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ यह पंच प्रकार का यम होवै है ॥ तथा शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वर प्रणिधान ५ यह पंच प्रकार का
 नियम होवै है ॥ और आसन तौ पक्षक स्वस्तिक भद्र इत्यादिक भेद करिके अनेक प्रकार का होवै है ॥ तहां शास्त्र करिके अप्रतिपादित जो किसी प्राणी का वध करना है
 ताका नाम हिंसा है ॥ ईहां शास्त्र करिके अप्रतिपादित इतने कहने करिके (अग्नीषोमीय पशु मालभेत) इत्यादिक शास्त्र नैं विधान कन्या जो यज्ञ विषे पशु का वध है ताके
 विषे हिंसा पणे की निवृत्तिकरी ॥ सा हिंसा भी कृत कारित अनुमोदित या भेद करिके तीन प्रकार की होवै है ॥ तहां जाहिंसा इस पुरुष ने आपे हीं करीती है ताहिंसा कूं
 कृत कहे हैं ॥ और जाहिंसा इस पुरुष नैं किसी अन्य द्वारा कराईती है ताहिंसा कूं कारित कहे हैं ॥ और इस पुरुष ने जिस हिंसा की प्रशंसा करीती है ताहिंसा कूं
 अनुमोदित कहे हैं ॥ इस प्रकार की हिंसा तैं निवृत्ति रूप जो उपरामता है ताका नाम अहिंसा है ॥ १ ॥ और अयथार्थ भाषण करना तथा नहीं हनन करने योग्य प्रा
 णी की हिंसा के अनुकूल सत्य भाषण करना तादोनों का नाम मिथ्या भाषण है ॥ तादोनों प्रकार के मिथ्या भाषण तैं निवृत्ति रूप जो उपरामता है ताका नाम सत्य है ॥ २ ॥
 और शास्त्र करिके नहीं प्रतिपादित मार्ग करिके जो परा एद्रव्य का स्वीकार करना है ताका नाम स्तेय है ॥ तास्तेय तैं निवृत्ति रूप जो उपरामता है ताका नाम
 अस्तेय है ॥ ३ ॥ और शास्त्र करिके निषिद्ध जो स्त्री पुरुष का संबंध रूप मैथुन है ॥ तामैथुन तैं निवृत्ति रूप जो उपरामता है ताका नाम ब्रह्मचर्य है ॥ ४ ॥ और शास्त्र निषि
 द्ध मार्ग करिके शरीर यात्रा के निर्वाह क भोग के साधनों तैं जो अधिक भोग साधनों का स्वीकार करना है ताका नाम परिग्रह है ॥ तापरिग्रह तैं निवृत्ति रूप जो उपरामता है ताका नाम
 अपरिग्रह है ॥ ५ ॥ इति पंच यम निरूपण ॥ अब पंच प्रकार के नियम का निरूपण करे हैं ॥ तहां शौच दो प्रकार का होवै है ॥ एक तो बाह्य शौच होवै है ॥ और दूसरा अंतर शौच होवै है
 तहां मृत्तिका जलादिकों करिके शरीर का प्रक्षालन करना तथा हित मित मेध्य अन्नादिकों को भोजन करना यह बाह्य शौच कहा जावै है ॥ और भैत्री करुणा मुदिता

उपेक्षा इत्यादिकगुणोंकरिके चित्तके मदमानादिरूपमलकीनिवृत्तिकरणी यह अंतरशौच कहा जावै है ॥ तहां सुखी प्राणीयोंविषे मित्रभाव करणा याकानाम मैत्री हैं ॥ और दुःखी प्राणीयोंऊपरि कृपाकरणी याकानाम करुणा है ॥ और पुण्यवान्पुरुषोंकूंदेखिकरिके प्रसन्नहोणा याकानाम मुदिता है ॥ और पापीदुष्टजनोंके संगका परित्यागकरणा याकानाम उपेक्षा है ॥ १ ॥ और आपणेसमीपविद्यमान जेभोगकेसाधनहैं ॥ तिनोतैंअधिक भोगसाधनोंकेनहींसंपादनकरनेकीइच्छा रूप जोचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम संतोषहै ॥ २ ॥ और क्षुधातृषा शीतउष्ण इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंका सहनकरणा तथाकाष्ठमौन आकारमौन इत्यादिकजेव्रतहैं इनसर्वोंकानाम तपहै ॥ तहां हस्तादिकअंगोंकीचेष्टाकरिकेभी आपणेअभिप्रायकूं नहींप्रगटकरणा याकानाम काष्ठमौनहै ॥ और तिनहस्तादिक अंगोंकीचेष्टाकरिकेतों आपणेअभिप्रायकूं प्रगटकरणा परंतु मुखसेवचनउच्चारणकरणानहीं याकानाम आकारमौनहै ॥ ३ ॥ और मोक्षकेप्रतिपादक वेदांत शास्त्रका जोअध्ययनहै ॥ अथवाप्रणवमंत्रकाजोजपहै याकानाम स्वाध्यायहै ॥ ४ ॥ और तिसतिसफलकीइच्छातैरहितहोइके सर्वकर्मोंका परमगुरुरूपईश्वरविषे जोअर्पणकरणाहै ॥ याकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ ५ ॥ इतिपंचनियमनिरूपणम् ॥ यहयोगशास्त्रकीरीतिसैं पंचप्रकारके यमनियमका निरूपणकरचाहै ॥ औरपुरा णोंविषेतों स्तेयकर्मनिवृत्ति १ करुणा २ आर्जव ३ शान्ति ४ शौच ५ धृति ६ मिताहार ७ सत्यभाषण ८ जीवाहिंसन ९ ब्रह्मचर्य १० इसभेदकरिके दशप्रकारकेयमकथन करेहैं ॥ और आस्तिकत्व १ हर्ष २ तप ३ सुरार्चन ४ दान ५ लज्जा ६ सद्ज्ञान ७ होम ८ सत्श्रवण ९ जप १० याभेदकरिके दशप्रकारकेनियम कथन करेहैं ॥ तेअधिकपंचयमनियम पूर्वउक्तपंचयमनियमोंकेअंतर्भूतहींहैं ॥ इसप्रकारके यमनियमादिकअष्टअंगोंकेअभ्यासपरायण जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधि कारीपुरुष योगयज्ञा कहेजावेहैं ॥ ३ ॥ और जेअधिकारीपुरुष विधिपूर्वक गुरुकेसमीपनिवासकरिके ऋगादिकवेदोंका अभ्यासकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्वाध्याययज्ञा कहेजावेहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदाभ्यासरूपयज्ञकूंहीं करेहैं ॥ ४ ॥ और जेअधिकारीपुरुष अनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिके वेदकेअर्थकानिश्चयकरेहैं तेअधिकारीपुरुष ज्ञानयज्ञा कहेजावेहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदकेअर्थकानिश्चयरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ ५ ॥ अब यज्ञां तरका कथनकरेहैं (यतयःसंशितव्रताःइति) हेअर्जुन केईक यत्नशील अधिकारीपुरुषतों संशितव्रतरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ तहां भलीप्रकारतैंअत्यंतदृढहुएहैं अहिंसादिकव्रत जिनोंके तेअधिकारीपुरुष संशितव्रता कहेजावेहैं ॥ यहवार्ता भगवान्पतंजलिनैंभी योगशास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (जाति देशकालसमयानवच्छिन्नाःसार्वभौमामहाव्रताःइति ॥) अर्थयह ॥ जेपूर्वअहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचयम कथनकरथे ॥ तेअहिंसादिक पंचयमहीं जाति देश काल समय इनचचारोंकरिकेअनवच्छिन्नहोणेतैं अत्यंतदृढभूमिकारूपहुए महाव्रत याशब्दकरिकेकहेजावेहैंइति ॥ अब तिनअहिंसा

दिकपंचयमोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअनवच्छिन्नता स्पष्टकरणेवास्तै प्रथम तिनअहिंसादिकोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअवच्छिन्नता निरूपणकरैहैं ॥
 तहां एकसृगकूंडोडिकै दूसरे गौअश्वादिकप्राणीयोंकूं में कदाचित्भी हनन नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जोतिनगौअश्वादिकप्राणीयोंकीअ
 हिंसाहै सा अहिंसा जातिअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और तीर्थविषे में किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोतीर्थमात्रविषे किसी
 प्राणीकीहिंसानहींकरणीहै साअहिंसा देशावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीविषे तथाअन्याकिसीपवित्रादिनविषे में किसीभीजीवकीहिंसा नहींक
 रौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोतिन एकादशी आदिकोंविषे किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणीहै साअहिंसा कालावच्छिन्न कहीजावैहै ॥
 और देवताब्राह्मणोंकेप्रयोजनतैंविना अथवा युद्धतैंविना में किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो तिसप्रयोजनतैंविना
 किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणीहै ॥ साअहिंसा समयावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इहां समयनाम प्रयोजन विशेषकाहैइति ॥ इसप्रकार विवाहादिकप्रयोजनतैं
 विना में मिथ्याभाषण नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोविवाहादिप्रयोजनतैंविना मिथ्याभाषणकापरित्यागरूप सत्यहै सोसत्य समयाव
 च्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसप्रकार आपतकालतैंविना क्षुधाकेनिवर्तकपदार्थतैंअतिरिक्तपदार्थकी में चोरीनहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जो
 चोरीतैंनिवृत्तिरूप अस्तेयहै सोअस्तेय कालावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसप्रकार ऋतुकालतैंभिन्नकालविषे में आपणीस्त्रीविषे गमननहींकरौंगा ॥ या
 प्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो ऋतुकालतैंभिन्नकालविषेमैथुनकापरित्यागरूप ब्रह्मचर्यहै सोब्रह्मचर्य कालावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसप्रकार गुरुदेवता
 आदिकोंकेप्रयोजनतैंविना में अधिकपदार्थोंकापरिग्रह नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोअधिकपदार्थोंके परिग्रहतैंनिवृत्तिरूप अपरिग्रहहै सोअप
 रिग्रह समयावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसरीतिसैंअहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापांचांयमोंविषे यथायोग्य जातिअवच्छिन्नता तथादेशावच्छिन्नता
 तथाकालावच्छिन्नता तथासमयावच्छिन्नता जानिलेणी ॥ तहां जाति देश काल समय याच्यारोअवच्छेदकोंकीनिवृत्तिकरिकै जिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम
 सर्वजातीयोंविषे तथा सर्वदेशों विषे तथा सर्वकालोंविषे तथासर्वप्रयोजनोंविषे होवैहै ॥ अर्थात् किसीदेशविषे किसीकालविषे किसीप्रयोजनवास्तै किसी
 भीजीवकी में हिंसाकरौंगानहीं तथामिथ्याभाषण तथाचोरी तथामैथुन तथापरिग्रह करौंगानहीं ॥ याप्रकारकेसंकल्पपूर्वक जबी तेअहिंसादिकपंचयम निरव
 च्छिन्न सिद्धहोवैहै ॥ तिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम महाव्रत यानामकरिकैकहेजावैहैं इसप्रकार काष्ठमौनादिकव्रतभीजानिलेणे ॥ इसप्रकार अहिंसादिक
 व्रतकी दृढताकेहुए नरककेद्वारभूत काम क्रोध लोभ मोह याच्यारोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां अहिंसाकरिकै तथा क्षमाकरिकै क्रोधकीनिवृत्तिहोवैहै और ब्रह्मचर्य

करिकै तथा वस्तुकेविचारकरिकै कामकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और अस्तेयअपरिग्रहरूप संतोषकरिकै लोभकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और सत्यकरिकै तथायथार्थज्ञान रूपविवेककरिकै मोहकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनकामक्रोधादिकोंकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर तिनकामक्रोधादिकोंकेकार्यरूप सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिन अहिंसादिकोंके दूसरेभीअनेकफल सकामपुरुषोंवास्तै योगशास्त्रविषे कथनकरैहैं इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ अब प्राणायामरूपयज्ञकूं सार्धश्लोककरिकै श्रीभगवान् कथनकरैहैं ॥

(मू० श्लो०) अपाने जुहति प्राणं प्राणे पानं तथा परे ॥ प्राणापानगतीरुद्धा प्राणायामपरायणाः ॥ २९ ॥ अपरे नियताहाराः प्राणान् प्राणेषु जुहति ॥ २९ ॥ इति पदच्छेदः ॥ हेअर्जुन अन्यअधिकारीपुरुषतौ अपानविषे प्राणकूं होमकरैहैं तथा प्राण विषे अपानकूं होमकरैहैं और नियतआहारवाले दूसरेअधिकारीजनतौ प्राणअपानकीगतिकूं रोकिकै प्राणायामपरायणहुए प्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियांकूं होमकरैहै ॥ २९ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन केईकअधिकारीपुरुषतौ अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिविषे प्राणकीश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरैहैं ॥ अर्थात् बाह्यवायुका शरीरकेभीतर प्रवेशकरिकै पूर कनामाप्राणायामकूंकरैहैं ॥ तथा ते अधिकारीपुरुष प्राणकीश्वासरूपवृत्तिविषे अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरैहैं ॥ अर्थात् शरीरकेभीतरलेवायुकूं बाह्यदेशविषेनिर्गमनकरिकै रेचकनामाप्राणायामकूंकरैहैं ॥ ईहां पूरक रेचक यादोप्रकारकेप्राणायामकेकथनकरिकै श्रीभगवान् दोप्रकारकेकुंभककाभी अर्थतैहीकथनकन्या ॥ जिसकारणतैं तापूरकरेचकतैंविना सोदोप्रकारकाकुंभक सिद्धहोवैनहीं ॥ तहां अंतर कुंभक बाह्यकुंभक याभेदकरिकै सोकुंभक दोप्रकारकाहोवैहैतहां यथाशक्तिपरिमाण बाह्यवायुकूं नासिकाद्वारा शरीरकेभीतर पूर्णकरिकै तिसतेअनंतर जोश्वासप्रश्वासका निरोधकन्याजावैहै ॥ सोअंतरकुंभक कहाजावैहै ॥ और यथाशक्तिपरिमाणशरीरकेअंतरलेवायुका तानासिकाद्वारा बाह्यपरित्यागकरिकै तिसतैंअनंतर जोश्वासप्रश्वासकानिरोध कन्याजावैहै ॥ सो बाह्यकुंभक कहाजावैहै इति ॥ अब पूर्वकथनकन्ये हुए पूरक रेचक कुंभक यातीनप्रकारकेप्राणायामकेअनुवादपूर्वक चतुर्थकुंभककूं श्रीभगवान् कथनकरैहैं (प्राणापानगतीरुद्धा इति) हेअर्जुन मुखनासिकाद्वारा शरीरकेअंतरलेवायुका जो बाह्यनिर्गमनहै ताकानाम श्वासहै ॥ सोश्वासतौ प्राणकीगतिहै ॥ और बाह्यनिकसेहुएवायुका जो तामुखनासिकाद्वारा शरीरकेभीतरप्रवेशहै ताकानाम प्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वास अपानकीगतिहै तहां पूरकविषेतौ प्राणकेश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै ॥ और रेचकविषे

अपानके प्रश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै ॥ औरकुंभकविषेतौ तिनदोनोंगतियोंका निरोधहोवैहै ॥ इसप्रकार क्रमकरिकै तथाएकहीकालविषे ताप्राणअपानके श्वास प्रश्वास रूपगतिकूं रोकिकरिकै त्रिविधप्राणायामपरायणहुए तथाआहारनियमादिक योगकेसाधनोंकरिकैविशिष्टहुए केईकअधिकारीजन बाह्यअंतरकुंभककेअभ्यास करिकै निग्रहकन्येहुएप्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियरूपप्राणोंकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् चतुर्थकुंभकके अभ्यासकरिकै तिनइंद्रियोंकूं निगृहीतप्राणोंविषे लयकरेहैं इति ॥ यह सर्व अर्थ भगवान्पतंजलिने योगसूत्रोंविषे संक्षेपकरिकै तथाविस्तारकरिकै कथनकन्याहै ॥ तहां संक्षेपसूत्रं (तस्मिन्सतिश्वासप्रश्वासयो र्गतिविच्छेदलक्षणःप्राणायामइति) ॥ अर्थयह ॥ तिसआसनकेस्थिरहुए प्राणायाम करणेकूंयोग्यहै ॥ कैसाहैसोप्राणायाम ॥ श्वासप्रश्वासकीगतिका निरो धरूपहै अर्थात् प्राण अपान यादोनोंके यथाक्रमतैं धर्मरूपजे श्वास प्रश्वास यहदोनोंहैं ताश्वासप्रश्वासदोनोंकी पुरुषप्रयत्नतैंविनाहीं जा स्वाभाविक चलनरूपगतिहै तागतिका क्रमकरिकै तथाएकहीकालविषे जोपुरुषयत्नविशेषकरिकै निरोधहै सोनिरोधहैस्वरूपजिसका ताकूं प्राणायामकहेहैंइति ॥ इससं क्षिप्तअर्थकूं अब विस्तारतेकथनकरेहैं ॥ तहांसूत्रम् ॥ (बाह्याभ्यंतरस्तंभवृत्तिर्देशकालसंख्याभिःपरिदृष्टोदीर्घःसूक्ष्मइति) अर्थयह ॥ सोप्राणायाम बाह्यवृत्ति आभ्यंतरवृत्ति स्तंभवृत्ति तुरीय याभेदकरिकैच्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां बाह्यगतिकानिरोधरूपहोणेतैं पूरक बाह्यवृत्ति कह्याजावैहै ॥ और अंतर्गतिकानिरोधरूप होणेतैं रेचक अंतरवृत्ति कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्यवृत्तिशब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरणा ॥ और आभ्यंतरवृत्तिशब्दकरिकै पूरककाग्रहणक रणा ॥ और एकहीकालविषेतिनदोनोंगतियोंकाजोनिरोधहै ताकानामस्तंभहै ॥ तास्तंभरूपहोणेतैं कुंभक स्तंभवृत्तिकह्याजावैहै ॥ अर्थात् जहां श्वास प्रश्वास दोनोंका एकही विधारकप्रयत्नतैं अभावहोवैहै ॥ पूर्वकीन्याई पूरणकेप्रयत्नकाभीविधारणहोवेनहीं तथारेचनकेप्रयत्नकाभी विधारणहो वेनहीं ॥ किंतु जैसे अग्निअरिकैतप्तपाषाणऊपरिपायाहुआजल परिशोषणकूंप्राप्तहुआ सर्वओरतैंसंकोचकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सर्वदा चलनस्वभाववाला यहप्राणवायुभी बलवान्विधारकप्रयत्नकरिकै ताचलनक्रियातैंरहितहुआ शरीरविषेहीं सूक्ष्महुआस्थितहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोसूक्ष्मप्राणवायु पूरणकूंभी प्राप्तहोवेनहीं याते पूरकभीहोवेनहीं ॥ तथा सोसूक्ष्मप्राणवायु रेचनकूंभीप्राप्तहोवेनहीं यातैं रेचकभीकह्याजावेनहीं ॥ किंतु परिशेषते सो निरुद्धहुआ सूक्ष्मप्राणवायु कुंभकहीं कह्याजावेहैइति ॥ सोयह पूरक रेचक कुंभक तीनप्रकारकाप्राणायाम देशकरिकै तथाकालकरिकै तथासंख्याक रिकै परीक्षाकरचाहुआ सूक्ष्मसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे घनीभूततूलकापिंड प्रसारणकरचाहुआ विरलताकरिकैदीर्घहोवैहै तथासूक्ष्महोवैहै ॥ तैसे यहप्राण वायुभी देशकालसंख्याकीअधिकताकरिकै अभ्यासकरचाहुआ दीर्घहोवैहै तथा दुर्लक्ष्यताकरिकै सूक्ष्मभीहोवैहै ॥ सोप्रकार अबदिखावैहैं ॥ तहां प्राणकी

गतिरूपजोश्वासहै ॥ सोश्वासतौ हृदयदेशतैनिकसिकै नासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख द्वादशअंगुलपर्यंतदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ और अपानकीगतिरूप जोप्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वासतौ ताश्वासकीसमाप्तिदेशतैं पुनः उलटिकरिकै ताहृदयदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ यहसर्वमनुष्योंके प्राणअपानकी स्वाभाविकगति होवैहै ॥ और अभ्यासकरिकैतौ सोप्राणवायु यथाक्रमतैं नाभिदेशतैनिकसिकै अथवा आधारदेशतैनिकसिकै तानासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख चौबीसअंगुलपर्यंत देशविषे अथवा छत्तीसअंगुलपर्यंतदेशविषे जाइकै समाप्तहोवैहै ॥ पुनःतिससमाप्तिदेशतैंहां उलटिकरिकै तानासिकाद्वारातानाभिदेशविषे अथवा आधारदेशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तहां बाह्यदेशविषे तावायुकासंबंधतौ वायुतैरहितदेशविषे आपणीनासिकाकेसन्मुख किसीइषीकाकेसूक्ष्मतूलकूराखिकै तातूलकीचलन रूप क्रियातैं अनुमान करचाजावैहै ॥ और शरीरकेअंतरदेशविषे ताप्राणवायुकासंबंधतौ पिपीलिकाकेस्पर्शकेसमानस्पर्शकरिकै अनुमान करचाजावैहै ॥ सोयह देशपरीक्षाकहीजावैहैइति ॥ और नेत्रोंकीजानिमेष्क्रियाहै ॥ तानिमेष्क्रियावच्छिन्नकालकाजोचतुर्थभागहै ताकानाम क्षणहै ॥ तिनक्षणोंके इयत्ताकानिश्चय करणा याकानाम कालपरीक्षाहैइति ॥ और आपणेजानुमंडलकूं आपणेहस्तसैं प्रदक्षिणाकीन्यांई तीनवारस्पर्शकरिकै छोटिकामुद्राकरणी ताछोटिकामुद्रा अवच्छिन्नजोकालहै ताकानाम मात्राहै ॥ तिनछतीसमात्रावोंकरिकै जोप्रथम उद्घातहै सो मंदकह्याजावैहै ॥ और सोईहींउद्घात पूर्वतैंद्विगुणकरचाहुआ द्वितीय मध्यकह्याजावैहै ॥ और सोईहींउद्घात त्रिगुणकरचाहुआ तृतीय तीव्रकह्याजावैहै ॥ तहां नाभिदेशतैंउठाइकै विरेचनकन्येहुए प्राणवायुका जोशिर विषेअभिहननहै ताकानाम उद्घातहै ॥ सोयह संख्यापरीक्षाकहीजावैहै ॥ अथवा प्रणवमंत्रकेजपकीआवृत्तिकेभेदकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ अथवा श्वासप्रदेशोंकीगणनाकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ इसप्रकार काल संख्या यादोनोंका यत्किंचित्भेदअंगीकारकरिकै भिन्नभिन्न कथनकरचाहै ॥ यद्यपि कुंभकविषे पूरकरेचककीन्यांई देशव्याप्ति प्रतीतहोवैनहीं ॥ तथापि कालव्याप्ति तथासंख्याव्याप्ति ताकुंभकविषेभी जानीजावैहै ॥ सोयहतीनप्रकारका प्राणायाम तिनदिनविषेअभ्यासकरचाहुआ दिवस पक्षमास इत्यादिकक्रमकरिकै अधिकदेशकालविषेव्यापकहोणेतैं दीर्घकह्याजावैहै ॥ तथा परमनै पुण्यसमाधिकरिकै गम्यहोणेतैं सूक्ष्मकह्याजावैहै ॥ इतनैंकरिकै पूरक रेचक कुंभक यहतीनप्रकारकाप्राणायाम कथनकन्या ॥ अब फलरूपचतुर्थ प्राणायामका निरूपणकरहैं ॥ तहांपतंजलिसूत्रं (बाह्याऽभ्यंतरविषयाक्षेपीचतुर्थःइति) ॥ अर्थयह ॥ बाह्यविषयजोश्वासहै ॥ सो रेचककह्या जावैहै ॥ और अंतरविषयजोप्रश्वासहै सो पूरक कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्यविषयशब्दकरिकै पूरककाग्रहणकरणा ॥ और अभ्यंतरविषय शब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरना तारेचकपूरकदोनोंकीअपेक्षाकरिकै एकहींबलवान् विधारकप्रयत्नकेवशतैं बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकातृतीयकुं

भक्तहोवैहै ॥ और तिसरेचक्रपूरकदोनोंकीनअपेक्षाकरिकैहीं केवल कुंभककेअभ्यासकीदृढताकरिकै अनेकवार तिसतिसप्रयत्नकेवशतैं चतुर्थकुं
 भक्तहोवैहैइति ॥ अथवा इससूत्रका यह दूसराव्याख्यान करना ॥ पूर्व कथनकरचाजो द्वादशअंगुलपर्यंत तथा चौबीस अंगुलपर्यंत तथा छत्तीसअंगुल
 पर्यंत प्राणकेजाणेका बाह्यदेशहै ॥ सोबाह्यदेशही बाह्यविषयशब्दकरिकैग्रहणकरना ॥ और अभ्यंतरविषयशब्दकरिकैतौ हृदयनाभिचक्रआदिकोंका ग्रहणकरना ॥
 तिनदोनोंविषयोंकू सूक्ष्मदृष्टिसैनिश्चयकरिकै जोस्तंभरूप गतिकाविच्छेदहै सो चतुर्थ प्राणायाम कहाजावैहै ॥ और तीसराकुंभकनामा प्राणायामतौ बाह्यवि
 षय अभ्यंतरविषय यादोनोंविषयोंके निश्चयतैंविनाहीं शीघ्रही होवैहै ॥ इतनीहीं तीसरे कुंभकनामा प्राणायामविषे तथाचतुर्थ कुंभकनामा प्राणायामविषे विशेष
 ताहै इति ॥ यहहीं च्यारिप्रकारका प्राणायाम श्रीभगवान्ने (अपानेजुह्वातिप्राणम्) इत्यादिक सार्धश्लोककरिकै कथनकरचाहै इति ॥ २९ ॥ * तहां (दैव
 मेवापरेयज्ञम्) इसतैंआदिलैके साढेपंचश्लोकोंकरिकै द्वादशयज्ञ कथनकरये ॥ अब तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेजानणेहारेपुरुषोंकू तथा तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेकर
 णेहारेपुरुषोंकू जोफल प्राप्तहोवैहै ॥ ताफलकू श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वेप्येतेयज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टामृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनं ॥ नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यकुतोऽन्यः
 कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ सर्वे । अपि । एते । यज्ञविदः । यज्ञक्षपितकल्मषाः । यज्ञशिष्टामृतभुजः । यांति । ब्रह्म । सनातनं । न ।
 अयं । लोकैः । अस्ति । अयज्ञस्य । कुतः । अन्यः । कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिनयज्ञकूकरणेहारे तथातिन
 यज्ञोंकरिकैनाशहूएहैकल्मषजिनोंके तथातिनयज्ञोंकेउत्तरकालविषेअमृतरूपअन्नकूभोजनकरणेहारे यह सर्वहीं अधिकारीजननि
 त्यं ब्रह्मकू प्राप्तहोवैहै हेअर्जुन तिनयज्ञोंतैरहितपुरुषकू यह मनुष्यलोकभी नहीं प्राप्तहै तौस्वर्गादिलोक कहांतैंहोवैं ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः)
 ॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकू जेपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानेहैं ॥ अथवा तिनद्वादशयज्ञोंकू जे प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तिनयज्ञोंकू जेपुरुष श्रद्धापूर्व
 ककरैहैं ॥ तिनोंकानाम यज्ञविद्है ॥ ऐसे तिनयज्ञोंकेजानणेहारे तथा तिनयज्ञोंकेकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तथा तिनपूर्वउक्तयज्ञोंकरिकै नाशकूप्राप्तहुएहैं पापकर्म
 रूपकल्मषजिनोंके ॥ तथा तिनयज्ञोंकूकरिकै बाकीरहेहुएकालविषे अमृतरूपअन्नकू भोजनकरणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तेसर्वहीं अधिकारीपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा
 तथाज्ञानकीप्राप्तिद्वारा नित्यब्रह्मकूहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् इसजन्ममरणादिरूपसंसारतैं तेपुरुष मुक्तहोवैहैं ॥ इतनैकहणेकरिकै तिनयज्ञोंकेकरणेहारेपुरुषोंकू
 फलकीप्राप्ति कथनकरी ॥ अब तिनयज्ञोंकेनहींकरणेहारेपुरुषोंकू दोषकीप्राप्ति कथनकरैहैं (नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यइति) हेअर्जुन पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकेमध्य

विषे कोईभी यज्ञ जिसपुरुषकूनहींहै ताकानाम अयज्ञहै ऐसे अयज्ञपुरुषकूं यह अल्पसुखवाला मनुष्यलोकभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतै सोअयज्ञपुरुष सर्व शिष्टपुरुषोंकरिकैनिंयहोणेतें दुःखीहींहै ॥ जबी तिसअयज्ञपुरुषकूं यह अल्पसुखवाला मनुष्यलोकभी नहींप्राप्तहुआ ॥ तबी महान्पुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तहोणंहारा स्वर्गादिरूपलोक तिसअयज्ञपुरुषकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैगा ॥ किंतु ताअयज्ञपुरुषकूं कोईभीलोक नहींप्राप्तहोवैगा ॥ इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ शंका हेभगवन् पूर्व आपने जोफलसहित यज्ञोंकाकथनकन्याहै ॥ सो केवल आपणीकल्पनाकरिकैहींकथनकन्याहै ॥ तिनफलसहितयज्ञोंविषे दूसराकोई प्रमाणहैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् साक्षात् वेदहीं तिनयज्ञोंविषे प्रमाणहै याप्रकारकाउत्तर कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे ॥ कर्मजान्विद्वितान्तर्त्सर्वानिवंज्ञात्वाविमोक्ष्यसे ॥ ३२ ॥ एवं । बहुविधाः । यज्ञाः । वितताः । ब्रह्मणः । मुखे । कर्मजान् । वि० द्वि । तान् । सर्वान् । एवं । ज्ञात्वा । विमोक्ष्यसे ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन इसप्रकार बहुतप्रकारके यज्ञ वेदकेमुखावषे विस्तृतहैं तिनं सर्वयज्ञोंकूं तूकर्मजन्महीं जान इसप्रकार जानिकरिकै तू इससंसारतें मुक्तहोवैगा ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (दैवमेवापरेयज्ञं) इसवचनतेंआदिलैके पूर्वकथनकन्येजेद्वादशयज्ञहैं ॥ जेयज्ञ सर्ववैदिकश्रेयके साधनरूपहैं ॥ तेसर्वयज्ञ ऋगादिकवेदकेमुखविषे विस्तृतहैं ॥ अर्थात् ऋगादिक वेदद्वाराहीं तेसर्वयज्ञ जानेजावेहैं ॥ केवल आपणीकल्पनाकरिकै हमने तेयज्ञ कथनकन्येनहीं ॥ हेअर्जुन तिनसर्वयज्ञोंकूं तू कायिकवाचिकमानसकर्मोंतेंहीं उत्पन्नहुआजान ॥ तिनयज्ञोंकूं आत्मातेंउत्पन्नहुआ जाननानहीं ॥ जिसकारणतै यहआत्मादेव सर्वव्यापारोंतें रहितहैं ॥ तिसकारणतै तेयज्ञ मैंआत्माकेव्यापाररूपनहींहैं ॥ किंतु मैंआत्मा सर्वव्यापारोंतैरहित असंगउदासीनहूं ॥ इसप्रकार आत्मादेवकूं असंग उदासीनजानिकै तूअर्जुन इससंसारबंधतें मुक्तहोवैगा इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे श्रीभगवान्ने सर्वयज्ञोंका तुल्यहीं कथनकन्या ॥ याते कर्मयज्ञ ज्ञानयज्ञ यहदोनोंयज्ञ समानहींहोवैगे ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनदोनोंयज्ञोंकीसमानताकेनिवृत्तकरणेवास्ते ज्ञानयज्ञकी श्रेष्ठताकूंकहेहैं ॥

मू० श्लो० श्रेयान्द्रव्यमयायज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप ॥ सर्वकर्मोऽखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ ३३ ॥ श्रेयान् । द्रव्यमयात् । यज्ञात् । ज्ञानयज्ञः । परंतप । सर्व । कर्म । अखिलं । पार्थ । ज्ञाने । परिसमाप्यते ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन द्रव्यमय यज्ञतें ज्ञानयज्ञ अंत्यंत श्रेष्ठहै जिसकारणतै हेपार्थ सर्व निर्विशेष कर्म ज्ञानविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्रव्यमययज्ञतै आदिलैके जितनैकीज्ञानतेशून्ययज्ञहैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंतैं सोज्ञानयज्ञ अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं तेज्ञानतैशून्यसर्वयज्ञतों संसाररूपफल कीहीं प्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और सोज्ञानयज्ञतों साक्षात् मोक्षरूपफलकीहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ज्ञानादेवतुकैवल्यम्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकू ज्ञानतैंही कैवल्यमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ अब ताज्ञानयज्ञकीश्रेष्ठताविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहैं (सर्वकर्माखिलमिति) हेअर्जुन अभिहोत्र ज्योतिष्टोम सोमयज्ञ चयनयज्ञ इसतैं आदिलैके जितनैकीश्रौतकर्महैं ॥ तथा उपासनादिरूप जितनैकीस्मार्तकर्महैं ॥ तेसर्वकर्म निरवशेषहुए ब्रह्मात्मऐक्यज्ञानविषेहीं समाप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तेसर्वश्रौतस्मार्तकर्म पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा ताआत्मज्ञानविषेहीं परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहैंइति ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतवेदानुवचनेनब्राह्मणा विविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥ धर्मेणपापमपनुदति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण वेदकेअध्ययनकरिकै तथायज्ञकरिकै तथादानकरिकै तथातपकरिकै इसआत्मादेवके जानणेकीइच्छा करेहैइति ॥ और यहअधिकारीपुरुष धर्मकरिकै पापकूं निवृत्तकरेहैइति ॥ सर्वशुभकर्मोंका प्रतिबंधकपापोंकीनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानविषेही उपयोगहै ॥ इस अर्थकूं श्रीव्यासभगवान् नैं तथाभाष्यकारोंने (सर्वापेक्षायज्ञादिश्रुतेरश्वत्) इससूत्रविषे विस्तारतैं कथनकरचाहै याते यहज्ञानरूपयज्ञही सर्वयज्ञोंतैं श्रेष्ठहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसआत्मज्ञानविषे सर्वशुभकर्मोंका परिअवसानहै ॥ तिसआत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे अत्यंत समीपउपाय कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताउपायका कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया ॥ उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ तत् । विंद्धि । प्रणिपातेन । परिप्रश्नेन । सेवया । उपदेक्ष्यंति । तै । ज्ञानं । ज्ञानिनः । तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिसआत्मज्ञानकूं तूं ब्रह्मवेत्तागुरु केआगेदंडवत्प्रणामकरिकै तथाप्रश्नकरिकै तथासेवाकरिकै प्राप्तहोउ ताकरिकैप्रसन्नहुए तैतत्त्वदर्शी ज्ञानीगुरु तुमारेताई ज्ञानकूं उपदेशकरेंगे ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वशुभकर्मोंकाफलभूतजो आत्मज्ञानहै तिसआत्मज्ञानकूं तूं अवश्यकरिकैप्राप्तहोउ ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासै तूं याप्रकारकाउपायकर ॥ तहां (आचार्यवान्पुरुषोवेद) याश्रुतिनै ब्रह्मवेत्ताआचार्यकेउपदेशतैंही ज्ञानकीप्राप्तिकथनकरैहै ॥ यातैं तूं अर्जुनभी ब्रह्मवेत्ताआचार्योंकेसमीपजाइके प्रथम दंडवत्प्रणामकर ॥ तथा सर्वप्रकारतैं तिनआचार्योंकीअनुकूलताकासंपादकजोव्यापारविशेषहै ताकानाम सेवाहै ऐसीसेवाकूंकर ॥ तिसतेअनंतर हेभगवन् मैं कौनहूं तथामैं किसप्रकार बंधायमानहुआहूं तथाकिसउपायकरिकै मैं इससंसारतैं मुक्तहोवौंगा याप्रकारकाप्रश्न तिनगुरुवोंकेआगेकर ॥ इसप्रकार भाक्तिश्रद्धा

पूर्वक तुमारेदंडवत्प्रणामकरिकै तथासेवाकरिकै प्रसन्नहुए तेतत्त्वदर्शीज्ञानवान्गुरु तुमारेताई आत्मज्ञानका उपदेशकरेंगे ॥ जोआत्मज्ञान साक्षात् मोक्षरूप फलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ईहां पदोंकेज्ञानविषे तथावाक्योंकेज्ञानविषे तथानानाप्रकारकीयुक्तियोंकेज्ञानविषे जेपुरुष अत्यंतकुशलहोवैहैं तिनोंकानाम ज्ञानीहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं संशयविपरीतभावनातैरहित आत्माका साक्षात्कारहुआहै तिनोंकानाम तत्त्वदर्शीहै ॥ ऐसे ज्ञानवान् ॥ तथातत्त्वदर्शीपुरुषोंने उपदेशकन्या जोआत्मज्ञानहै सो आत्मज्ञानहीं मोक्षरूपफलकी प्राप्तिकरेहै ॥ तातत्त्वदर्शीपणेतैरहित केवल पदवाक्ययुक्तिआदिकोंकेज्ञानविषेकुशल पुरुषनैं उपदेशकरचा हुआ सो आत्मज्ञान तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरैहीं ॥ अर्थात् श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुनैं उपदेश करचाहुआ आत्मज्ञानही तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरेहैइति ॥ तहां (ज्ञानिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्ने श्रोत्रियका कथनकरचाहै ॥ और (तत्त्वदर्शिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्ने ब्रह्मनिष्ठाका कथनकरचाहै इसीअर्थकूं साक्षात् श्रुतिभगवतीभी कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्विज्ञानार्थसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठमिति) ॥ अर्थ यह तिसपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारवास्ते यह अधिकारीपुरुष यथाशक्ति भेटाहस्तविषेलैकै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके समीपजावैइति ॥ ईहां (ज्ञानिनःतत्त्वदर्शिनः) इस आचार्यकेवाचक दोनोपदोंविषे जो बहुवचन भगवान्ने कथन करचाहै ॥ सो आचार्यकी महानताकेबोधनकरणेवास्ते कथनकरचाहै ॥ कोई ताबहुवचनकरिकै बहुतआचार्य भगवान्कूं विवक्षितनहींहैं ॥ काहेतैं श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठाएकहीआचार्यतैं इसअधिकारीशिष्यकूं तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्ति होइसकेहै ॥ तातत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिवास्ते बहुतआचार्योंकेसमीपजानेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहींहै इति ॥ ३४ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारके अत्यंतदृढउपायकरिकै ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नकियेहुएभी ताज्ञानकरिकै कौन फलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानकेफलका वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यज्ज्ञात्वानपुनर्मोहमेवंयास्यसिपांडव ॥ येनभूतान्यशेषेणद्रक्ष्यस्यात्मन्यथोमयि ॥ ३५ ॥ यत् । ज्ञात्वा । न । पुनः । मोहं । एवं । यास्यसि । पांडव । येन । भूतानि । अंशेषेण । द्रक्ष्यसि । आत्मनि । अथो । मयि ॥ ३५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसंपूर्वउक्तज्ञानकूं प्राप्तहोइकै तूं पुनः इसप्रकारके मोहकूं नहीं प्राप्तहोहैगा जिसकारणतैं जिस ज्ञानकरिकै इनंसर्व भूतोंकूं आपणेआत्माविषे तथा मैंपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखैगी ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुने उपदेशकरचाजो आत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइकै इनबांधवोंके वधादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसेभमरूप शोककूं तूं पुनःकदाचित्भी नहींप्राप्तहोवैगा ॥ काहेतैं आत्माकेअज्ञानकरिकैजन्य जितनैकी ब्रह्मतैंआदिलैके स्तंबपर्यंत पितापुत्रादिकभूतप्राणीहैं तिनसर्व भूतप्राणि

योंकू जिसआत्मज्ञानकरिकै तूं आपणेतुं पदार्थआत्माविषे तथावास्तवतैं भेदतैरहित सर्वकाअधिष्ठानभूत मेंतत्पदार्थपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखेंगा ॥ जिसकारणतैं अधिष्ठानतैंभिन्नकरिकै कल्पितवस्तुका अभावहींहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंभगवान् वासुदेवकूं अपनाआत्मारूपजानिकै अज्ञानकेनाशहुएतैंअनं तर ताअज्ञानकेकार्यरूप यहसर्वभूतप्राणीभीस्थितहोवैगेनहींइति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतों (आत्मनि मयि) यादोनोपदोंका समानाधिकरणअंगीकारकरिकैआत्मारूपमैंपरमेश्वरविषे तिन सर्वभूतोंको तूं देखैगा इसप्रकारकाअर्थ कथनकरचाहै इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेआत्मज्ञानकंप्राप्तहोइकैभी मैंअर्जुन भीमद्रोणादिकगुरुवोंके तथादुर्योधनादिकबांधवोंके वधजन्यपापतैं मुक्तनहींहोवोंगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानका परममाहात्म्य कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अपिचेदसिपापेभ्यःसर्वेभ्यःपापकृत्तमः ॥ सर्वज्ञानप्लवेनैववृजिनंसंतरिष्यसि ॥ ३६ ॥ अपि । चेत् । अंसि । पापेभ्यः । सर्वेभ्यः । पापकृत्तमः । सर्व । ज्ञानप्लवेन । एंव । वृजिनं । संतरिष्यसि ॥ ३६ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं सर्वपापकारीपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारीभी होवै तोंभी तूं तासर्व पापरूपसमुद्रकूं ज्ञानरूपनौकाकरिकै हीं तरैगा ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥ टीका ॥ ईहां अपि चेत् यहदोनोपद असंभावितअर्थकेअंगीकारका बोधकहैं ॥ अर्थात् सर्वपापकारीपुरुषोंतैं ताअर्जुनविषे अत्यंतपापकारीपणा यद्यपि हैनहीं ॥ तथापि ज्ञानकेफलका कथनकरणेवास्ते ताअर्जुनविषे सोअत्यंतपापकारीपणा अंगीकारकरिकै श्रीभगवान् कहेहैं ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं सर्वपापकारीपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारीभीहोवै ॥ तोंभी तिस सर्वपापरूप समुद्रकूं तूं इसज्ञानरूपनौकाकरिकैहीं तरैगा ॥ ताआत्मज्ञानते भिन्नउपायकरिकै यहपापरूपसमुद्र तरचाजावै नहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तरतिशोकमात्मवित्) ॥ अर्थयह ॥ आत्मवेत्तापुरुषसर्वसंसाररूपशोककूंतरेहैइति ॥ ईहां (वृजिनं) याशब्दकरिकै संसाररूपफलकीप्राप्तिकरणेहारे सर्वधर्मअधर्मरूपकर्मोंकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं मोक्षकीइच्छावान् अधिकारीपुरुषकूं पापकर्मकीन्यांई सोपुण्यकर्मभी अनिष्टहीहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानरूपनौकाकरिकै पुण्यपापरूपसमुद्रकूं तरेहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वआपनै कथनकरी ॥ तहां जैसेनौकाकरिकैसमुद्रकेतरचेहुएभी तासमुद्रकानाशहोवैनहीं ॥ तैसेआत्मज्ञानरूपनौकाकरिकै इसपुण्यपापरूपसमुद्रकेतरचेहुएभी तापुण्यपापरूपकर्मकानाशहोवैगानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् आत्मज्ञानकरिकै तिनकर्मोंकेनाशविषे दूसरादृष्टांतकथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यथैधांसिसमिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेर्जुन ॥ ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा ॥ ३७ ॥ यथा । एधांसि । समिद्धः ।

अग्निः । भस्मसात् । कुरुते । अर्जुन । ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि । भस्मसात् । कुरुते । तथा । (इति पं०) हे अर्जुन जैसे प्रज्वलित अग्नि काष्ठोंकू भस्मीभूत करेहै तैसे ज्ञानरूपअग्नि सर्वकर्मोंकू भस्मीभूत करेहै ॥ ३७ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जैसे अत्यंत प्रज्वलित अग्नि बहुत काष्ठोंकू भी भस्मीभूत करिदेवेहै ॥ तैसे मैं ब्रह्मरूपहूं या प्रकारका जो आत्मज्ञानरूप अग्निहै ॥ सो ज्ञानरूपअग्निभी प्रारब्धकर्मतैं भिन्न सर्वपुण्यपापकर्मोंकू भस्मीभूत करिदेवेहै ॥ अर्थात् सो ज्ञानरूपअग्नि तिनपुण्यपापकर्मोंके कारणभूत अज्ञानकू नाशकरिकेतिनकर्मोंकू भी नाशकरेहैइति ॥ तहांश्रुति (भियतेहृदयग्रंथिस्थिते सर्वसंशयाः ॥ क्षीयंते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरेइति ॥) अर्थयह ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंतैं भी अत्यंत उत्कृष्ट जो परमात्मादेवहै ॥ ता परमात्मादेवके साक्षात्कारहुए इसविद्वान्पुरुषकी आत्मा अनात्माका अध्यासरूपहृदयग्रंथि नाश कूं प्राप्त होवैहै ॥ तथा आत्मा देहादिकोंतैं भिन्नहै अथवा देहादिरूपहै तहां देहादिकोंतैं भिन्नहुआ भी आत्मा ब्रह्मरूपहै अथवा ब्रह्मतैं भिन्नहै इसते आदिलैकै जिनैकी आत्मविषयक संशयहैं ते सर्वसंशयभी नाश कूं प्राप्त होवैहैं ॥ तथा जिन पुण्यपापरूप प्रारब्धकर्मोंनै यह शरीर दियाहै तिन प्रारब्धकर्मोंकू छोडिकै दूसरे सर्वकर्मनाश कूं प्राप्त होवैहैइति ॥ यहवार्ता श्रीव्यास भगवान् ने ब्रह्मसूत्रोंविषे भी कथन करीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तदाधिगम उत्तरपूर्वाध्यायोरश्लेषविनाशौ तद्व्यपदेशात्) अर्थयह ॥ मैं ब्रह्म रूपहूं या प्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेहुए इसविद्वान्पुरुषके पूर्वसंचितकर्मोंका तो नाश होजावैहै ॥ और जैसे जलविषे स्थित पद्मपत्रको जलका स्पर्श होवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानतैं उत्तरकरयेहुए कर्मोंका ताविद्वान्पुरुषको स्पर्शहीं होवैनहीं ॥ यहवार्ता अनेक श्रुतिस्मृतियोंविषे कथन करीहैइति ॥ और जिस शरीरविषे इसविद्वान्पुरुषको आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिहुईहै ॥ तिस शरीरके आरंभकरणेहारे जे पुण्यपापरूप प्रारब्धकर्महैं तिन प्रारब्धकर्मोंका तो तिस शरीरके नाशकालविषे ही नाश होवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्य तावदेव चिरं यावन्न विमोक्षयेऽथ संपत्स्ये) ॥ अर्थयह तिसविद्वान्पुरुषकू विदेहमोक्षकी प्राप्तिविषे तिनैकालपर्यंत ही विलंबहै ॥ जिनैकालपर्यंत प्रारब्धकर्मोंके भोगपूर्वक इस शरीरकी निवृत्ति नहींहुई ॥ इस शरीरके निवृत्तहुए तैं अनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमोक्षको प्राप्त होवैहैइति ॥ यहवार्ता ॥ श्रीव्यास भगवान् नैं भी ब्रह्मसूत्रोंविषे कथन करीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (भोगेन त्वितरेक्षयित्वासंपद्यन्ते ॥) अर्थयह ॥ संचितक्रियमाणकर्मोंतैं भिन्न पुण्यपापरूप प्रारब्धकर्मोंका भोगतैं नाशकरिकै यह विद्वान्पुरुष विदेहमोक्ष कूं प्राप्त होवैहै इति ॥ और वसिष्ठसनकादिक जे अधिकारक पुरुषहैं ॥ तिन अधिकारक पुरुषोंकू तो ज्ञानकी उत्पत्तितैं अनंतर भी दूसरे शरीरोंकी प्राप्ति शास्त्रोंविषे देखनेमें आवैहै ॥ यातैं (यावदधिकारमवस्थिति रधिकारकाणां) इससूत्रके व्याख्यानविषे भगवान् भाष्यकारोंनै या प्रकारकी व्यवस्था कथन करीहै ॥ तिन वसिष्ठादिकोंकू जिस शरीरविषे आत्मज्ञानकी प्राप्ति भईहै ॥ तिस शरीरके आरंभकरणेहारे जे प्रारब्धकर्महैं ॥ ते प्रारब्धकर्महीं तिन वसिष्ठादिकोंके

दूसरे शरीरों का भी आरंभ करे हैं ॥ तात्पर्य यह ॥ अनेक शरीरों का आरंभ करने द्वारा जो बलवान् प्रारब्धकर्म है ताका नाम अधिकार है ॥ सो ऐसा अधिकार वसिष्ठादि कउपासक पुरुषों का ही होवै है ॥ अन्य जीवों का होवै नहीं ॥ सो ऐसा अधिकार जबपर्यंत रहे है ॥ तबपर्यंत ही तिन वसिष्ठादिक अधिकारक पुरुषों की स्थिति होवै है ॥ यातैं यह अर्थ सिद्ध भया ॥ जिन कर्मों नैं आपणे फल का आरंभ नहीं करचा है ॥ ते कर्म तौ आत्मज्ञान रूप अधिकारिके नाश होइ जावैं हैं ॥ और जिन कर्मों नैं आपणे फल का आरंभ करचा है ॥ ते कर्म तौ भोग की समाप्ति पर्यंत स्थित होवैं हैं ॥ तिन प्रारब्धकर्मों का भोग अस्मदादिक तत्त्ववेत्ता जीवों विषे तौ एक ही देह करिके होवै है ॥ और वसिष्ठादिक अधिकारक पुरुषों विषे तौ अनेक देहों करिके सो भोग होवै है इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ जिस कारण तैं इस आत्मज्ञान का ऐसा महान् प्रभाव है ॥ तिस कारण तैं इस आत्मज्ञान के समान दूसरा कोई पदार्थ है नहीं ॥ इस अर्थ कूं अब श्री भगवान् कथन करे है ॥

(मू. श्लो.) न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ॥ तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विंदति ॥ ३८ ॥ न । हि । ज्ञानेन सदृशं । पवित्रं । इह । विद्यते । तत् । स्वयं । योगसंसिद्धः । कालेन । आत्मानि । विंदति ॥ ३८ ॥ (इति पद०) हे अर्जुन जिस कारण तैं इस वेद लोक विषे ज्ञान के समान पवित्र नहीं विद्यमान है तिस ज्ञान कूं महान् काल करिके कर्म योग करिके शुद्ध चित्त वाला पुरुष आप ही अंतःकरण विषे प्राप्त होवै है ॥ ३८ ॥ (इति पदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन वेदों विषे अथवा इस लोक व्यवहार विषे इस आत्मज्ञान के समान दूसरा कोई पदार्थ शुद्धि करने द्वारा है नहीं ॥ किंतु यह एक आत्मज्ञान ही शुद्धि करने द्वारा है ॥ काहे तैं इस आत्मज्ञान ते भिन्न जित नैं की दूसरे कर्म उपासनादिक उपाय हैं ॥ ते उपाय अज्ञान की निवृत्ति करै नहीं ॥ यातैं ते भिन्न उपाय अज्ञान रूप मूल सहित पापों की निवृत्ति करै नहीं ॥ किंतु यत्किंचित् पाप की निवृत्ति करे हैं ॥ जैसे प्रायश्चित्त यत्किंचित् पाप की निवृत्ति करे है ॥ और जबपर्यंत तिन सर्व पापों का मूल कारण रूप अज्ञान विद्यमान है ॥ तबपर्यंत किसी प्रायश्चित्तादिक उपायों करिके एक पाप के नाश हुए भी पुनः दूसरे पाप अवश्य करिके उत्पन्न होवैंगे ॥ और आत्मज्ञान करिके तौ अज्ञान के निवृत्ति हुए मूल सहित सर्व पापों की निवृत्ति होवै है ॥ यातैं इस आत्मज्ञान के समान दूसरा कोई शुद्धि करने का उपाय है नहीं इति ॥ शंका ॥ हे भगवान् सो आत्मा का ज्ञान इन सर्व प्राणीयों कूं शीघ्र ही किस वास्ते नहीं उत्पन्न होता ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् कहे हैं (तत्स्वयं योगसंसिद्धः इति) हे अर्जुन जो अधिकारी पुरुष बहुत काल पर्यंत ता पूर्व उक्त कर्म योग करिके अंतःकरण की शुद्धि पूर्वक आत्मज्ञान के योग्यता कूं प्राप्त हुआ है ॥ सो अधिकारी पुरुष ही आप ही ता आपणे अंतःकरण विषे तिस आत्मज्ञान कूं प्राप्त होवै है ॥ तिस अंतःकरण की शुद्धि रूप योग्यता कूं नहीं प्राप्त हुआ पुरुष ता आत्मज्ञान कूं

प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अन्यकिसीपुरुषकोदियेहुएज्ञानकूं आपणेविषेस्थितरूपकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अन्यकिसीपुरुषविषेस्थितज्ञानकूं आपणाकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोशुद्धचित्तवालापुरुष आपहीं आपणेअंतःकरणविषेहीं ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहैइति ॥ ३८ ॥ तहां जिसउपायकरिकै नियमपूर्वक आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोउपायपूर्वउक्तप्रणिपातसेवादिकउपायोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतसमीपहै ॥ ऐसेअत्यंतसमीपउपायकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रद्धावाँल्लभतेज्ञानंतत्परःसंयतेन्द्रियः ॥ ज्ञानंलब्ध्वापरांशांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥ श्रद्धावान् । लभते । ज्ञानं । तत्परः । संयतेन्द्रियः । ज्ञानं । लब्ध्वा । परां । शांतिम् । अचिरेण । अधिगच्छति ॥ ३९ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जो पुरुष श्रद्धावान्है तथागुरुकीउपासनाविषेतत्परहै तथाजितेन्द्रियहै सोपुरुषहीं आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहो इकै शीघ्रहीं कैवल्य मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मवेत्तागुरुकेवचनोविषे तथावेदांतशास्त्रकेवचनोविषे यहवचन यथार्थअर्थकेहींकहणेहारेहैं याप्रकारकी प्रमाणरूपजाआस्तिक्यबुद्धिहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ ऐसीश्रद्धावालापुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ ऐसाश्रद्धावान्हुआभी जोपुरुष अत्यंतआलसीहोवैहै ॥ ताआलसीपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (तत्परःइति) हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्होवैहै ॥ तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिकाउपायभूत जेब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकहैं तिनउपायोंविषे जोपुरुष आलस्यतैरहितहुआ अत्यंत तत्परहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिस तत्परतातैविना केवलश्रद्धावान्पुरुष ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष श्रद्धावान्भीहै तथाब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकों विषे तत्परभीहै ॥ परंतु श्रोत्रादिकेन्द्रियोंकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं जिसने निवृत्तकन्यानहीं ॥ ऐसेअजितेन्द्रियपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (संयतेन्द्रियःइति) हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्भीहैतथातत्परभीहै ॥ परंतु जिसपुरुषनैं आपणेश्रोत्रादिकेन्द्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तनहींकन्या ॥ सोअजितेन्द्रियपुरुषभी ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु जोपुरुष श्रद्धावान्होवैहै तथातत्परहोवैहै तथाजितेन्द्रियहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और (ताद्विद्धिप्रणिपातेन) याश्लोकविषे जेपूर्व प्रणिपात प्रश्न सेवा यहतीनउपाय आत्मज्ञानकेकथनकन्येथे ॥ ते तीनों बाह्यउपायतौ दांभिक मायाकीपुरुषविषेभी संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तेप्रणिपातादिकबाह्यउपाय नियमकरिकै ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिविषेहेतुहोवैनहीं ॥ और इसश्लोकविषे कथनकन्येजे श्रद्धा तत्परता जितेन्द्रियता यहअंतरतीनउपायहैं ॥ तेयहतीनउपायतौ नियमपूर्वक ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिकरेहैं ॥ ऐसेश्रद्धादिकतीनउपायों

करिके यह अधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइके कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिरूप कैवल्यमुक्तिकूं व्यवधानतैंविनाहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दीपक आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकेहीं अंधकारकीनिवृत्तिकरेहै ॥ ताअंधकारकीनिवृत्तिकरणेविषे सोदीपक किसीभीसहकारीकारणकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तैसे यहआत्मज्ञानभी आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकेहीं अज्ञानकीनिवृत्तिकरेहै ॥ ताअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे सोआत्मज्ञान दूसरेकिसीभी प्रसंख्यानादिकउपायोंकीअपेक्षाकरैनहीं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वउक्तअर्थविषे तुमनै कदाचित्भीसंशयकरणानहीं ॥ जिसकारणतैं संशयवान्पुरुष महान्अनर्थकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अज्ञश्चाश्रद्धानश्चसंशयात्माविनश्यति ॥ नायंलोकोस्तिनपरोनसुखंसंशयात्मनः ॥ ४० ॥ अज्ञः । चै । अश्रद्धानः । चै । संशयात्मा । विनश्यति । नं । अयं । लोकः । अस्ति । नं । परोः । नं । सुखं । संशयात्मनः ॥ ४० ॥ (इतिप०) हेअर्जुन अज्ञानीपुरुष तथा अश्रद्धावान्पुरुष तथा संशययुक्तपुरुष विनाशकूंहींप्राप्तहोवैहै तिससंशययुक्तपुरुषकूं यह मनुष्यलोकभी नहीं सिद्धहोवैहै तथा स्वर्गादिरूपपरलोकभी नहीं सिद्धहोवैहै तथा भोजनादिकृतसुखभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष वेदांतशास्त्रकेअध्ययनतैरहितहोनेतैं आत्मज्ञानतैंशून्यहै तापुरुषकानाम अज्ञहै ॥ और ब्रह्मवेत्तागुरुनै कथनकन्याजो अर्थहै तथा वेदांतशास्त्रनै कथनकन्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थविषे यह अर्थ इसप्रकारकाहैनहीं याप्रकारकी विपर्ययरूपजानास्तिक्यबुद्धिहै ताकानाम अश्रद्धाहै ॥ ताअश्रद्धा करिके जोपुरुष युक्तहै तापुरुषकानाम अश्रद्धानहै ॥ और लौकिकवैदिकसर्वअर्थोंविषे यहअर्थ इसप्रकारकाहै अथवा अन्यप्रकारकाहै याप्रकारकेसंशय करिके जिसपुरुषकाचित्त युक्तहै तापुरुषकानाम संशयात्माहै ॥ ऐसा अज्ञपुरुष तथाअश्रद्धानपुरुष तथासंशयात्मापुरुष यहतीनोंपुरुष नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् आपणेअर्थतैंभ्रष्टहोवैहैं ॥ ईहां सोसंशयात्मापुरुष जिसप्रकारकेअनर्थकूं प्राप्तहोवैहै तिसप्रकारकेअनर्थकूं सोअज्ञपुरुष तथाअश्रद्धानपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैंन्यूनअनर्थकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार तासंशयात्मापुरुषतैं अज्ञपुरुषविषे तथाअश्रद्धानपुरुषविषे न्यूनताबोधनकरणेवास्तेतिनदोनोंकेवाचकपदोंके अंतविषे चकार कथनकरचाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोसंशयात्मापुरुष अज्ञपुरुषतैं तथाअश्रद्धानपुरुषतैं अधिक अनर्थकूंप्राप्तहोवैहै यहवार्ता किसप्रकार जानीजावै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (नायंलोकःइति) हेअर्जुन जोपुरुष सर्वदासंशयकरिकेयुक्तहै ॥ सोसंशयआत्मापुरुष आपणेमित्रादि कोंविषेभी यहहमारेमित्रहै अथवाशत्रुहैंयाप्रकारका संशयहींकरेहै ॥ और सोसंशयात्मापुरुष धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेविषेभीप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैंतिससंश

यात्मापुरुषकं यमनुष्यलोकभी सिद्धहोवैनहीं ॥ और तासंशयात्मापुरुषकं वेदकेवचनोंविषेभी सर्वदा संशयबन्यारहेहै ॥ यातैं तासंशयात्मापुरुषतैं धर्मका तथा ज्ञानका संपादनहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं तासंशयात्मापुरुषकं स्वर्गमोक्षादिरूपपरलोकभी सिद्धहोवैनहीं ॥ और तासंशयात्मापुरुषकं भोजनादिकोंविषेभी यह भोजनादिक मैं करौं अथवा नहीं करौं याप्रकारकासंशय सर्वदा बन्यारहेहै ॥ यातैं तासंशयात्मापुरुषकं भोजनादिकृतविषयसुखभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताअज्ञपुरुषकं तथाअश्रद्धानपुरुषकं यद्यपि सोपरलोकप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि यमनुष्यलोक तथाभोजनादिकृतविषयसुख यहदोनोंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ताअज्ञपुरुषकं सुसाध्य कहाहै ॥ और ताअश्रद्धानपुरुषकं प्रयत्नसाध्य कहाहै ॥ और तासंशयात्माकं असाध्य कहाहै ॥ ईहां जिसपुरुषकी सत्मार्गविषेप्रवृत्तिहोइसकै तापुरुषकं सुसाध्यकहेहैं ॥ और जिसपुरुषकी बहुतप्रयत्नकरिकै तासत्मार्गविषेप्रवृत्तिहोइसकै तापुरुषकं प्रयत्नसाध्यकहेहैं ॥ और किसीप्रकारकरिकैभी जिसपुरुषकी तासत्मार्गविषेप्रवृत्तिनहींहोइसकै तापुरुषकं असाध्यकहेहैं ॥ यातैं सोसंशयात्मापुरुष सर्वतैंअत्यंत पापिष्ठहै इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ तहां ऐसेसर्वअर्थोंकेमूलभूतसंशयके निवृत्तकरणवास्तैं आत्माकानिश्चयरूपउपायकं कथनकरताहुआ श्रीभगवान् दोअध्यायोंकरिकै कथनकरी जापूर्वउत्तरभूमिकाकेभेदकरिकै कर्मज्ञानमय दोप्रकारकीब्रह्मनिष्ठाहै ताका अब उपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो०) योगसंन्यस्तकर्माणंज्ञानसंछिन्नसंशयम् ॥ आत्मवंतंनकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥ ४१ ॥ योगसंन्यस्तकर्माणं । ज्ञानसंछिन्नसंशयं । आत्मवंतं । न । कर्माणि । निबध्नंति । धनंजय ॥ ४१ ॥ (इतिपद०) हेअर्जुन समत्त्वबुद्धिरूपयोगकरिकैभगवत्अर्पणकरेहैंकर्मजिसनैं तथाआत्मज्ञानकरिकै छेदनकरचाहैसंशय जिसनैं ऐसेप्रमादतैरहितपुरुषकं कर्म नहीं बंधायमानकरेहैं ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भगवत्आराधनरूपजासमत्त्वबुद्धिहै ताकानामयोगहै ॥ ऐसेयोगकरिकै मैंश्रीभगवान्विषे समर्पणकरेहैंकर्मजिसनैं ॥ अथवा परमार्थवस्तुके दर्शनकानाम योगहै ॥ तायोगकरिकै त्यागकरेहैंसर्वकर्मजिसनैं ताकानाम योगसंन्यस्तकर्माहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तासंशयकेविद्यमानहुए सोयोगसंन्यस्त कर्मपणाहीं किसप्रकारसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (ज्ञानसंछिन्नसंशयमिति) हेअर्जुन आत्माकानिश्चयरूपजो ज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै छेदनकरचाहैसंशयजिसपुरुषनैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् विषयोंकीपरवशतारूपप्रमादकेविद्यमानहुए ताज्ञानकीउत्पत्तिहीसंभवैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (आत्मवंतामिति) हेअर्जुन ! जोपुरुष तापरवशतारूपप्रमादतैरहितहै ॥ अर्थात् जोपुरुष सर्वदा सावधानहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष अप्रमादि हाणेतैं ज्ञानवान्है तथा ज्ञानसंछिन्नसंशयहोणेतैं योगसंन्यस्तकर्माहै ताविद्वान्पुरुषकं लोकसंग्रहवास्तैंकरयेहुएशुभकर्म अथवा व्यर्थचेष्टारूपकर्म बंधायमानक

रैनहीं ॥ अर्थात् तेकर्म देवतादिरूपइष्टशरीरका तथापशुआदिरूपअनिष्टशरीरका तथा मनुष्यादिरूप मिश्रितशरीरका आरंभकरैनहीं इति ॥ ४१ ॥ * ॥
जिसकारणतैं आत्मज्ञानकरिकै नष्टहुआहैसंशयजिसका ऐसेविद्वान्पुरुषकूं यहलौकिकवैदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी ताआत्मज्ञान
करिकै तासंशयकूंछेदनकरिकै स्वधर्मविषेतत्परहोउ ॥ याअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ॥ छित्त्वैनंसंशययोगमातिष्ठोत्तिष्ठभारत ॥ ४२ ॥ इति श्रीमहाभारतेभीष्मप
र्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेयज्ञविभागयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ॥ ४ ॥ तस्मात्
अज्ञानसंभूतम् । हृत्स्थम् । ज्ञानासिना । आत्मनः । छित्त्वा । एनम् । संशयम् । योगम् । आतिष्ठ । उत्तिष्ठ । भारत ॥ ४२ ॥
(इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन तिसंकारणतैं अज्ञानतैं उत्पन्नहुए तथाबुद्धिविषेस्थित इस संशयकूं आत्माके ज्ञानरूपखड्गकरिकै
छेदन करिकै तूं निष्कामकर्मकूं कर इसप्रकारतैं तूंअब युद्धकरणेवासतै उठखडाहोउ ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ! अविवेकरूपअज्ञानतैंउत्पन्नहुआ तथाबुद्धिरूपहृदयविषेस्थित ऐसाजोयह सर्वअनर्थोकामूलभूत संशयहै ॥ इससंशयकूं आत्माकूंविषय
करणेहारे निश्चयरूपखड्गकरिकै छेदनकरिकै तूं सम्यक्दर्शनकेउपायभूत निष्कामकर्मयोगकूंकर इसकारणतैं तूं इसकालविषे इसयुद्धकरणेवासतै उठखडा
होउइति ॥ ईहां (अज्ञानसंभूतं) यापदकरिकै श्रीभगवान् तैं तासंशयकेकारणका कथनकरचा ॥ और (हृत्स्थं) यापदकरिकै तासंशयके आश्रयकाकथन
करचा ॥ ताकहणेकरिकै यहअर्थबोधनकरचा ॥ जैसे लोकविषे जिसशत्रुकेकारणका तथाआश्रयका ज्ञानहोवैहै ॥ सोशत्रु सुखेनहीं हननकरचाजावैहै ॥
तैसे इससंशयरूपशत्रुके कारणके तथाआश्रयके ज्ञानहुएतैंअनंतर यहसंशयरूपशत्रुभी ताकेकारणादिकोंकीनिवृत्तिकरिकै सुखेनहीं नाशकरचाजावैहैइति ॥ और
(हेभारत) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान् तैं यहअर्थ सूचनकन्या ॥ भरतवंशविषेउत्पन्नभयाजोतूंअर्जुनहैं ॥ तिसतुमारा यहयुद्धकाउद्यम निष्फलनहींहै ॥
किंतु अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानकाहेतुहोनेतैं सफलहैइति ॥ इसचतुर्थेअध्यायकेसर्वअर्थकूंसंक्षेपतैंकथनकरणेहारायहश्लोकहै ॥ (स्वस्यानीशत्ववाधेन
भक्तिश्रद्धेदृढीकृते ॥ धीहेतुःकर्मनिष्ठाचहारिणेहोपसंहृता) ॥ अर्थयह ॥ इसचतुर्थेअध्यायविषे श्रीभगवान् तैं आपणेअनीश्वरपणेकीनिवृत्तिकरिकै आपणेविषे अर्जु
नकेभक्तिकूं तथाश्रद्धाकूं दृढकन्या ॥ तथा आत्मज्ञानकाकारणरूपजाकर्मनिष्ठाहै साकर्मनिष्ठा उपसंहारकरी इति ॥ ४२ ॥ * ॥ इतिश्रीमत्परमहंसप
रिव्राजकाचार्य—श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्धनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां चतुर्थोऽध्यायः समा
प्तः ॥ ४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्यभ्योनमः ॥

॥ ६९ ॥

॥ ६९ ॥

॥ ६९ ॥

॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्यभ्योनमः ॥ अथ पंचमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व तृतीय चतुर्थ यादोनों अध्यायोंकरिकै कर्म ज्ञान यादोनोंका निरूपणकरचा ॥ अब पंचम षष्ठ यादोनों अध्यायोंकरिकै कर्म तथाकर्मका त्यागरूपसंन्यास यादोनोंका निरूपणकरैहैं ॥ तहां पूर्व तृतीय अध्यायविषे (ज्यायसीचेत्कर्मणस्ते) इत्यादिकवचनोंकरिकै अर्जुननैपूछाहूआ श्रीभगवान् ज्ञान कर्म यादोनोंका विकल्पका तथा समुच्चयका असंभव कथनकरिकै अधिकारीपुरुषकेभेदकीव्यवस्थाकरिकै (लोकेस्मिन्द्विविधानिष्ठापुराप्रोक्तमयानव) इत्यादिकवचनोंकरिकै निर्णयकरताभया ॥ यातैयहअर्थसिद्धभया ॥ अज्ञपुरुषहैअधिकारीजिसकाऐसाजोकर्महै ॥ सोकर्म आत्मज्ञानकेसाथि समुच्चयकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ जैसे प्रकाशरूपतेज तथाअंधकाररूपतिमिर यादोनोंका परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ तैसे ज्ञान तथाकर्म यादोनोंकाभी परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तिनकर्मोंकाहेतुरूप जाभेदबुद्धिहै ॥ ताभेदबुद्धिका सोआत्मज्ञान नाशकरणेहाराहै ॥ यातैं सोआत्मज्ञान तिनकर्मोंका विरोधीहीहै ॥ और विरोधीपदार्थोंका एकदेशविषे एककालविषे एकठाहोणा कदाचित्भीसंभवता नहीं ॥ और सोकर्म ताज्ञानकेसाथि विकल्पकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं जेदोपदार्थ एकहीकार्यकीसिद्धिकरणेवासतै होवैहैं ॥ तिनपदार्थोंकाहीं परस्पर विकल्पहोवैहै ॥ सोईहांप्रसंगविषे ज्ञान तथाकर्म यहदोनों एककार्यकीसिद्धिवासतैहैनहीं ॥ काहेतैं आत्मज्ञानकाकार्यजोअज्ञानकानाशहै ॥ सोअज्ञानकानाश कर्मकरिकैहोइसकैनहीं ॥ किंतु केवलज्ञानकरिकैहीं सोअज्ञानकानाशहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेवाविदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेयनाय ॥) अर्थयह ॥ तिसआत्मादेवकूंजानिकरिकै यहअधिकारीपुरुष कार्यसहितअज्ञानकूंनाशकरैहै ॥ तथा अविद्याकीनिवृत्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसरा कोईमार्गहैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानहीं तामोक्षकेप्राप्तिकामार्गहैइति ॥ और ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर तिनकर्मोंकाकार्य किंचित्मात्रभी अपेक्षित नहींहै ॥ यहअर्थ (यावानर्थ उदपाने) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकार ज्ञानवान्पुरुषविषे कर्मोंकेअनधिकारकानिश्चयहुए प्रारब्धकर्मकेवशतैं वृथाचेष्टारूपकरिकै तिनकर्मोंकाअनुष्ठानहोवै अथवा तिनसर्वकर्मोंकासंन्यासहोवै ॥ यहवार्त्ता निर्विवाद चतुर्थ अध्यायविषे निर्णयकरी ॥ और जिसपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींभईहै ॥ ऐसेअज्ञानीपुरुषनैतौ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताआत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरणेवास्ते तिनकर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरणा ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिपंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥) इसश्रुतिनै वेदाध्ययन यज्ञ दान तप इत्यादिक सर्वकर्मोंका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानविषे उपयोग कथनकन्याहै और (सर्वकर्मसिखलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते) इसवचनविषे श्रीभगवान् नै आपही तिनसर्वकर्मोंका आत्मज्ञानविषेउपयोग कथनकन्याहै और जैसे श्रुतिनै आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं कर्मोंकाअनुष्ठानकथनकन्याहै ॥ तैसे श्रुतिनै आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासभी कथनक

न्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजन्ति ॥ शांतोदांतउपरतस्तिक्षःसमाहितोभूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानं पश्येत् ॥) अर्थयह ॥ संन्यासीपुरुषों
 कूं प्राप्तहोणेयोग्य जोयहआत्मारूपलोकहै ॥ ताआत्मारूपलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुए यहअधिकारीजन सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकूंकरेहैंइति ॥ और
 यहअधिकारीपुरुष शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधान इसषट्संपत्तियुक्तहोइके आपणेहृदयदेशविषे प्रत्यक्आत्माकूंदेखैइति ॥ ईहां उपरतिशब्दकरिके
 संन्यासकाहींग्रहणकन्याहै ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंही आत्मज्ञानकाहेतुकह्याहै ॥ तहां जैसे ज्ञान कर्म यादोनोंका समुच्चय संभवैनहीं तैसेकर्म
 तथाकर्मोंकात्यागइनदोनोंकाभी समुच्चयसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जेपदार्थ एकहींकालविषे एकठोस्थितहोवैहैं तिनपदार्थोंकाही परस्पर समुच्चयहोवैहै ॥ भिन्नदेशकाल
 वृत्तिपदार्थोंका परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ और कर्म तथाकर्मोंकात्याग यह दोनोंभी तेजतिभिरकीन्याई परस्पर विरुद्धहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका एकहीकालविषे
 एकहीवर्तणसंभवैनहीं ॥ यातैं कर्म तथाकर्मोंकात्याग यादोनोंकासमुच्चय संभवतानहीं ॥ शंका ॥ कर्म तथाकर्मोंकात्याग यादोनोंका आत्मज्ञानही फलहै ॥
 यातैं एकार्थताहोणेतैं तिनदोनोंका विकल्प किसवासतैं नहींहोवै ॥ समाधान ॥ आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरणे विषे कर्मका तथाकर्मकेत्यागका द्वार भिन्न
 भिन्नहीहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका विकल्पभी संभवैनहीं ॥ जहां दोपदार्थोंकाएककार्यकीउत्पत्तिकरणेविषे एकहींद्वार होवैहै ॥ तहांहीं तिनदोनोंपदार्थोंका विलय
 होवैहै ॥ तहां आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे प्रतिबंधक जेपापकर्महै ॥ तिनपापकर्मोंकीनिवृत्ति नित्यनैमित्तिककर्मों करिकेहींहोवैहै ॥ यातैं तिननित्यनैमित्तिककर्मोंकातों
 तिनपापोंकानाशरूप अदृष्टहींद्वारहै ॥ और जिसपुरुषकाचित्त लौकिकवैदिककर्मोंकरिके अत्यंतविक्षिप्तहै ॥ तिसपुरुषकूंभी आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और
 साविक्षेपकीनिवृत्ति संन्यासकरिकेहीहोवैहै ॥ यातैं ताकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकातों विक्षेपकीनिवृत्तिकरिके आत्मविचारकेअवसरकीप्राप्तिरूप दृष्टहींद्वारहै
 यातैं एकआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैहुएभी तेकर्म तथाकर्मोंकात्याग यहदोनों ताअदृष्ट तथादृष्ट द्वारकेभेदकरिके विकल्पकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं समुच्चयके तथावि
 कल्पके असंभवहुए तेकर्म तथातिनकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास यहदोनों यथाक्रमतैंहीं अनुष्ठानकरणे ॥ ताक्रमपक्षविषेभी संन्यासतैंअनंतर कर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥
 अथवा कर्मोंकेअनुष्ठानतैंअनंतर संन्यासकरणा ॥ तहां संन्यासतैंअनंतर कर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ यहप्रथमपक्षतों संभवैनहीं ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष
 जोकदाचित् तासंन्यासतैंअनंतर पुनःकर्मोंकाअनुष्ठानकरैगा ॥ तों परित्यागकन्येहुए पूर्वलेआश्रमका पुनःअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ ताकरिके सोसंन्यासी आरुढ
 पतितहोवैगा ॥ और सोसंन्यासी तिनकर्मोंकाअधिकारीभीहैनहीं ॥ यातैं संन्यासकूंधारणकरिके सोपुरुष जोपुनःकर्मोंकूंकरैगा ॥ तों पूर्वग्रहणकन्याहुआ
 संन्यासहीं ताका व्यर्थहोवैगा ॥ जिसकारणतैं सोसंन्यास कर्मोंकीन्याई अदृष्टार्थक नहींहै ॥ किंतु विक्षेपकीनिवृत्तिरूपदृष्टार्थकहींहै ॥ और प्रथमकरचेहुए

संन्यासकरिकैहीं तिसपुरुषकूं ज्ञानकेअधिकारकीप्राप्तिहोजावैहै ॥ तिससंन्यासतैअनंतर पुनःकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा व्यर्थहीहै ॥ यातै संन्यासतैअनंतर इसअधिकारीपुरुषनै कर्मोंकाअनुष्ठान कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु इसअधिकारीपुरुषनै प्रथम भगवदर्पणबुद्धिकरिकै निष्कामकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ ताकरिकैअंतःकरणकीशुद्धिहुएतैअनंतर तीव्रवैराग्यकरिकै जबी दृढआत्मज्ञानकीइच्छाहोवै ॥ जिसइच्छाकूं श्रुतिविषे विविदिषाशब्दकरिकै कथनकरचाहै ॥ तवीहीं वेदांतवाक्योंके श्रवणमननादिरूपविचारकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनै सोसंन्यासकरणा यहहीं श्रीकृष्णभगवान्कामतहै ॥ तथा सर्ववेदोंकामतहै ॥ इसआपणेमतकूं श्रीकृष्णभगवान् (नकर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यपुरुषोऽश्नुते) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकरताभयाहै ॥ और इसीआपणेमतकूं श्रीभगवान् (आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ॥ योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते) इसश्लोककरिकै आगेकथनकरैगा ॥ ईहां योगशब्दकरिकै तीव्रवैराग्यपूर्वक विविदिषाका ग्रहणकरणा ॥ यहवार्ता वार्त्तिककारनैभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (प्रत्यग्विविदिषासिद्धये वेदानुवचनादयः ॥ ब्रह्मावाप्त्यैतु तत्त्याग ईप्सतीति श्रुतेर्बलात्) ॥ अर्थयह ॥ (तमेतं वेदानुवचनेन) इसश्रुतिनै विधानकन्येजे वेदाध्ययन यज्ञ दान तप आदिककर्महैं ॥ तेवेदाध्ययनादिककर्मतौ प्रत्यक्आत्माके जानणेकीइच्छारूप विविदिषाकीप्राप्तिवासतैहींहैं ॥ और प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकीप्राप्तिवासतैतौ (एतमेव प्रवाजिनो लोकमिच्छंतः प्रव्रजंति) इसश्रुतिकरिकैप्रतिपादित सर्वकर्मोंकात्यागहीहैइति ॥ तहां स्मृतिभी ॥ (कषाये कर्मभिः पक्वे ततो ज्ञानं प्रवर्त्तते) ॥ अर्थयह ॥ निष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै अंतःकरणकेशुद्धिहुएतैअनंतर सर्वकर्मोंकेत्यागतै आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहैइति ॥ तहां सोआत्मज्ञानकीप्राप्तिकाहेतुभूत विविदिषासंन्यासभी क्रमसंन्यास अक्रमसंन्यास याभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमकंधारणकरणा ॥ तिसतैअनंतर गृहस्थआश्रमकंधारणकरणा ॥ तिसतैअनंतर वानप्रस्थआश्रमकंधारणकरणा ॥ तिसतैअनंतर चतुर्थअवस्थाविषे संन्यासआश्रमकंधारणकरणा ॥ याकानाम क्रमसंन्यासहै ॥ और संसारतैअत्यंततीव्रवैराग्यकेप्राप्तहुए ब्रह्मचर्यादिकआश्रमोंतैअनंतरहीं तासंन्यासआश्रमकंधारणकरणा ॥ याकानाम अक्रमसंन्यासहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मचर्यसमाप्य गृहीभवेद्गृहाद्वनीभूत्वा प्रव्रजेत् ॥ यदि वेतरथा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेद्गृहाद्वा वनाद्वा यदहरेर्विरजेत्तदहरेर्वप्रव्रजेत्इति) ॥ अर्थयह ॥ अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यकीसमाप्तिकरिकै गृहस्थहोवै ॥ तागृहस्थआश्रमतैअनंतर वानप्रस्थहोईकै संन्यासकूंग्रहणकरैइति ॥ और जोकदाचित् इसअधिकारीपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतै प्रथमहीं तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौ यह अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्य आश्रमतै अनंतरहीं संन्यासआश्रमकंधारणकरै ॥ अथवा गृहस्थआश्रमतै अनंतर संन्यासआश्रमकंधारणकरै ॥ अथवा वानप्रस्थआश्रमतै अनंतर संन्यासआश्रमकंधारणकरै ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभी कमनहीं ॥ किंतु जिसदिनविषे यहअधिकारीपुरुष तीव्रवैराग्यकूं प्राप्तहोवै ॥ तिसीदिनविषे संन्यासकूंकरैइति ॥ यातैयहअर्थसिद्ध